नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 326, नई दिल्ली, रविवार 25 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है.. पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है..!!

03 25 जनवरी, माघ शुक्ल सप्तमी मां नर्मदा जन्मोत्सव
06 परीक्षा से आगे सोचना होगा: शिक्षा का असली मकसद
08 BJD को तोड़ने की साजिश चल रही थी, विजय महापात्रा मदद कर रहे थे

परिवहन विभाग में ऑटो यूनिट का काला कारोबार: दलालों और MVI की सांठगांठ से चालकों का शोषण

संजय बाटला

दिल्ली सरकार की 'भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस' नीति के बावजूद, परिवहन विभाग की ऑटो रिक्शा यूनिट (राजपुर रोड कार्यालय) में उच्चस्तरीय संगठित भ्रष्टाचार फल-फूल रहा है। यहां कार्यरत मोटर व्हीकल इंस्पेक्टर (MVI) दलालों व मध्यस्थों के साथ मिलकर ऑटो चालकों से हर काम के लिए अवैध वसूली कर रहे हैं।

परमिट, फिटनेस, नवीनीकरण, नामांतरण, स्थानांतरण, निरीक्षण और दस्तावेज सत्यापन जैसे वैध कार्यों को जानबूझकर लटकाया जाता है — बिना 'कमीशन' के कुछ नहीं होता।यह सारा खेल कार्यालय परिसर के आसपास घूमने वाले दलालों के जरिए खुलेआम चलता है।

स्थिति इतनी विकट है कि साधारण ऑटो चालक भय, आर्थिक शोषण और मानसिक उत्पीड़न के शिकार हैं। दलालों का दावा है कि 'रकम ऊपर तक मैनेज हो जाती है', जिससे चालक शिकायत करने से कतराते हैं।

यह न केवल भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम का घोर उल्लंघन है, बल्कि शासन की पारदर्शिता और सरकार की साख पर सीधा प्रहार भी।

तत्काल कार्रवाई की जरूरत दिल्ली पब्लिक ट्रांसपोर्ट यूनियन ने सरकार से निम्न मांगें की हैं:

1. संबंधित MVI और संलिप्त अधिकारियों की तत्काल गोपनीय जांच।
2. एंटी करप्शन ब्रांच (ACB) द्वारा ट्रैप व तकनीकी निगरानी सहित स्वतंत्र जांच।
3. दलालों व मध्यस्थों पर कठोर कानूनी कार्रवाई।
4. जांच पूरी होने तक आरोपी अधिकारी को संवेदनशील पद से हटाना और चालकों को तत्काल राहत।
5. मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाली सरकार को अब यह साबित करना होगा कि 'जीरो टॉलरेंस' सिर्फ नारा नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत है। अन्यथा, लाखों ऑटो चालकों का विश्वास और शहर की ट्रैफिक व्यवस्था दोनों ही दांव पर लग जाएंगे।

समय रहते कदम उठाएं, वरना भ्रष्टाचार का यह जाल पूरे परिवहन तंत्र को निगल जाएगा।

टेलीग्राम पर पायरेटेड कंटेंट: खतरे और कानूनी जोखिम

पिंकी कुंडू

टेलीग्राम जैसे मैसेजिंग ऐप्स आजकल पायरेटेड मूवीज, वेब सीरीज और अन्य कॉपीराइटेड सामग्री साझा करने का बड़ा जरिया बन चुके हैं। ये ऐप्स बड़े फाइल अपलोड लिमिट, क्लाउड स्टोरेज और अज्ञात यूजरनेम जैसे फीचर्स प्रदान करते हैं, जो पायरेटेड चैनलों को तेजी से फैलने में मदद करते हैं। पुराने चैनल डिलीट होने पर भी नए तुरंत उभर आते हैं, जिससे ऑनलाइन पाइरेसी का जाल और मजबूत होता जा रहा है।कानूनी रूप से, पायरेटेड कंटेंट देखना या डाउनलोड करना भारत में कॉपीराइट एक्ट, 1957 के उल्लंघन के दायरे में आता है। इससे न केवल कंटेंट क्रिएटर्स को आर्थिक नुकसान होता है, बल्कि यूजर्स को साइबर धोखाधड़ी, मैलवेयर संक्रमण और कानूनी कार्रवाई का खतरा भी होता है। साइबर क्राइम विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसे चैनलों पर अक्सर वायरसयुक्त फाइलें छिपी होती हैं, जो डिवाइस हैकिंग या डेटा चोरी का कारण बन सकती हैं।

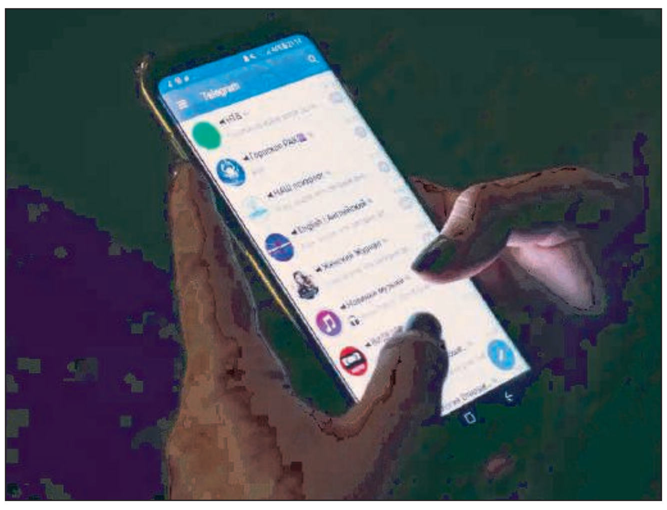

पाइरेसी के प्रमुख जोखिम:

कानूनी परिणाम: जुर्माना (50,000 से 2 लाख तक) और जेल (6 माह से 3 वर्ष)।

साइबर खतरे: मैलवेयर, फिशिंग और पर्सनल डेटा चोरी।

गुमनामी का दुरुपयोग: अज्ञात यूजरनेम अपराधियों को आसानी से छिपने देते हैं।

कंटेंट चोरी: फिल्म इंडस्ट्री को सालाना अरबों का नुकसान।

जनहित में सलाह है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग जिम्मेदारी से करें।

लीगल स्ट्रीमिंग सर्विसेज जैसे नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम या हॉटस्टार चुनें।

यदि पाइरेसी या साइबर फ्रॉड का शिकार हों, तो तुरंत 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर शिकायत दर्ज कराएं।

सुरक्षित इंटरनेट उपयोग से ही डिजिटल दुनिया को बेहतर बनाया जा सकता है।

I4C के नाम से एक फ़र्ज़ी लेटर अभी सर्कुलेशन में है

पिंकी कुंडू

साइबर क्रिमिनल्स इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (I4C), IB, RBI, कस्टम्स और दूसरी लॉ एनफोर्समेंट एजेंसियों का रूप धारण करके फ़र्ज़ी नोटिस, ईमेल भेज रहे हैं और फ़ोन कॉल कर रहे हैं।

ये फ़र्ज़ी कम्युनिकेशन अक्सर लोगों में डर या जल्दबाज़ी पैदा करने की कोशिश करते हैं, उन पर झूठे गंभीर अपराधों का आरोप लगाते हैं और उनसे जवाब देने, डिटेल्स शेयर करने या पेमेंट करने के लिए कहते हैं।

कृपया ध्यान दें:

I4C या कोई भी सरकारी एजेंसी ऐसे नोटिस रैंडम ईमेल या कॉल के ज़रिए नहीं भेजती है

तुरंत कानूनी कार्रवाई का दावा करने वाले लेटर, ईमेल या कॉल पर भरोसा न करें

पर्सनल, बैंकिंग या OTP डिटेल्स शेयर न करें

लिंक पर क्लिक न करें या ऐसे मैसेज का जवाब न दें

सतर्क रहें और जानकारी सिर्फ़ ऑफिशियल सरकारी चैनलों के ज़रिए ही वेरिफ़ाई करें।

अगर आप साइबर फ्रॉड के शिकार हुए हैं, तो तुरंत 1930 पर कॉल करके या cybercrime.gov.in पर जाकर रिपोर्ट करें।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

मुफ़्त फिल्मों के नाम पर चलने वाले पायरेटेड ऐप्स उपयोगकर्ताओं को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि गंभीर साइबर और कानूनी जोखिम में डाल सकते हैं

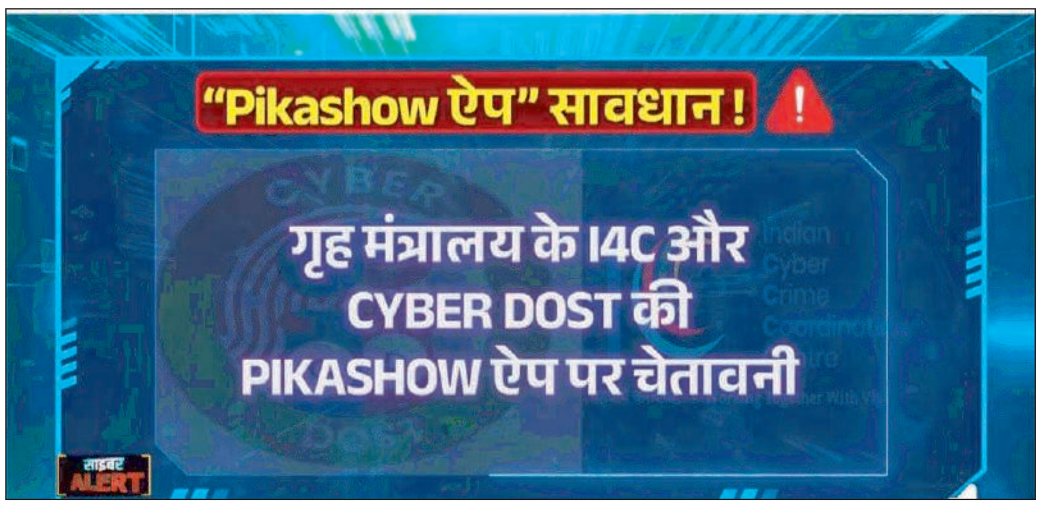

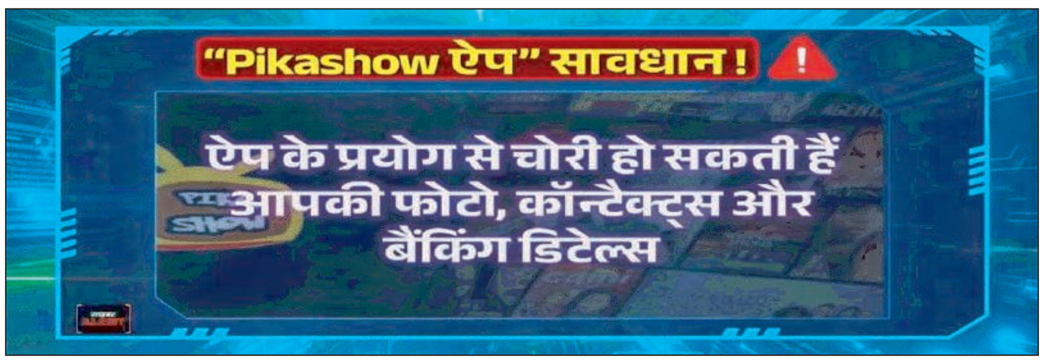

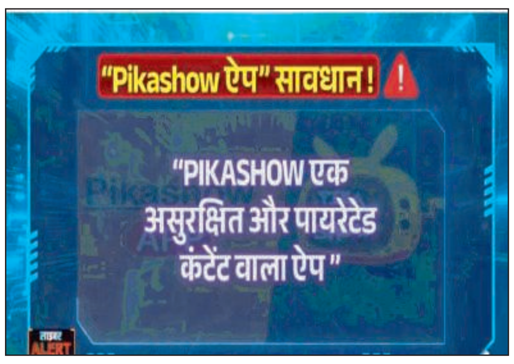

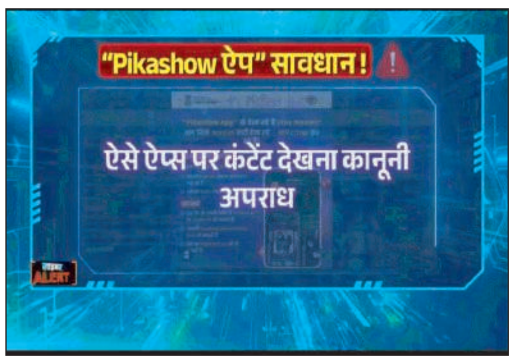

पिंकी कुंडू

पिकाशो जैसे पायरेटेड स्ट्रीमिंग ऐप्स अक्सर प्ले स्टोर पर उपलब्ध नहीं होते। ये ऐप्स थर्ड-पार्टी सोर्स, वेबसाइट, टेलीग्राम लिंक या सोशल मीडिया के जरिए इंस्टॉल करवाती हैं।

ऐसे ऐप्स के माध्यम से:

* आपके फ़ोन में मैलवेयर या स्पाइवेयर आ सकता है
* आपकी व्यक्तिगत और बैंकिंग जानकारी लीक हो सकती है
* आप अवैध सामग्री का उपयोग करने के लिए कानूनी कार्रवाई के दायरे में आ सकते हैं

याद रखें:

1. पायरेटेड कंटेंट देखना या शेयर करना क्राइम है।
2. मुफ़्त फिल्मों के लालच में अपनी गोपनीयता, सुरक्षा और डेटा को जोखिम में न डालें।

सिर्फ आधिकारिक ओटीटी प्लेटफॉर्म का ही उपयोग करें और पायरेटेड ऐप्स से दूर रहें।

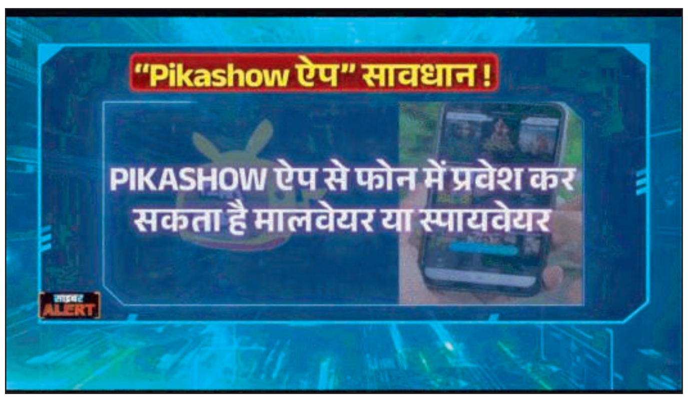

पायरेटेड स्ट्रीमिंग ऐप्स, पिकाशो ऐप जोखिम, मुफ्त मूवी घोटाला, अवैध ओटीटी ऐप्स, थर्ड पार्टी ऐप डाउनलोड, मैलवेयर और स्पाइवेयर खतरा, मोबाइल फोन हैकिंग जोखिम, व्यक्तिगत डेटा रिसाव, बैंकिंग जानकारी चोरी, अवैध सामग्री पहुंच, कॉपीराइट उल्लंघन भारत, टेलीग्राम पायरेसी लिंक, सोशल मीडिया ऐप घोटाला, अनौपचारिक स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म, साइबर सुरक्षा जोखिम, चोरी के कानूनी परिणाम, डेटा गोपनीयता खतरा, नकली स्ट्रीमिंग ऐप्स, डिजिटल सुरक्षा जागरूकता, जिम्मेदार इंटरनेट उपयोग।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत https://tolwa.com/about.html I tolwaindia@gmail.com tolwadelhi@gmail.com

लगातार साइबरस्टॉकिंग और ऑफ़लाइन आक्रमण

पिंकी कुंडू

अपने बच्चों की डिजिटल गतिविधियों की निगरानी करना क्यों बहुत जरूरी है ये मामला है मल्टी-प्लेटफ़ॉर्म साइबरस्टॉकिंग का, जहां ऑनलाइन उत्पीड़न आख़िरकार ऑफ़लाइन अपराध में भी बदल गया।

ध्यान राखिए:

* अपने बच्चों की डिजिटल एक्टिविटी को समय-समय पर मॉनिटर करते रहें
* बच्चों के व्यवहार में अचानक आए बदलावों को नजरअंदाज ना करें
* अगर ऐसा कुछ हो, तो गुमनाम रूप से भी रिपोर्ट किया जा सकता है

cybercrime.gov.in

लगातार साइबरस्टॉकिंग मामले, मल्टी प्लेटफॉर्म साइबरस्टॉकिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न अपराध, ऑफ़लाइन आक्रमण मामले, बाल ऑनलाइन सुरक्षा, डिजिटल पेरेंटिंग जागरूकता, बच्चों की ऑनलाइन निगरानी, बच्चों के लिए सोशल मीडिया सुरक्षा, ऑनलाइन ग्रूमिंग जोखिम, साइबर दुरुपयोग जागरूकता, ऑनलाइन से ऑफ़लाइन अपराध, बच्चों में चेतावनी के संकेत, व्यवहार में परिवर्तन लाल झंडे, बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध, ऑनलाइन सुरक्षा भारत, रिपोर्ट साइबरस्टॉकिंग, अज्ञात साइबर अपराध रिपोर्टिंग, cybercrime.gov.in, बाल संरक्षण ऑनलाइन, साइबर सुरक्षा सलाहकार।

फ्रॉड/ फर्जी फ़ोन नंबर या वेबसाइटों को आप जांचें और रिपोर्ट करे

पिंकी कुंडू

1. क्या आपको किसी अज्ञात फ़ोन नंबर से फ्रॉड कॉल आया है?
2. या किसी सोशल मीडिया प्रोफाइल या वेबसाइट पर फर्जी जानकारी दिख रही है?

ऐसे फ़ोन नंबर या वेबसाइटों को आप जांचें और रिपोर्ट कर सकते हैं

संदिग्ध रिपोर्ट करने के लिए: नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर जाकर रिपोर्ट करें और संदिग्ध की जांच करें I4C चयन करें में संदिग्ध की रिपोर्ट करें, घटना की स्थिति और संदिग्ध विवरण भरें और सबमिट करें।

संदिग्ध की जांच करने के लिए: संदिग्ध रिपोजिटरी पर राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल संदिग्ध विकल्प की जांच करें, उपयोग करें और उपलब्ध विवरण दर्ज करके स्थिति की जांच करें।

सोशल मीडिया पर सीधे रिपोर्ट करना हो: NCRP पर सोशल मीडिया अनुभाग में दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करें, प्लेटफ़ॉर्म-वार प्रत्यक्ष रिपोर्टिंग लिंक भी उपलब्ध हैं।

हीलिंग का मतलब केवल दर्द को मिटाना नहीं, बल्कि स्वयं को पहचानना, स्वीकारना और सशक्त बनाना है।

पिंकी कुंडू

जब मन कहे – "अब और नहीं सहा जाता" कभी-कभी ऐसा पल आता है जब मन भीतर से थक जाता है। लगातार कोशिशों, संघर्षों और दबावों के बीच, यह धीरे-धीरे कहने लगता है: "बस अब हो गया... अब और नहीं सहा जाता। हर बार मैं ही क्यों?"

ये सवाल अचानक नहीं आते, ये उन लंबी रातों में जन्म लेते हैं, जब आप रिश्ते, परिवार या समाज को बचाने के लिए खुद को पीछे रखते हैं। इन अनकहे शब्दों, चुप्पियों और निराशाओं के बीच आपकी अपनी खुशी और स्वास्थ्य पीछे छूट जाते हैं।

*लेकिन यही वह पल है जब आप हीलिंग और सशक्त होने की दिशा में पहला कदम उठा सकते हैं।

1. अपनी सीमाएँ तय करना – आत्म-सम्मान की शुरुआत जब कोई लगातार झगड़े करता है या गैसलाइटिंग (emotional manipulation) करता है, तो सबसे पहले समझें कि उसकी भावनाएँ या समस्याएँ आपकी जिम्मेदारी नहीं हैं।

आप उसका समर्थन कर सकती हैं, लेकिन उसकी हर नकारात्मक प्रतिक्रिया आपके आत्म - सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य पर हावी नहीं हो सकती।

सीमाएँ तय करना ही स्वयं की हीलिंग है। यह आपके मन और शरीर को सुरक्षित रखने का पहला कदम है।

सरल उदाहरण: पति गुस्से में कहता है: "तुम हमेशा सब कुछ गलत करती हो।"

प्रतिक्रिया: आप शांत स्वर में कहें: "मैं समझती हूँ कि आप नाराज़ हैं। मैं इसे तब तक नहीं सुलझाऊँगी जब तक हम दोनों शांत नहीं हैं।"

हीलिंग अभ्यास: गहरी साँस लें और भीतर कहें: "मैं अपनी शांति और आत्म - सम्मान की रक्षा करती हूँ।"

अपने आप से पूछें: "मैं कौन हूँ, और मेरी खुशी किससे जुड़ी है?"

यह अभ्यास आपके मन और भावनाओं को स्थिर करता है।

2. रोज़ाना 15 – 30 मिनट सिर्फ अपने लिए मानसिक और भावनात्मक हीलिंग हर दिन सिर्फ 15–30 मिनट अपने लिए निकालें। यह समय केवल आपके मन, हृदय और आत्मा की ऊर्जा के लिए है।

कैसे करें:

1. खुद से बात करें: दिनभर की भावनाओं को शब्दों में उतारें। उदाहरण के लिए: "आज मैंने सबका ध्यान रखा, लेकिन मैं खुद बहुत थकी हूँ।"

2. ध्यान/मेडिटेशन: 5–10 मिनट ध्यान करें या गहरी साँस लें। यह तनाव कम करता है और आपको मानसिक स्पष्टता देता है।

3. लेखन (Journaling): अपने डर, दुःख या आभार को लिखें। यह आपके भीतर की ऊर्जा को व्यवस्थित करता है और भावनाओं को साफ करता है।

व्यवहारिक उदाहरण: पति झगड़ा करता है: "तुम हमेशा बच्चों को ही सोचती हो, मेरे बारे में नहीं।"

प्रतिक्रिया: शांत रहें, गहरी साँस लें और 15 मिनट के लिए अलग कमरे में जाएँ।

डायरी में लिखें: "मैंने आज बच्चे और परिवार का ध्यान रखा। मैं अपनी शांति की भी देखभाल कर रही हूँ।"

यह सिर्फ भावनाओं की सफाई नहीं है, बल्कि मन और हृदय की हीलिंग भी है।

3. गैसलाइटिंग और भावनात्मक दबाव – आत्म - हीलिंग गैसलाइटिंग का मतलब है किसी को भ्रमित या दोषी महसूस कराना। इससे व्यक्ति अपने आत्मविश्वास और भावनात्मक संतुलन को खोने लगता है।

कुछ बातें जान ले

1. कभी भी खुद को दोषी न मानें।
2. सीमाएँ स्पष्ट रखें।
3. आवश्यकता पड़ने पर बाहरी समर्थन लें – दोस्त, परिवार या थेरपिस्ट।

सरल उदाहरण:

पति कहता है: "तुमने यह चीज़ गलत की, और यह सब तुम्हारी गलती है।"

प्रतिक्रिया: "मैं देखती हूँ कि तुम परेशान हो। मैं इस बारे में सोचूँगी, लेकिन मुझे तय करने दो कि मेरी जिम्मेदारी क्या है।"

कमरे से बाहर जाकर 5 –10 मिनट ध्यान या लेखन करें।

हीलिंग अभ्यास: हाथों को हृदय पर रखें और कहें: "मैं अपनी भावना और अनुभव को स्वीकार करती हूँ। मुझे खुद से प्यार है।"

यह अभ्यास स्वीकृति और आत्म-सम्मान की ऊर्जा पैदा करता है।

4. छोटे कदम उठाना – जब थकान चरम पर हो जब इंसान लगातार कोशिश कर चुका हो और हार महसूस कर रहा हो, लगता है कि अब आगे बढ़ना मुश्किल है।

समाधान और हीलिंग:

1. छोटे कदम उठाएँ: आज केवल एक विषय पर ध्यान दें या सिर्फ एक छोटे कदम से रिश्ते में संवाद करें।

2. अपनी उपलब्धियों को नोट करें: हर छोटी सफलता को लिखें, जैसे: "आज मैंने केवल 30 मिनट ध्यान किया, लेकिन मैंने किया।"

3. धैर्य बनाए रखें: हर चीज़ तुरंत ठीक नहीं होगी। धीरे-धीरे हीलिंग होती है।

व्यवहारिक उदाहरण: युवा छात्र लगातार पढ़ाई कर रहा है, घर वाले नौकरी की तंगी का दबाव डाल रहे हैं।

समाधान: आज केवल एक विषय पढ़ें, छोटी सफलता से आत्मविश्वास बनाएं।

5. प्यार, उम्मीद और हीलिंग कभी - कभी हम किसी से प्यार करते हैं और उनका व्यवहार हमारी उम्मीदों के अनुरूप नहीं होता।

हीलिंग दृष्टिकोण: प्यार की दिशा बदल सकती है, लेकिन यह खुद को छोटा करने का कारण नहीं है।

अपने भीतर स्वीकृति और क्षमाशीलता जगाएँ।

व्यवहारिक उदाहरण: आपने किसी का सम्मान किया, प्रयास किया, लेकिन वे आपकी भावनाओं को नकारते हैं।

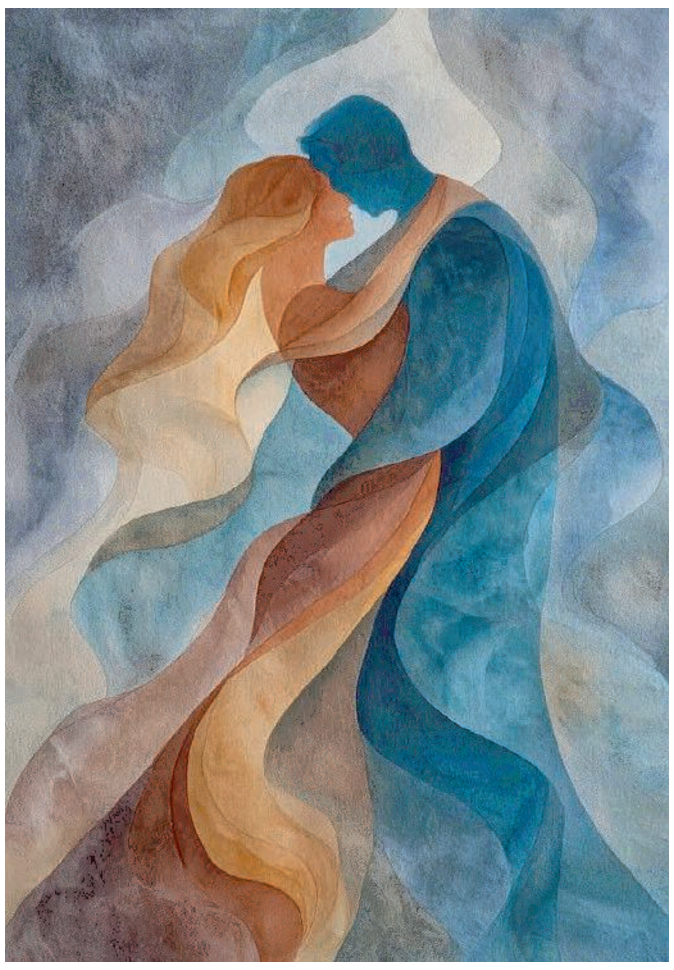

अभ्यास: शांति से खुद से पूछें: "क्या यह मेरे लिए आगे बढ़ने का अवसर है?"

अगर प्रयास बेअसर है, तो दूरी बनाना भी हीलिंग है, क्योंकि आप अपनी ऊर्जा बचा रही हैं।

6. जीवन का सपना और दबाव – मानसिक और आत्म - हीलिंग जब कोई युवा अपने लक्ष्य के लिए मेहनत कर रहा है और घर या समाज का दबाव बढ़ता है, तो असमंजस पैदा होता है।

समाधान और हीलिंग:

1. अपने लक्ष्य लिखें और स्पष्ट करें।
2. समय सीमा तय करें जैसे, दो महीने तक पूरी मेहनत, फिर समीक्षा करें।
3. घर वालों के साथ शांत संवाद करें।
4. संकट के पल में छोटे आनंद लें ध्यान, शॉर्ट वॉक या प्रिय मित्र से बात।

यह अभ्यास मन और आत्मा को स्थिर और सुरक्षित रखता है।

7. दार्शनिक दृष्टि – हीलिंग का गहन अर्थ जीवन का सबसे बड़ा संघर्ष भीतर होता है।

जब पूरी दुनिया सवाल कर रही हो, और आप खुद को संभालकर खड़े रह पाएं, यही असली शक्ति और हीलिंग है।

हार - जीत शब्द हैं, लेकिन असली परीक्षा यह है कि आप कठिनाई में भी कितनी समझ और धैर्य के साथ प्रतिक्रिया देते हैं।

हीलिंग अभ्यास: हर दिन 5 मिनट ध्यान में बैठें और अपने भीतर कहें: "मैं पूरी तरह सुरक्षित हूँ। मैं खुद को प्यार करता हूँ।"

यह मन और शरीर दोनों की हीलिंग करता है।

8. व्यवहारिक उपाय – आत्म-हीलिंग के लिए

1. जर्नलिंग (Diary Writing): हर दिन 10 मिनट अपने विचार लिखें।
2. सीमाएँ तय करना: हर किसी की जिम्मेदारी लेने की जरूरत नहीं।
3. माइक्रो ब्रेक्स: छोटे समय पर खुद के लिए कुछ करें – पानी पीना, ध्यान, हल्का व्यायाम।
4. सकारात्मक आत्म - संवाद: खुद से कहें: "मैं पूरी कोशिश कर रही हूँ, और यही मेरे लिए पर्याप्त है।"
5. समय - सीमा वाला निर्णय: रिश्ते या किसी निर्णय के लिए खुद को समय-सीमा दें।
6. हृदय पर हाथ रखकर ध्यान: हर दिन 2–3 मिनट कहें: "मैं सुरक्षित हूँ, मैं प्यार के योग्य हूँ।"
7. स्मॉल जॉय (Small Joys): हर दिन 1–2 छोटे सुख का अनुभव लें – चाय का स्वाद, सूरज की रोशनी, फूलों की खुशबू।

"हीलिंग और सशक्त शुरुआत"

जब मन कहे: "अब और नहीं सहा जाता", यह अंत नहीं, बल्कि एक नए और सशक्त शुरुआत का संकेत है।

अपने लिए खड़े होना, खुद को समझना और सीमाएँ तय करना कमजोरी नहीं है।

यह मन, हृदय और आत्मा की हीलिंग है।

यह संकेत है कि अब आप अपनी भावनाओं, आत्म - सम्मान और मानसिक शांति को प्राथमिकता दे सकती हैं।

हीलिंग का मतलब केवल दर्द को मिटाना नहीं, बल्कि स्वयं को पहचानना, स्वीकारना और सशक्त बनाना है।

कम नींद और डायबिटीज – एक खतरनाक रिश्ता

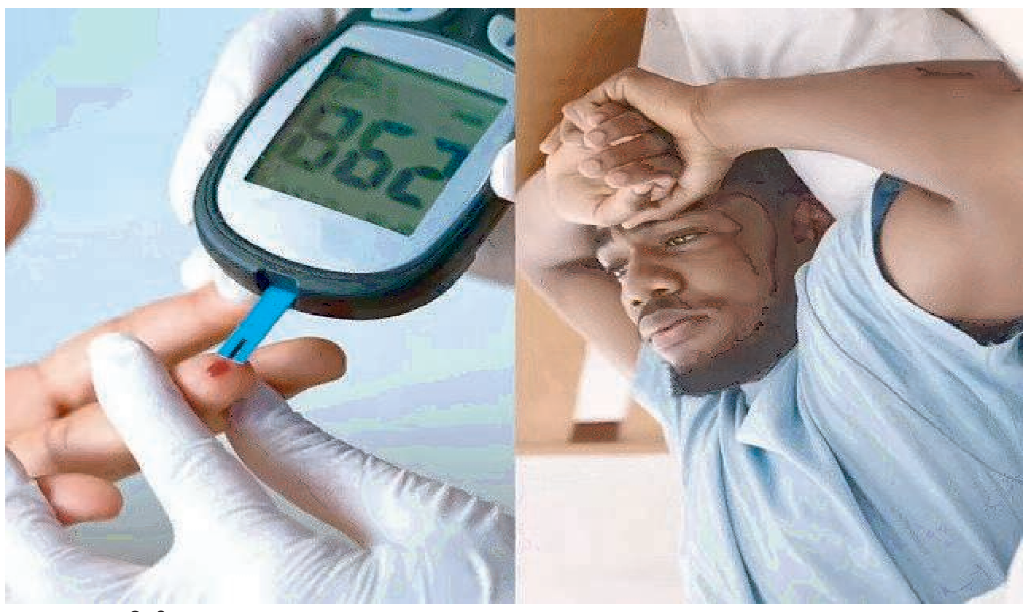

पिंकी कुंडू

आजकल, डायबिटीज के कई मरीज़ कहते हैं — "नींद नहीं आती", "रात में बार-बार जागते हैं", "सुबह उठने पर भी थकान महसूस होती है।"

यह सिर्फ़ नींद की समस्या नहीं है, बल्कि शुगर बढ़ने का एक बड़ा कारण हो सकता है।

* अगर नींद कम हो जाए तो शरीर में क्या होता है?
* इंसुलिन ठीक से काम नहीं करता
* ब्लड शुगर लेवल लगातार ऊपर-नीचे होता रहता है
* भूख बढ़ाने वाले हॉर्मोन बढ़ जाते हैं → ज़्यादा खाना
* वज़न बढ़ना
* ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है
* टाइप 2 डायबिटीज का खतरा बढ़ जाता है

जो लोग दिन में 5 घंटे से कम सोते हैं, उन्हें डायबिटीज का खतरा ज़्यादा होता है।

प्री-डायबिटीज़ वाले लोगों को खास तौर पर सावधान रहना चाहिए

अगर आप पूरी नींद नहीं लेते हैं:

* सुबह फास्टिंग करने से शुगर बढ़ जाती है
* इंसुलिन का असर कम हो जाता है
* दवाएँ कम असरदार होती हैं
* थकान, चिड़चिड़ापन, सिरदर्द बढ़ जाता है

नींद की समस्याएँ अक्सर स्लीप एपनिया (नींद में साँस रुकना), बार-बार पेशाब करने के लिए उठना, या नसों में दर्द की वजह से हो सकती हैं।

आपको कितनी नींद की ज़रूरत है? ज़्यादातर बड़ों को 7 से 8 घंटे की नींद की ज़रूरत होती है

हालांकि, भारत में, बहुत से लोग सिर्फ़ 5-6 घंटे ही सो पाते हैं — यह लंबे समय में सेहत के लिए खतरनाक है।

अच्छी नींद के लिए आसान आदतें

1. रोज़ एक ही समय पर सोएं और उठें
2. सोने से 2–3 घंटे पहले भारी खाना खाने से बचें
3. रात में मीठी चीज़ें, बहुत ज़्यादा चावल/आलू खाने से बचें (इससे शुगर बढ़ सकती है)
4. शाम के बाद चाय, कॉफ़ी कम करें
5. सोने से 1 घंटा पहले मोबाइल, टीवी बंद कर दें
6. रोज़ 30 मिनट टहलें/एक्सरसाइज़ करें
7. बेडरूम को शांत, अंधेरा और हवादार रखें
8. सोने से पहले प्रार्थना, ब्रीदिंग एक्सरसाइज़, या हल्का म्यूज़िक सुनें

डायबिटीज़ के मरीज़ों को सोने के लिए शहद या चीनी वाला दूध पीना सही नहीं है। इसके बजाय, गर्म हल्दी वाला दूध (बिना चीनी का) काम करेगा।

डाइट और नींद के बीच संबंध

रात में हल्का, बैलेंस्ड खाना खाएं:

* सब्जियां + दाल/प्रोटीन
* 1–2 चपाती (मल्टीग्रेन सबसे अच्छा है)
* सलाद

भारी, तला हुआ, मीठा खाना नींद और शुगर दोनों में खलल डालता है।

याद रखें नींद कोई लग्ज़री नहीं है — यह दवा की तरह एक ज़रूरत है। दवाइयों, डाइट, एक्सरसाइज के साथ "पूरी नींद" = शुगर कंट्रोल का चौथा पिलर

अदरक – तुलसी काढ़ा, इम्यूनिटी बढ़ाने वाला घरेलू पेय

पिंकी कुंडू

सामग्री

* पानी – 2 कप
* तुलसी पत्ते – 10–12
* ताज़ा अदरक – 1 इंच (कटा हुआ)
* काली मिर्च – छोटा चम्मच
* दालचीनी – 1 छोटी स्टिक
* लौंग – 3–4
* अजवाइन – छोटा चम्मच
* सौंफ – छोटा चम्मच
* सेंधा नमक – एक चुटकी
* नींबू – 2–3 टुकड़े
* शहद – 1–2 छोटे चम्मच (उबालने के बाद)
* गुड़ – 1–2 टेबलस्पून (वैकल्पिक)

विधि

1. एक बर्तन में 2 कप पानी उबालें
2. उबलते पानी में अदरक, काली मिर्च, दालचीनी, लौंग, अजवाइन और सौंफ डालें
3. 3–4 मिनट पकाने के बाद तुलसी पत्ते डालें और 2 मिनट और उबालें
4. गुड़ इस्तेमाल कर रहे हों तो इसी चरण में डालें और घुलने दें
5. गैस बंद करें और काढ़ा छानकर कप में निकालें
6. हल्का गुनगुना होने पर शहद, नींबू का रस और एक चुटकी सेंधा नमक मिलाएँ

ध्यान दें: उबलते काढ़े में शहद न डालें, इसके गुण नष्ट हो जाते हैं

पुत्र प्राप्ति हेतु गर्भाधान का तरीका

पिंकी कुंडू

* दो हजार वर्ष पूर्व के प्रसिद्ध चिकित्सक एवं सर्जन सुश्रुत ने अपनी पुस्तक सुश्रुत संहिता में स्पष्ट लिखा है कि मासिक स्राव के बाद 4, 6, 8, 10, 12, 14 एवं 16वीं रात्रि के गर्भाधान से पुत्र तथा 5, 7, 9, 11, 13 एवं 15वीं रात्रि के गर्भाधान से कन्या जन्म लेती है।

* 2500 वर्ष पूर्व लिखित चरक संहिता में लिखा हुआ है कि भगवान अत्रिकुमार के कथनानुसार स्त्री में रज की सबलता से पुत्री तथा पुरुष में वीर्य की सबलता से पुत्र पैदा होता है।

* प्राचीन संस्कृत पुस्तक 'सर्वोदय' में लिखा है कि गर्भाधान के समय स्त्री का दाहिना श्वास चले तो पुत्री तथा बायां श्वास चले तो पुत्र होगा।

* यूनान के प्रसिद्ध चिकित्सक तथा महान दार्शनिक अरस्तु का कथन है कि पुरुष और स्त्री दोनों के दाहिने अंडकोष से लड़का तथा बाएं से लड़की का जन्म होता है।

* चन्द्रावती ऋषि का कथन है कि लड़का-लड़की का जन्म गर्भाधान के समय स्त्री-पुरुष के दायां-बायां श्वास क्रिया, पिंगला-तूड़ा नाड़ी, सूर्यस्वर तथा चन्द्रस्वर की स्थिति पर निर्भर करता है।

* कुछ विशिष्ट पंडितों तथा ज्योतिषियों का कहना है कि सूर्य के उत्तरायण रहने की स्थिति में गर्भ ठहरने पर पुत्र तथा दक्षिणायन रहने की स्थिति में गर्भ ठहरने पर पुत्री जन्म लेती है। उनका यह भी कहना है कि मंगलवार, गुरुवार तथा रविवार पुरुष दिन हैं। अतः उस दिन के गर्भाधान से पुत्र होने की संभावना बढ़ जाती है। सोमवार और शुक्रवार कन्या दिन हैं, जो पुत्री पैदा करने में सहायक होते हैं। बुध और शनिवार नपुंसक दिन हैं। अतः समझदार व्यक्ति को इन दिनों का ध्यान करके ही गर्भाधान करना चाहिए।

* जापान के सुविख्यात चिकित्सक डॉ. कताज का विश्वास है कि जो औरत गर्भ ठहरने के पहले तथा बाद कैल्शियमयुक्त भोज्य पदार्थ तथा औषधि का इस्तेमाल करती है, उसे अक्सर लड़का तथा जो मेग्निशियमयुक्त भोज्य पदार्थ जैसे मांस, मछली, अंडा आदि का इस्तेमाल करती है, उसे लड़की पैदा होती है।

* विश्वविख्यात वैज्ञानिक प्रजनन एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. लेण्डरम बी. शैटल्स ने हजारों अमेरिकन दंपतियों पर प्रयोग कर प्रमाणित कर दिया है कि स्त्री में अंडा निकलने के समय से जितना करीब स्त्री को गर्भधारण कराया जाए, उतनी अधिक पुत्र होने की संभावना बनती है। उनका कहना है कि गर्भधारण के समय यदि स्त्री का योनि मार्ग क्षारीय तरल से युक्त रहेगा तो पुत्र तथा अम्लीय तरल से युक्त रहेगा तो पुत्री होने की संभावना बनती है।

* यदि आप पुत्र चाहते है ! दंपति की इच्छा होती है कि उनके घर में आने वाला नया सदस्य पुत्र ही हो। कुछ लोग पुत्र-पुत्री में भेद नहीं करते, ऐसे लोगों का प्रतिशत बहुत कम है। यदि आप पुत्र चाहते हैं या पुत्री चाहते हैं तो कुछ तरीके यहां दिए जा रहे हैं, जिन पर अमल कर उसी तरीके से सम्भोग करें तो आप कुछ हद तक अपनी मनचाही संतान प्राप्त कर सकते हैं-

* पुत्र प्राप्ति हेतु मासिक धर्म के चौथे दिन सहवास की रात्रि आने पर एक प्याला भरकर

चावल का धोवन यानी मांड में एक नीबू का रस निचोड़कर पी जावें। अगर इच्छुक महिला रजोधर्म से मुक्ति पाकर लगातार तीन दिन चावल का धोवन यानी मांड में एक नीबू निचोड़कर पीने के बाद उत्साह से पति के साथ सहवास करे तो उसकी पुत्र की कामना के लिए भगवान को भी वरदान देना पड़ेगा। गर्भ न ठहरने तक प्रतिमाह यह प्रयोग तीन दिन तक करें, गर्भ ठहरने के बाद नहीं करें।

* गर्भाधान के संबंध में आयुर्वेद में लिखा है कि गर्भाधान ऋतुकाल (मासिक धर्म) की आठवीं, दसवीं और बारहवीं रात्रि को ही किया जाना चाहिए। जिस दिन मासिक ऋतु स्राव शुरू हो, उस दिन तथा रात को प्रथम दिन या रात मानकर गिनती करना चाहिए। छठी, आठवीं आदि सम रात्रियां पुत्र उत्पत्ति के लिए और सातवीं, नौवीं आदि विषम रात्रियां पुत्री की उत्पत्ति के लिए होती हैं अतः जैसी संतान की इच्छा हो, उसी रात्रि को गर्भाधान करना चाहिए।

* इस संबंध में एक और बात का ध्यान रखें कि इन रात्रियों के समय शुक्ल पक्ष यानी चांदनी रात (पूर्णिमा) वाला पखवाड़ा भी हो, यह अनिवार्य है, यानी कृष्ण पक्ष की रातें हों तो गर्भाधान की इच्छा से सहवास न कर परिवार नियोजन के साधन अपनाना चाहिए।

* शुक्ल पक्ष में जैसे-जैसे तिथियां बढ़ती हैं, वैसे-वैसे चन्द्रमा की कलाएं बढ़ती हैं। इसी प्रकार ऋतुकाल की रात्रियों का क्रम जैसे-जैसे बढ़ता है, वैसे-वैसे पुत्र उत्पन्न होने की संभावना बढ़ती है, यानी छठवीं रात की अपेक्षा आठवीं, आठवीं की अपेक्षा दसवीं, दसवीं की अपेक्षा बारहवीं रात अधिक उपयुक्त होती है।

* पूरे मास में इस विधि से किए गए सहवास के अलावा पुनः सहवास नहीं करना चाहिए, वरना घपला भी हो सकता है। ऋतु दर्शन के दिन से 16 रात्रियों में शुरू की चार रात्रियां, ग्यारहवीं व तेरहवीं और अमावस्या की रात्रि गर्भाधान के लिए वर्जित कही गई है। सिर्फ सम संख्या यानी छठी, आठवीं, दसवीं, बारहवीं और चौदहवीं रात्रि को ही गर्भाधान संस्कार करना चाहिए।

* गर्भाधान वाले दिन व रात्रि में आहार-विहार एवं आचार-विचार शुभ पवित्र रखते हुए मन में हर्ष व उत्साह रखना चाहिए। गर्भाधान के दिन से ही चावल की खीर, दूध, भात, शतावरी का चूर्ण दूध के साथ रात को सोते समय, प्रातः मक्खन-मिश्री, जरा सी पिसी काली मिर्च मिलाकर ऊपर से कच्चा नारियल व सौंफ खाते रहना चाहिए, यह पूरे नौ माह तक करना चाहिए, इससे होने वाली संतान गौरवर्ण, स्वस्थ, सुडौल होती है।

* गोराचन 30 ग्राम, गंजपीपल 10 ग्राम, असगंध 10 ग्राम, तीनों को बारीक पीसें, चौथे दिन स्नान के बाद पांच दिनों तक प्रयोग में लाएं, गर्भधारण के साथ ही पुत्र अवश्य पैदा होगा।

पुराना देसी नुस्खा: सौंफ और मिश्री – पेट को ठंडक देने वाला आसान उपाय

पिंकी कुंडू

अगर खाने के बाद पेट में जलन, गैस, खट्टी डकार, भारीपन या अंदरूनी गर्मी महसूस होती है, तो सौंफ और मिश्री का यह पारंपरिक घरेलू उपाय पाचन से जुड़ी जागरूकता के लिए जाना जाता है। यह नुस्खा दादी-नानी के समय से भोजन के बाद अपनाया जाता रहा है।

सौंफ और मिश्री क्यों उपयोगी मानी जाती है?

* सौंफ स्वभाव से ठंडी मानी जाती है
* मिश्री पेट की गर्मी को संतुलित रखने में सहायक मानी जाती है
* पाचन प्रक्रिया को सपोर्ट करती है
* मुंह की दुर्गंध कम करने में मददगार

नियमित सेवन से क्या लाभ महसूस हो सकते हैं?

* पेट की जलन और गर्मी में राहत
* गैस और खट्टी डकार में कमी
* भोजन का पाचन बेहतर महसूस होना
* पेट हल्का और आरामदायक लगना
* मुंह में ताजगी और ठंडक

सेवन की सामान्य विधि

सौंफ – 1 चम्मच
मिश्री – 1/2 चम्मच
दोनों को मिलाकर
भोजन के बाद धीरे-धीरे चबाएँ
चाहें तो सौंफ को हल्का भूनकर भी ले सकते हैं

कितने समय तक लें?

रोज़ाना
विशेष रूप से दोपहर और रात के भोजन के बाद

ज़रूरी सावधानियाँ

अधिक मात्रा में सेवन न करें
डायबिटीज़ वाले लोग मिश्री सीमित रखें या न लें
बच्चों को बहुत कम मात्रा दें
यह जानकारी इलाज नहीं, बल्कि पारंपरिक घरेलू अनुभवों पर आधारित सामान्य स्वास्थ्य - जागरूकता के लिए है।

पिंकी कुंडू

25 जनवरी, माघ शुक्ल सप्तमी मां नर्मदा जन्मोत्सव

अलौकिक और पुण्यदायिनी माँ नर्मदा के जन्मदिवस यानी माघ शुक्ल सप्तमी को नर्मदा महोत्सव मनाया जाता है, इस दिन नर्मदा नदी में स्नान का विशेष महत्व होता है। माँ नर्मदा प्राकट्योत्सव के एक दिन पहले बड़ी संख्या में लोग नर्मदा नदी के तट पर पहुंचते हैं और भजन कीर्तन करते हैं, अगली सुबह लोग नर्मदा में स्नान के बाद शिव मंदिर में पूजा करते हैं। नर्मदाजी का तट सुर्भीक्ष माना गया है, शास्त्रों के अनुसार माँ नर्मदा के पूजन, दीपदान, स्नान एवं दर्शन मात्र से मनुष्य के पापों का नाश हो जाता है। महाभारत, रामायण सहित अनेक हिंदू धर्म शास्त्रों में माँ नर्मदा का उल्लेख मिलता है।

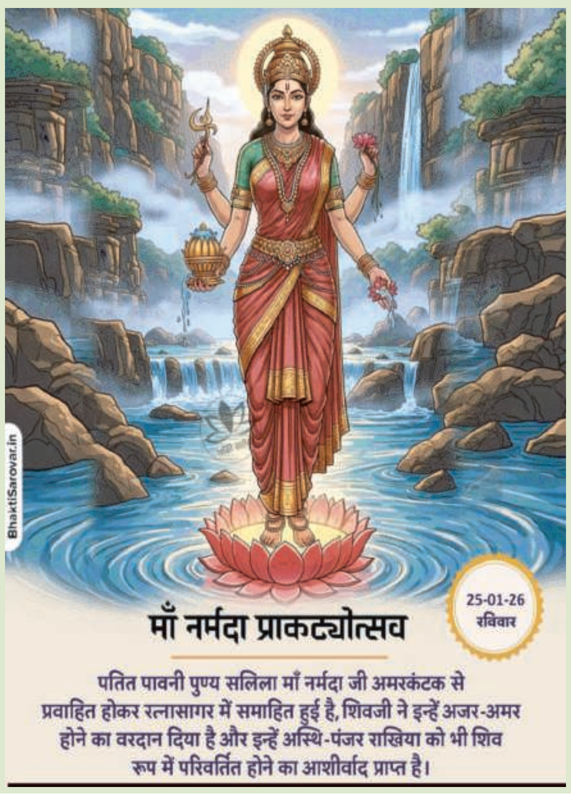

"25 जनवरी, रथ सप्तमी"

पिंकी कुंडू

रथ सप्तमी पर्व माघ मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि के दिन मनाया जाता है, इस दिन भगवान सूर्य देव को जल अर्पित करके उनकी विधिपूर्वक पूजा की जाती है।

रथ सप्तमी को विभिन्न नामों से जाना जाता है, माघ शुक्ल सप्तमी के कारण इसे माघी सप्तमी, अचला सप्तमी आरोग्य सप्तमी, रथ आरोग्य सप्तमी और अर्क सप्तमी के नाम से भी जाना जाता है।

रथ सप्तमी के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करके उगते हुए सूर्य का दर्शन एवं उन्हें ॐ घृणि सूर्याय नमः कहते हुए जल अर्पित करें। सूर्यदेव की किरणों को लाल रोली, लाल फूल मिलाकर जल दें। सूर्यदेव को जल देने के पश्चात लाल आसन पर बैठकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणाध्य दिवाकर मंत्र का 108 बार जप करें।

रथ सप्तमी के दिन सूर्य देव की पूजा करने से और दान- पुण्य करने से व्यक्ति को निरोगी शरीर और सफलता-यश का वरदान मिलता है।

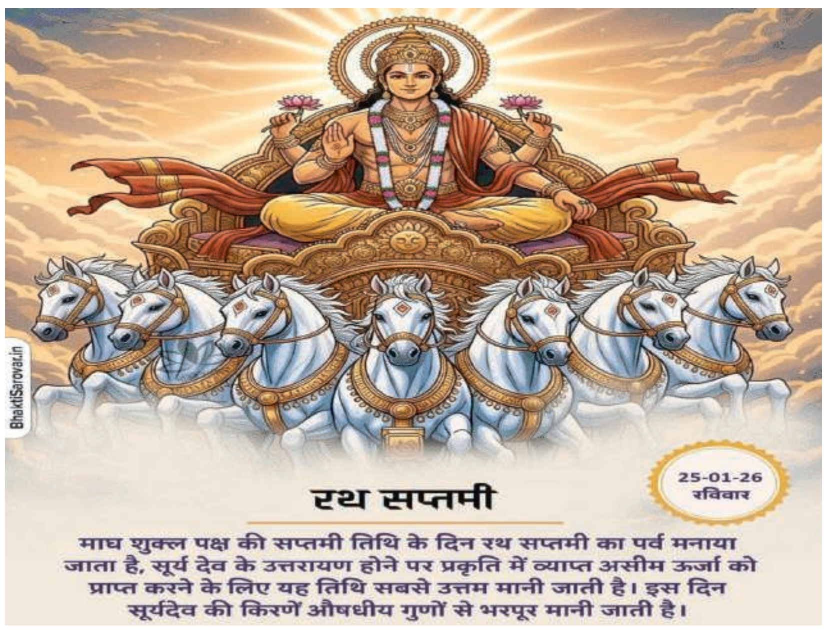

(कभी कभी जीवन मे वो सब हो जाता है,जो आपने कभी सोचा भी नहीं होता,इसी का नाम माँ भगवती जी कृपा है,)

केके छाबड़ा

(किसी से बोलना,बात करना अच्छा नहीं लगता,जब से प्रीत लगी है मां भगवती जी से,दूसरा कोई अच्छा नहीं लगता.)

(माता पिता की सेवा कर के दिल को,जो संतोष मिलता है,यकीन करना,करोड़ों रुपए खर्च करके भी,वह संतोष हासिल नहीं हो सकता.जब तक माता-पिता है,हम सब को उनकी सेवा करनी चाहिए.हमें किसी मंदिर,गुरुद्वारे जाने की भी आवश्यकता नहीं है.यह सब करके देखो,आपको खुद ही हर बात का एहसास हो जाएगा.गुजरा हुआ समय,नदी का पानी,कमान से तीर,जुबान से बोले हुए शब्द और आपके माता पिता कभी भी वापस नहीं आ सकते.माता पिता के आशीर्वाद को कोई नहीं काट सकता.यही सत्य है. जय माता दी.)

(पराये लोगों से क्या शिकायत करे,घाव तो अपनों के ज्यादा चुभते है.)

हथेली का क्रॉस साइन लाता है बैड लक, कहीं आपके हाथ में तो नहीं ये निशान

हथेली पर रेखाओं के अलावा कई तरह के चिह्न भी बने होते हैं। यह चिह्न शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के प्रभावों वाले होते हैं। बता दें कि अशुभ प्रभाव वाले चिह्नों में से एक क्रॉस का निशान होता है। हथेली पर बना क्रॉस का चिह्न अधिकतर विपरीत फल ही देता है।

किसी भी व्यक्ति के भविष्य को जानने के लिए ज्यातिष शास्त्र को सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। वहीं सामुद्रिक शास्त्र में हाथ की रेखाओं का अहम स्थान रहा है। हस्तरेखा शास्त्र एक ऐसा विज्ञान है, जोकि हथेली में रेखाओं की अच्छी-बुरी स्थिति और जातक के भाग्य और स्वभाव की ओर इशारा करती है। हस्तरेखा शास्त्र का सही से अध्ययन करने पर जातक के भविष्य के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

हथेली पर रेखाओं के अलावा कई तरह के चिह्न भी बने होते हैं। यह चिह्न शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के प्रभावों वाले होते हैं। बता दें कि अशुभ प्रभाव वाले चिह्नों में से एक क्रॉस का निशान होता है। हथेली पर बना क्रॉस का चिह्न अधिकतर विपरीत फल ही देता है।

क्रॉस का निशान

अगर किसी जातक की हथेली पर शनि क्षेत्र यानी की बीच वाली उंगली के नीचे क्रॉस का निशान है और यह भाग्य रेखा को टच कर रहा है। तो ऐसे जातक को दुर्घटना से हानि होने की प्रबल संभावना रहती है। अगर सिर्फ शनि क्षेत्र पर ही क्रॉस का चिह्न है, तो यह जातक को उत्साहहीन, निराशावादी और आलसी होता है।

सूर्य क्षेत्र यानी की अनामिका उंगली के नीचे अगर क्रॉस का चिह्न होता है, तो जातक अपने जीवन में बड़ी मुश्किल से सफल होता है। अधिकतर कार्यों में जातक को असफलता प्राप्त होती है।

वहीं हाथ की सबसे छोटी उंगली के नीचे के क्षेत्र को बुध का क्षेत्र कहा जाता है। यहां पर क्रॉस का चिह्न होता है, तो व्यक्ति के स्वभाव में ईमानदारी की कमी होती है। जिसकी वजह से व्यक्ति को सफलता नहीं मिल पाती है।

वहीं हथेली के मध्य में मंगल क्षेत्र होता है। इस पर क्रॉस होने पर जातक का स्वभाव लड़ाई-झगड़े वाला होता है। ऐसे जातकों के शत्रुओं की संख्या काफी ज्यादा होती है।

अंगूठे के नीचे शुक्र पर्वत पर क्रॉस का चिह्न होने से जातक प्रेम में बहुत ज्यादा दुख पाता है।

चंद्र क्षेत्र जोकि शुक्र पर्वत होता है, यह अंगूठे के दूसरी ओर स्थित होता है। यहां पर क्रॉस का चिह्न होने से जातक की कल्पना शक्ति कमजोर होती है।

अगर गुरु पर्वत यानी की तर्जनी उंगली के नीचे क्रॉस का चिह्न होता है, तो यह बुरा प्रभाव नहीं देता है। बता दें कि जितने भी बड़े भविष्यवक्ता हुए हैं, इनमें से अधिकांश के हाथों में गुरु यानी की बृहस्पति पर्वत पर क्रॉस का चिह्न देखा गया है।

किन्नरों से जुड़े 20 रोचक तथ्य

पिंकी कुंडू

किन्नर समुदाय समाज से अलग ही रहता है और इसी कारण आम लोगों में उनके जीवन और रहन-सहन को जानने की जिज्ञासा बनी रहती है। किन्नरों का वर्णन ग्रंथों मे भी मिलता है। जानते हैं किन्नर समुदाय से जुड़ी कुछ खास बातें...

1. ज्योतिष के अनुसार

* वीर्य की अधिकता से पुरुष (पुत्र) उतपन्न होता है।

* रक्त (रज) की अधिकता से स्त्री (कन्या) उतपन्न होती है।

* वीर्य और राज़ समान हो तो किन्नर संतान उतपन्न होती है।

2. महाभारत मे जब पांडव एक वर्ष का अज्ञात वास काट रहे थे, तब अर्जुन एक वर्ष तक किन्नर वृहन्नला बनकर रहा था।

3. प्राचीन काल मे भी किन्नर राजा - महाराजाओं के यहां नाचना - गाना करके अपनी जीविका चलाते थे। महाभारत मे वृहन्नला (अर्जुन) ने उत्तरा को नृत्य और गायन की शिक्षा दी थी।

4. किन्नर की दुआएं किसी भी व्यक्ति के बुरे समय को दूर कर सकती हैं। धन लाभ चाहते है तो किसी किन्नर से एक सिक्का लेकर पर्स मे रखे।

5. एक मान्यता है कि ब्रह्माजी की छाया से किन्नरों की उत्पत्ति हुई है दूसरी मान्यता यह है कि अरिष्टा और कश्यप ऋषि से किन्नरों की उतपत्ति हुई है।

6. पुरानी मान्यताओं के अनुसार शिखंडी को किन्नर ही माना गया है। शिखंडी के कारण ही अर्जुन ने भीष्म को युद्ध मे हरा दिया था।

7. यदि कुंडली मे बुध गृह कमजोर हो तो किसी किन्नर को हरे रंग की चूड़ियां व साडी दान करनी चाहिए, इससे लाभ होता है।

8. किसी नए व्यक्ति को किन्नर समाज मे सम्मिलित करने के भी नियम है। इसके लिए कई रीती-रिवाज़ है, जिनका पालन किया जाता है। नए किन्नर को सम्मिलित करने से पहले नाच-गाना और सामूहिक भोज होता है।

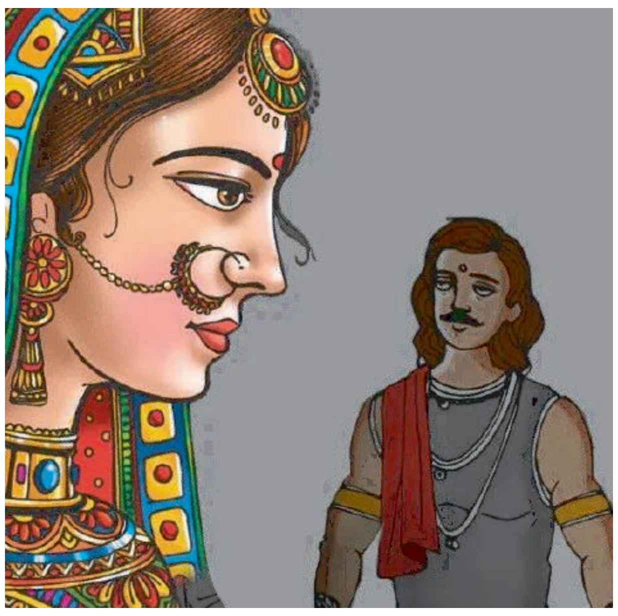

9. फिलहाल देश मे किन्नरों की चार देवियां हैं।

10. कुंडली मे बुध, शनि, शुक्र और केतु के अशुभ योगों से व्यक्ति किन्नर या नपुंसक हो सकता है।

11. किसी किन्नर की मृत्यु के बाद उसका अंतिम संस्कार बहुत ही गुप्त तरीके से किया जाता है।

12. किन्नरों की जब मृत्यु होती है तो उसे किसी गैर किन्नर को नहीं दिखाया जाता। ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से मरने वाला अगले जन्म मे भी किन्नर ही पैदा होगा। किन्नर मुर्दे को जलाते नहीं बल्कि दफनाते हैं.

13. हिंजड़ों की शव यात्राएं रात्रि को निकाली जाती है।

* शव यात्रा को उठाने से पूर्व जूतों-चप्पलों से पीटा जाता है।

* किन्नर के मरने उपरांत पूरा हिंजड़ा समुदाय एक सप्ताह तक भूखा रहता है।

14. किन्नर समुदाय मे गुरू शिष्य जैसे प्राचीन परम्परा आज भी यथावत बनी हुई है। किन्नर समुदाय के सदस्य स्वयं को मंगल मुखी कहते है क्योंकि ये सिर्फ मांगलिक कार्यो मे ही हिस्सा लेते हैं शोक मे नहीं।

15. किन्नर समाज कि सबसे बड़ी विशेषता है मरने के बाद यह शोक नहीं मनाते हैं। किन्नर समाज मे मान्यता है कि मरने के बाद इस नर्क रूपी जीवन से छुटकारा मिल जाता है। इसीलिए मरने के बाद हम खुशी मानते हैं। ये लोग स्वंय के पैसो से कई दान कार्य भी करवाते है ताकि पुनः उन्हें इस रूप मे पैदा ना होना पड़े।

16. देश में हर साल किन्नरों की संख्या मे 40 - 50 हजार की वृद्धि होती है। देशभर के समस्त किन्नरों मे से 90 फीसद ऐसे होते हैं जिन्हें बनाया जाता है। समय के साथ किन्नर बिरादरी मे वो लोग भी शामिल होते चले गए जो जनाना भाव रखते हैं।

17. किन्नरों की दुनिया का एक खौफनाक सच यह भी है कि यह समाज ऐसे लड़कों की तलाश मे रहता है जो खूबसूरत हो, जिसकी चाल-ढाल थोड़ी कोमल हो और जो ऊंचा उठने के ख्वाब देखता हो। यह समुदाय उससे नजदीकी बढ़ाता है और फिर समय आते ही उसे बधिया कर दिया जाता है। बधिया, यानी उसके शरीर के हिस्से के उस अंग को काट देना, जिसके बाद वह कभी लड़का नहीं रहता।

18. अब देश में मौजूद पचास लाख से भी ज्यादा किन्नरों को तीसरे दर्जे मे शामिल कर लिया गया है। अपने इस हक के लिए किन्नर बिरादरी वर्षों से लड़ाई लड़ रही थी। 1871 से पहले तक भारत मे किन्नरों को ट्रांसजेंडर का अधिकार मिला हुआ था। मगर 1871 मे अंग्रेजों ने किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स यानी जरायमपेशा जनजाति की श्रेणी में डाल दिया था। बाद मे आजाद हिंदुस्तान का जब नया संविधान बना तो 1951 में किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स से निकाल दिया गया। किन्तु उन्हें उनका हक तब भी नहीं मिला था।

19. आमतौर पर सिंहस्थ मे 13 अखाड़े शामिल होते हैं, लेकिन इस बार एक नया अखाड़ा और बना है। ये अखाड़ा है किन्नर अखाड़ा। किन्नर अखाड़े को लेकर समय-समय पर विवाद होते रहे हैं। इस अखाड़े का मुख्य उद्देश्य किन्नरों को भी समाज मे समानता का अधिकार दिलवाना है।

20. किन्नर अपने आराध्य देव अरावन से साल मे एक बार विवाह करते है। हालांकि यह विवाह मात्र एक दिन के लिए होता है। अगले दिन अरावन देवता की मौत के साथ ही उनका वैवाहिक जीवन खत्म हो जाता है।

श्मशान का अर्थ क्या है?

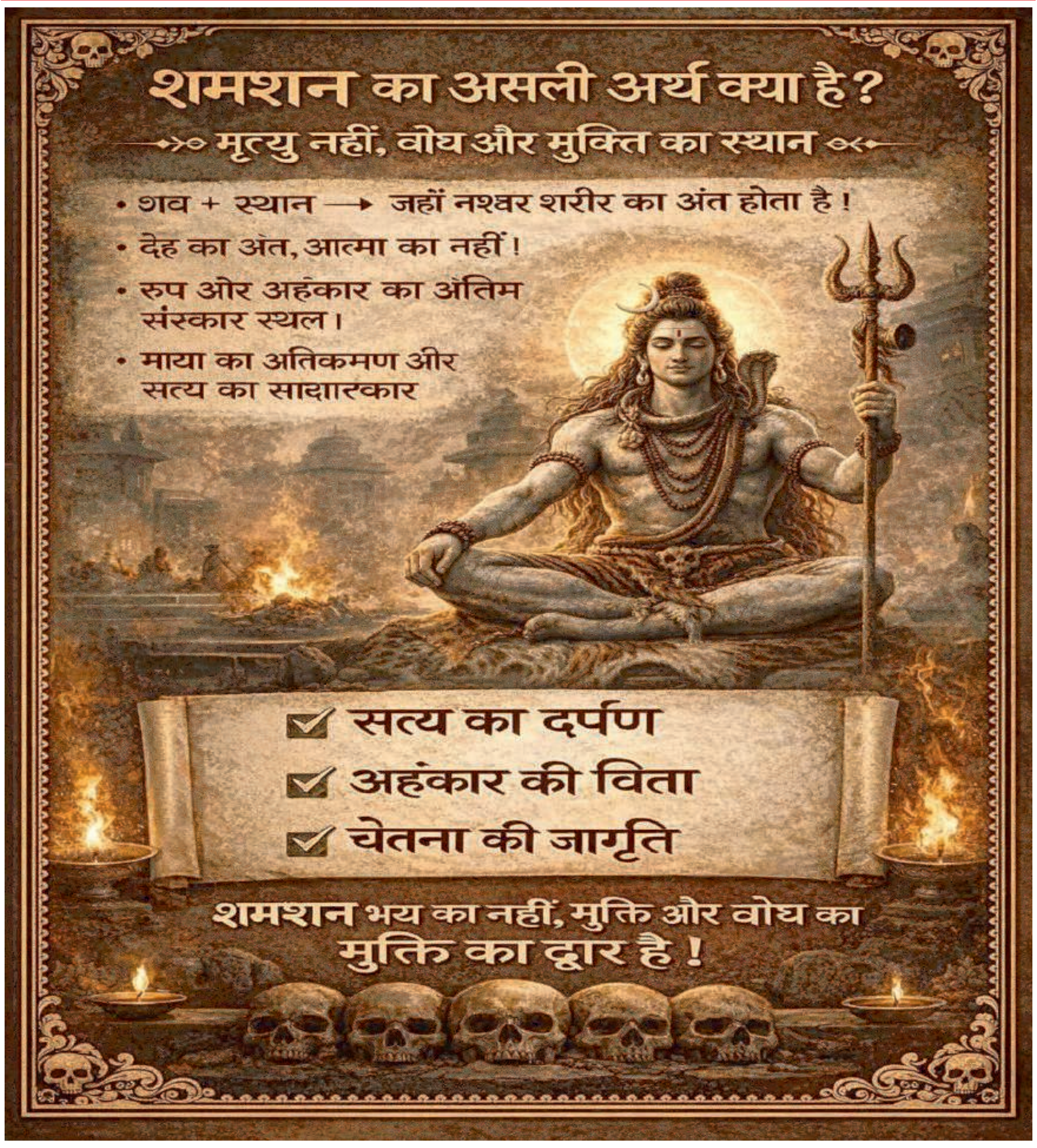

पिंकी कुंडू

मृत्यु नहीं, बोध और मुक्ति का स्थान भारतीय संस्कृति में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिन्हें सुनते ही मन भय, विरक्ति या रहस्य से भर जाता है।

"श्मशान" भी उन्हीं शब्दों में से एक है। सामान्यतः लोग श्मशान को केवल मृत शरीर के दहन स्थल के रूप में देखते हैं, किंतु सनातन परंपरा में श्मशान का अर्थ इससे कहीं अधिक गहरा, दार्शनिक और आध्यात्मिक है।

श्मशान भय का नहीं, बल्कि सत्य के साक्षात्कार का स्थान है।

शब्दार्थः श्मशान का वास्तविक अर्थ

"श्मशान" शब्द दो भागों से बना है

* श्म → जिसका अर्थ है शव या नश्वर शरीर

* शान / स्थान → निवास या ठहराव अर्थात जहाँ नश्वर शरीर का अंत होता है, वह स्थान श्मशान कहलाता है।

लेकिन शास्त्र कहते हैं शरीर का अंत, आत्मा का अंत नहीं है। इसलिए श्मशान अंत नहीं, एक परिवर्तन द्वार है।

दार्शनिक दृष्टि से श्मशान उपनिषदों में कहा गया हैः-

"न जायते म्रियते वा कदाचित"
(आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है)

श्मशान हमें सिखाता है कि

* यह शरीर अस्थायी है

* पद, प्रतिष्ठा, अहंकार सब यहीं छूट जाते हैं

* केवल कर्म और चेतना आगे जाती है

इसलिए श्मशान अहंकार का अंतिम संस्कार स्थल भी है।

भगवान शिव और श्मशान का रहस्य भगवान महादेव को श्मशान वासी कहा गया है। यह संयोग नहीं, गहरा प्रतीक है।

शिव का संदेश

* जो मृत्यु से नहीं डरता, वही जीवन को समझता है।

* जो श्मशान में भी स्थिर रह सके, वही सच्चा योगी है।

श्मशान शिव के लिए

* वैराग्य का स्थान

* माया से परे सत्य का प्रतीक और

* पूर्ण स्वतंत्रता का क्षेत्र है।

इसीलिए अघोरी, नाथ योगी और तांत्रिक साधक श्मशान में साधना करते हैं।

श्मशानः भय का नहीं, बोध का स्थान आम मनुष्य श्मशान से डरता है क्योंकि

* वहाँ सच दिखाई देता है

* वहाँ झूठे आवरण टूटते हैं

श्मशान पूछता है

* "तू कौन है? यह देह या वह चेतना ?"

* इसलिए श्मशान सबसे बड़ा गुरु है बिना बोले उपदेश देने वाला।

* तांत्रिक और साधना परंपरा में श्मशान तंत्र में श्मशान को महाशक्ति क्षेत्र माना गया है।

* क्यों?

* वहाँ अहंकार नहीं टिकता

* वहाँ भय, मोह आसक्ति टूटती है

* मन अत्यंत जाग्रत अवस्था में होता है।

इसीलिए श्मशान साधना सामान्य साधना से कहीं अधिक तीव्र और आत्म परिवर्तन कारी मानी जाती है।

सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अर्थ श्मशान हमें सिखाता है —

* जीवन क्षणभंगुर है

* हर श्वास अमूल्य है

* संबंध देह के नहीं, भाव के होते हैं

जो व्यक्ति मृत्यु का सत्य स्वीकार कर लेता है। वह जीवन को अधिक सजगता, करुणा और सादगी से जीता है।

श्मशान और मुक्ति का संबंध काशी में कहा जाता है "काशी में मृत्यु, मोक्ष की गारंटी है।" श्मशान केवल दहन स्थल नहीं,

मुक्ति का द्वार माना गया है। क्योंकि

* वहीं जीवन का सबसे बड़ा बंधन टूटता हैः देह - बोध और वहीं से आत्मा की यात्रा नई दिशा लेती है

निष्कर्ष श्मशान का असली अर्थ —

* डर

* अंधकार

* अंत नहीं है।

श्मशान है —

* सत्य का दर्पण

* अहंकार की चिता और

* चेतना की जागृति

जो श्मशान को समझ लेता है, वह जीवन को भी सही अर्थों में समझ लेता है। जय महाकाल.

डीसी व डीसीपी ने गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों को दिया अंतिम रूप

समारोह की फाइनल रिहर्सल में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज
रोडवेज वर्कशॉप में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में खाद्य आपूर्ति मंत्री राजेश नागर फहराएंगे राष्ट्रीय ध्वज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 24 जनवरी। देश के 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर 26 जनवरी, सोमवार को जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह रोडवेज वर्कशॉप प्रांगण में पूरे हर्षोल्लास, देशभक्ति एवं गरिमामय वातावरण में आयोजित किया जाएगा। समारोह की तैयारियों को अंतिम रूप देने हेतु शनिवार को आयोजित फाइनल रिहर्सल के दौरान उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल राष्ट्रीय ध्वज फहराकर परेड का निरीक्षण किया और मार्च पास्ट की सलामी ली। फाइनल रिहर्सल के दौरान डीसी ने विभिन्न विद्यालयों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अवलोकन किया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कार्यक्रम की तैयारियों को अंतिम रूप दिया। इस अवसर पर डीसीपी जसलीन कौर ने परेड के प्रदर्शन की समीक्षा करते हुए परेड कमांडर को आवश्यक निर्देश दिए।

उपायुक्त ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। मुख्य अतिथि द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के उपरांत परेड का निरीक्षण कर मार्च पास्ट की सलामी लेंगे।

जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में परेड का नेतृत्व एसीपी अनिरुद्ध चौहान करेंगे। परेड में हरियाणा पुलिस पुरुष व महिला , होमगार्ड , सीनियर व जूनियर एनसीसी विंग , डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल के प्रजातंत्र की टुकड़ी शामिल होंगी। एसएफएस स्कूल बिरधाना के विद्यार्थियों द्वारा बैंड की आकर्षक प्रस्तुति दी जाएगी। फाइनल रिहर्सल के दौरान विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का पूर्व अभ्यास किया गया। डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय गान, बी.आर.पी.एस. दुजाना, सवेरा स्कूल, जे.एन.वी. कलोई, जीएवी पब्लिक स्कूल, पटौदा, एच.आर. ग्रीन फील्ड स्कूल, झज्जर, तथा संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल, पटौदा,

आरईडी स्कूल के छात्र छात्राएं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगे। योग एवं शारीरिक दक्षता से जुड़ी प्रस्तुतियों में गुरुकुल, झज्जर द्वारा सूर्य नमस्कार तथा शहीद रमेश कुमार वरिष्ठ माध्यमिक मॉडल संस्कृति स्कूल, झज्जर द्वारा मास पी.टी. प्रदर्शन किया जाएगा। वहीं पं. सतगुरु दास राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, झज्जर की छात्राएं डम्बल व्यायाम प्रदर्शन प्रस्तुत करेंगी। इसके साथ ही हरियाणा सरकार की जनकल्याणकारी एवं विकासात्मक योजनाओं पर आधारित विभिन्न विभागों की आकर्षक झांकियां भी प्रदर्शित की जाएंगी।

समारोह के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा शौर्य चक्र विजेता सैनिकों तथा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया जाएगा। फाइनल रिहर्सल उपरांत उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने समारोह स्थल पर संबंधित अधिकारियों की बैठक लेकर सभी तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की और आवश्यक निर्देश दिए। इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम अंकित कुमार चौकसे, सीटीएम नमिता कुमारी, डीडीपीओ निशा तंवर, डीआईपीआरओ सतीश कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी रतिन्द्र सिंह, जीएम रोडवेज, संजीव तिहाल, ,प्रिंसिपल जोगिंदर धनखड़, मास्टर महेंद्र सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

बादली में गणतंत्र दिवस समारोह की फाइनल रिहर्सल में तहसीलदार ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज

परिवहन विशेष न्यूज

उपमंडल स्तरीय समारोह में राज्यसभा सांसद श्री रामचंद्र जांगड़ा बतौर मुख्यतिथि करेंगे शिरकत

बादली,(झज्जर) । स्थानीय चौ. धीरपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय प्रांगण में शनिवार को गणतंत्र दिवस समारोह की फाइनल रिहर्सल का आयोजन किया गया। फाइनल रिहर्सल में तहसीलदार श्री निवास ने बतौर मुख्यातिथि ध्वज फहराया। तहसीलदार व एसीपी प्रणय कुमार ने परेड का निरीक्षण करते हुए सलामी ली।

उल्लेखनीय है कि गणतंत्र दिवस समारोह में फाइनल रिहर्सल के दौरान हरियाणा पुलिस व महाविद्यालय की एनसीसी की टुकडियों ने शानदार मार्च पास्ट किया। वहीं विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओत-प्रोत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

तहसीलदार श्री निवास ने बताया कि उपमंडल स्तरीय कार्यक्रम में राज्यसभा के सांसद श्री रामचंद्र जांगड़ा बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर परेड की सलामी लेंगे। उन्होंने समारोह के प्रबंधों के संबंध में अधिकारियों को विस्तृत दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने समारोह स्थल की सफाई, बैठने की व्यवस्था सहित अन्य प्रबंधों के संबंध में सभी तैयारियां समय पर पूरा करवाने को कहा।

इस अवसर पर बीडीपीओ सुमित बेनीवाल, कॉलेज प्रिंसिपल मेजर आनंद कुमार, एसएचओ सुरेश कुमार, अधीक्षक धर्मवीर सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

बहादुरगढ़ में गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियां पूरी, डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में फाइनल रिहर्सल आयोजित

उपमंडल स्तरीय कार्यक्रम में विधायक श्री राजेश जून बतौर मुख्य अतिथि फहराएंगे राष्ट्रीय ध्वज

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़। स्थानीय डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में शनिवार को गणतंत्र दिवस समारोह को लेकर फाइनल रिहर्सल का आयोजन किया गया। रिहर्सल में सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने कार्यक्रमों की अंतिम तैयारियों को परखा और प्रस्तुति को अंतिम रूप दिया। फाइनल रिहर्सल के दौरान नायब तहसीलदार प्रवीण कुमार एवं एसीपी प्रदीप खत्री ने परेड की सलामी ली तथा कार्यक्रमों का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने परेड की अनुशासनात्मक व्यवस्था, मंच संचालन, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सुरक्षा इंतजामों का जायजा लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। नायब तहसीलदार प्रवीण कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि 26 जनवरी को उपमंडल स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून मुख्य अतिथि के रूप में तिरंगा फहराएंगे और परेड की सलामी लेंगे। समारोह को गरिमामय एवं सुव्यवस्थित ढंग से आयोजित करने के लिए सभी विभागों को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

शनिवार को आयोजित रिहर्सल में हरियाणा पुलिस, सीनियर विंग एनसीसी, जूनियर विंग एनसीसी, स्काउट एंड गाइड्स सहित अन्य टुकड्यों ने भाग लिया। वहीं विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति दी, जिनका उपस्थित अधिकारियों ने उत्साहवर्धन किया।

नायब तहसीलदार ने बताया कि गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों, युद्ध वीरांगनाओं तथा समाज में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया जाएगा। समारोह को सफल बनाने के लिए प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक प्रबंध पूरे कर लिए गए हैं। इस अवसर पर बीईओ शेर सिंह, सुनील हुड्डा, निर्मल, पुरुषोत्तम, सुमित्रा तेवतिया, कोमल गौतम सहित विभिन्न विभागों के कर्मचारी एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

शहीद मोहित सैनिक सम्मान के साथ पंच तत्व में विलीन

भाजपा के राष्ट्रीय सचिव औमप्रकाश धनखड़ और एसडीएम झज्जर ने पुष्प चक्र अर्पित कर किया शहीद मोहित को नमन
पैतृक गांव गिजाड़ौद में शहीद को नमन करने के लिए उमड़ा जनसैलाब

झज्जर। भारतीय सेना के बहादुर सैनिक मोहित का अंतिम संस्कार शनिवार को उनके पैतृक गांव गिजाड़ौद में पूरे सैनिक सम्मान के साथ किया गया। शहीद के छोटे भाई जितेंद्र ने मोहित के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी। सेना के जवानों ने हवा में फायर कर सलामी दी, मातमी धुन बजाकर शहीद के सम्मान में शस्त्र उल्टे किए। मोहित अमर रहे और भारत माता के जयकारों से पूरा गमगीन माहौल देशभक्ति से सराबोर हो गया। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव औमप्रकाश धनखड़, भाजपा जिला अध्यक्ष विकास बाल्मीकी ,प्रशासन की ओर से एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे ने शहीद के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित करते हुए नमन किया। शहीद की अंतिम यात्रा में भारी संख्या में क्षेत्र के लोग शरीक हुए।

मोहित की शहादत पर मां भारती को गर्व : धनखड़

भाजपा के राष्ट्रीय सचिव औमप्रकाश धनखड़ ने शहीद के परिजनों को अपनी भावपूर्ण संवेदनाएं प्रकट करते हुए कहा कि गिजाडौद्द, झज्जर, हरियाणा और मां भारती को मोहित की शहादत पर गर्व है। यह वीर भूमि है। मोहित की शौर्य गाथा पर सभी को गर्व है। हमारे क्षेत्र के नौजवान शौर्य गाथाओं को सुन सुन कर बड़े होते हैं और मां भारती की सेवा करते हुए अपने सर्वोच्च बलिदान के लिए तैयार रहते हैं। शहादत और बलिदान से बड़ा कोई सम्मान नहीं है, यहीं वीर भूमि की परंपरा है जो वीर रोहित ने निभाई है। हम सभी को रोहित की शहादत पर हमेशा गर्व रहेगा। धनखड़ ने रोहित के साथ शहीद हुए अन्य दस शहीद सैनिकों को भी नमन किया।

करीब पांच वर्ष पहले मोहित सेना की 72 आर्मड कोर में भर्ती हुए थे और शहादत के समय चार राष्ट्रीय राइफल कश्मीर में तैनात थे। दो दिन पहले सेना की गाड़ी गहरी खाई में फिसलने के कारण भारतीय सेना के दस बहादुर जवान शहीद हुए थे। 72 आर्मड कोर से मेजर सुरेंद्र कुमार, हवलदार भूपसिंह, हवलदार धर्मवीर सिंह हवलदार राजीव सहित उनकी यूनिट के साथी शहीद के पार्थिव शरीर के साथ सुबह लगभग सवा 11 बजे गिजाड़ौद पंहुचे। काफी संख्या में युवा हाथों में तिरंगा लिए शहीद मोहित को नमन करने पंहुचे। शहीद के परिवार में धर्म पत्नी अंजलि, पिता सतपाल सिंह चौहान, मां रेखा देवी, छोटा भाई जितेंद्र हैं ।

प्रशासन की ओर से अंकित कुमार चौकसे एसडीएम झज्जर, जिला सैनिक अर्द्ध सैनिक बोर्ड सचिव कर्नल कुंडू, डीआईपीआरओ सतीश कुमार, तहसीलदार शेखर, कल्याण अधिकारी राकेश कुमार, अजय कुमार दलाल, विजेंद्र सिंह ने शहीद मोहित को नमन किया ।

स्वतंत्रता से गणतंत्र तक

स्वतंत्रता से गणतंत्र तक का यह सफ़र बहुत शानदार,
संविधान हमारा देता है सबको एक समान अधिकार,
समूचे विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत देश हमारा,
विविधता में बसा आकर्षण भारत हमको सबसे प्यारा ।

वीरों ने दी थी कुर्बानियाँ दुश्मनों को उखाड़ बाहर फेंका,
बलिदान दे परतंत्रता के साम्राज्य को बढ़ने से था रोका,
आग़ाज हुआ फिर नए भारत का चमकी दसों दिशाएं,
लहराया जब तिरंगा ऊँचा चहक उठी करोड़ों आशाएं ।

कठिन परिस्थितियों से भिड़ भारत ने स्वयं को सम्हाला,
गूँज उठा शान से विश्व में यूँ भारत का यश गान निराला,
26 जनवरी को मातृभूमि का वंदन गाकर उत्सव मनाते,
वीरों का भी कर अभिनंदन देशवासी आभार है जताते ।

वंदेमातरम् वंदेमातरम् वंदेमातरम् की दे अनोखी ताल,

₹आनंद₹ बसा हो हर घर समृद्ध हो माँ भारती का लाल,
बहती रहे विश्व बंधुत्व की भावना प्रबल प्रेममय गंगा,
बढ़ता रहे मेरा भारत आगे लहर- लहर लहराएं तिरंगा ।
- **मोनिका डागा आनंद, चेन्नई, तमिलनाडु**

आया हैं "गणतंत्र दिवस" ...!

आया हैं गणतंत्र दिवस का पावन अवसर,
26 जनवरी 1950 को प्रारम्भ हुआ सफ़र।
हिंदुस्तान का ₹संविधान₹ अस्तित्व में आया,
भारत सही मायने में एक गणतंत्र कहलाया।

आखिर यूं देशभक्तों का ₹जुनून₹ काम आया,
देश में लागू हुआ हमारा अपना कानून छाया।
यहाँ चहूँओर बिखरे हैं खुशियों के रंग हज़ार,
हर भारतीयों में छाया हैं खुशियों का संसार |

खुशहाल भारत के सपनीली राह से भटक रहें,
देशहित को भूल अपने स्वार्थ में है अटक रहें।
आओ उन वीर शहीदों के मकसद को दोहराएं,
दिलों में देशहित को निजहित से ऊपर बिठाएं।

संजय एम तराणेकर

मथुरा रिफाइनरी में गूँजा हवाई हमले का सायरन: नागरिक सुरक्षा के जांबाजों ने ऊँची बिल्डिंग से किया हैरतअंगेज रेस्क्यू मथुरा

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। उत्तर प्रदेश दिवस एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती के अवसर पर शुक्रवार शाम मथुरा रिफाइनरी परिसर में नागरिक सुरक्षा विभाग द्वारा आयोजित 'ब्लैक आउट मॉक ड्रिल' ने दर्शकों की सांसें थाम दीं। जिलाधिकारी श्री चन्द्र प्रकाश सिंह एवं एसएसपी श्री श्लोक कुमार के निर्देशन में हुए इस युद्धाभ्यास में दिखाया गया कि कैसे हवाई हमले की स्थिति में तकनीक और साहस के समन्वय से जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। ऊँची इमारत से सुरक्षित रेस्क्यू का सजीव प्रदर्शन मॉक ड्रिल के दौरान राहत एवं बचाव कार्य तब अपने चरम पर पहुँच गया, जब बहुमंजिला इमारत में फंसी 'कैजुअल्टी' (घायलों) को निकालने का प्रदर्शन किया गया। डिवीजनल वार्डन श्री भारत भूषण तिवारी एवं मास्टर ट्रेनर व पोस्ट वार्डन इंजीनियर अशोक यादव ने अपनी तकनीकी विशेषज्ञता का परिचय देते हुए 'फायरमैन लिफ्ट' और 'चेयर नॉट' के माध्यम से ऊंचाई पर फंसे लोगों को सुरक्षित नीचे उतारा। इन कठिन गांठों और रेस्क्यू तकनीकों का सफल प्रदर्शन देख उपस्थित अधिकारियों ने बचाव दल की प्रशंसा की। प्रशासनिक नेतृत्व और टीम भावना इस पूरे ऑपरेशन का सफल संचालन प्रभारी अधिकारी/एडीएम श्री राजेश कुमार यादव एवं सहायक उपनियंत्रक श्री नीरज श्रीवास्तव की देखरेख में हुआ। टीम में मुख्य वार्डन श्री राजीव अग्रवाल, डिप्टी चीफ वार्डन श्री कल्याण दास अग्रवाल, स्टाफ ऑफिसर टू चीफ श्री दीपक चतुर्वेदी बैंकर और डिप्टी डिवीजनल वार्डन श्री राजेश कुमार मित्तल ने मोर्चा संभाला। सायरन और ब्लैक आउट की प्रक्रिया ड्रिल के दौरान रिफाइनरी में पूरी तरह ब्लैक आउट किया गया लाल संकेत सायरन बजते ही चारों ओर अंधेरा छा गया और लोग शरण स्थलों शेल्टर की ओर बढ़े। बचाव कार्य हमला खत्म होने का हरा संकेत मिलते ही फायर फाइटर और फर्स्ट एड टीमें सक्रिय हुईं। छोटी आग को बुझाने के साथ-साथ गंभीर घायलों को त्वरित चिकित्सा सहायता प्रदान की गई। मथुरा रिफाइनरी स्टाफ अग्निशमन विभाग पुलिस और स्वास्थ्य विभाग के इस संयुक्त अभ्यास ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी आपदा या हवाई हमले की स्थिति में मथुरा का नागरिक सुरक्षा विभाग पूरी तरह मुस्तैद और तकनीकी रूप से सक्षम है।

परिवहन विशेष जन सूचना

पिंकी कुंडू

अमृत उद्यान विंटर एनुअल्स 2026 के साथ एक बार फिर अपने दरवाज़े खोल रहा है। राष्ट्रपति भवन के बगीचों में मौसमी फूलों और खूबसूरत नज़ारों का अनुभव करने के लिए आगंतुकों को आमंत्रित किया जाता है।

3 फरवरी – 31 मार्च 2026 (सोमवार को बंद)

* सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक (आखिरी एंट्री शाम 5.15 बजे)
* एंट्री और एग्जिट : गेट नंबर 35, प्रेसिडेंट्स एस्टेट
* गार्डन में एंट्री मुफ्त है

एडवांस बुकिंग यहां की जा सकती है : https://visit.rashtrapatibhavan.gov.in/

एम0 पी0 सी0 आई0 ने धूमधाम, हर्षोल्लास व भव्यता के साथ मनाया सरस्वती पूजा

देवघर। स्थानीय न्यू इन्दिरानगर स्थित शिक्षा जगत की जानी-मानी, पुरानी व प्रतिष्ठित कोचिन्ग संस्थान एम० पी० सी० आई० एवं संजीव स्कूल जेड कोचिन्ग क्लासेंस ने धूमधाम व भव्यता एवं हर्षोल्लास के साथ बीणादायिनी माँ सरस्वती की पूजा श्रद्धा के साथ मनाया गया। पूरे विधि-विधान व आराधना के साथ माँ शारदें की विधिवत पूजा व आरती की गई। साथ ही, भारी संख्या में लोगो व आगन्तुकों के बीच प्रसाद वितरण किया गया। मौके पर निदेशक संजीव कुमार ने कहा कि माँ सरस्वती की कृपा से जीवन में बुद्धि, विवेक और सृजनशीलता का प्रकाश सदैव बना रहे। ऐसी कामना है। इस अवसर पर राष्ट्र जागृति मंच के जिला अध्यक्ष श्री प्रभाष गुप्ता ने कहा कि ऋतुराज बसंत के पावन पर्व पर नए सपने, नई ऊर्जा और नई शुरुआत के साथ सबों को वसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

ललित कुंज में धूमधाम से मनाया गया श्रीस्वामी हरिदास पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी राधा प्रसाद देव जू महाराज का 68 वां अवतरण दिवस

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित ललित कुंज में श्रीस्वामी हरिदास पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी राधा प्रसाद देव जू महाराज का 68 वां अवतरण दिवस विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत नगर के कई प्रख्यात सन्तों, विद्वानों, धर्माचार्यों, राजनेताओं व समाजसेवियों द्वारा पूज्य महाराजश्री का सम्मान व अभिनंदन किया गया। साथ ही ठाकुर बांके बिहारी महाराज से उनके स्वस्थ्य, उज्ज्वल व सुधीर्घ जीवन एवं मंगलमय भविष्य की कामना की। तत्पश्चात समस्त शिष्य परिकर के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य उनका पूजन-अर्चन किया गया। इसके अलावा अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक फूल बंगला सजाया गया तथा वीणा म्यूजिकल ग्रुप के द्वारा ब्रजेश गिरि के निर्देशन में सरस भजन संध्या आयोजित हुई। जिसमें प्रख्यात भजन गायकों द्वारा जन्म की बधाइयों का गायन किया गया। साथ ही फूलों की भव्य होली खेली गई।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ, महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. सत्यानंद सरस्वती (अधिकारी गुरुजी), महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज, महंत सुंदरदास महाराज, सन्त रामदास महाराज (अयोध्या), श्रीमहंत चंद्रदास महाराज, महंत जयराम दास महाराज, आचार्य बद्रीश महाराज, भगवताचार्य मृदुल कृष्ण शास्त्री, प्रमुख समाजसेवी रामकिशन अग्रवाल (बसेरा ग्रुप), तरुण मिश्रा, श्रीमती शालू मिश्रा, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

चतुः संप्रदाय विरक्त वैष्णव परिषद् के महन्त मोहिनी बिहारी शरण महाराज ने सभी सन्तों-विद्वानों का स्वागत व आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन महंतों का सम्मान व सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

25 जनवरी राष्ट्रीय मतदाता दिवस : लोकतंत्र की असली ताकत: जागरूक मतदाता

-बाबूलाल नागा

भारत में राष्ट्रीय मतदाता दिवस प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को मनाया जाता है। विश्व में भारत जैसे सबसे बड़े लोकतंत्र में मतदान को लेकर कम होते रुझान को देखते हुए राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाने लगा था। पहली बार इसे वर्ष 2011 में मनाया गया। मतदान दिवस मनाने का मुख्य कारण है कि लोगो को मतदान का महत्व बताया जाए ताकि लोग इसके प्रति जागरूक हो और सही उम्मीदवार को चुने जिससे हमारे देश का विकास एक अवरुद्ध दिशा में चल सके। यह दिवस भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए अहम है। इस दिन भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्र के प्रत्येक चुनाव में भागीदारी की शपथ लेनी चाहिए, क्योंकि भारत के प्रत्येक व्यक्ति का वोट ही देश के भावी भविष्य की नींव रखता है। इसलिए हर एक व्यक्ति का वोट राष्ट्र के निर्माण में भागीदार बनता है।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस भारतीय लोकतंत्र की उस बुनियाद को याद करने का अवसर है, जिस पर पूरा संवैधानिक ढांचा टिका है। यह दिन केवल मतदाता पहचान पत्र या मतदान प्रतिशत की चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि उस लोकतांत्रिक चेतना को जगाने का प्रयास है, जिसके बिना लोकतंत्र केवल एक औपचारिक व्यवस्था बनकर रह जाता है। भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में मतदाता केवल एक संख्या नहीं, बल्कि व्यवस्था की आत्मा होता है।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाकर दुनिया को चौंकाया था। अशिक्षा, गरीबी और संसाधनों की सीमाओं के बावजूद देश ने यह भरोसा जताया कि उसका आम नागरिक अपने मत के माध्यम से सही निर्णय लेने में सक्षम है। यही विश्वास भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत बना। राष्ट्रीय मतदाता दिवस उसी ऐतिहासिक भरोसे को नई पीढ़ी तक पहुंचाने और उसे जीवंत बनाए रखने का माध्यम है।

आज मतदान की प्रक्रिया पहले से कहीं अधिक सरल और सुलभ हो चुकी है, लेकिन मतदाता का विवेक पहले से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। सूचना क्रांति के इस दौर में सच और झूठ के बीच की रेखा लगातार धुंधली होती जा रही है। सोशल मीडिया, अफवाहें, भ्रामक प्रचार और नफरत की राजनीति मतदाता की सोच को प्रभावित करने का प्रयास करती हैं। ऐसे समय में राष्ट्रीय मतदाता दिवस हमें आत्ममंथन के लिए मजबूर करता है कि क्या हम अपने मत का उपयोग विवेक और तथ्य के आधार पर कर रहे हैं या केवल भावनाओं और पूर्वाग्रहों के सहारे।

भारत की लोकतांत्रिक यात्रा में युवाओं की भूमिका हमेशा निर्णायक रही है। हर चुनाव के साथ लाखों नए मतदाता सूची में जुड़ते हैं। पहली बार मतदान करने वाला युवा केवल एक वोटर नहीं, बल्कि लोकतंत्र की भविष्य दिशा तय करने वाला नागरिक होता है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य युवाओं को यह एहसास कराना है कि राजनीति से दूरी बनाना समाधान नहीं है, बल्कि जागरूक और जिम्मेदार भागीदारी ही वास्तविक बदलाव का रास्ता है।

ग्रामीण भारत में मतदान केवल एक संवैधानिक अधिकार नहीं, बल्कि सम्मान और पहचान का प्रतीक भी है। राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों के दूर-दराज गांवों में जब बुजुर्ग महिलाएं, दिव्यांगजन और पहली बार मतदान करने वाले युवा लंबी दूरी तय कर मतदान केंद्र तक पहुंचते हैं, तब लोकतंत्र की वास्तविक तस्वीर सामने आती है। हाल के वर्षों में मतदाता जागरूकता अभियानों के चलते महिलाओं और वंचित वर्गों की भागीदारी में हुई वृद्धि लोकतांत्रिक परिपक्वता का संकेत है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस यह भी याद दिलाता है कि मतदान केवल चुनावी दिन तक सीमित जिम्मेदारी नहीं है। वोट डालने के बाद भी नागरिक की भूमिका समाप्त नहीं होती। चुने गए प्रतिनिधियों से सवाल पूछना, उनके कार्यों की समीक्षा करना और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना भी उतना ही आवश्यक है। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है, जब मतदाता केवल मौन दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागी बनता है। आज देश बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा और सामाजिक न्याय जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे में मतदाता का निर्णय केवल व्यक्ति या दल नहीं, बल्कि नीतियों, दृष्टि और संवैधानिक मूल्यों के आधार पर होना चाहिए। राष्ट्रीय मतदाता दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या हमारा वोट समानता, विकास और लोकतांत्रिक मर्यादाओं को मजबूत कर रहा है या नहीं। चुनाव आयोग द्वारा मनाया जाने वाला यह दिवस प्रशासनिक पहल से आगे बढ़कर सामाजिक आंदोलन का रूप ले सकता है, बशर्ते इसे केवल औपचारिकता न बनाया जाए। स्कूलों, कॉलेजों, गांवों और कस्बों में लोकतांत्रिक संवाद को बढ़ावा देना, मतदान को उत्सव की तरह देखना और हर नागरिक को उसके मत की शक्ति का एहसास कराना समय की आवश्यकता है।

अंततः लोकतंत्र की मजबूती ईवीएम, कानून या संस्थाओं से नहीं, बल्कि मतदाता की सोच, साहस और जिम्मेदारी से तय होती है। जब नागरिक यह समझ लेता है कि उसका एक वोट केवल सरकार नहीं, बल्कि समाज की दिशा बदल सकता है, तभी लोकतंत्र जीवंत बनता है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस इसी विश्वास को दोहराने का दिन है—कि लोकतंत्र की असली ताकत सत्ता के गलियारों में नहीं, बल्कि जागरूक, निर्भीक और जिम्मेदार मतदाता के हाथ में है।

'सवाल ये कि ईश्वर से कैसे बचेगा'

एक आदमी की काफ़ी समय के उपरांत नई- नई शादी तय हुई तो ऐसा लगा मानो उसको जन्नत मिल गयी हो। खैर ईश्वर करे प्रत्येक मनुष्य शादी जैसे पवित्र बंधन को सुखपूर्वक जी सके। अब उस आदमी की असलियत उसके घर रिश्तेदार और उससे जुड़े सभी लोगों को लगभग मालूम थी। असलियत ये की दुनिया के समस्त दुर्गुण उसमें व्याप्त थे। अपने चरित्र को छुपाने के लिए उसने अपने भाई -बहन, माँ -बाप या यूँ कहिये सभी पर कोई ना कोई इल्ज़ाम लगाया। जिससे खुद की कमियाँ ढाकी जा सके परन्तु किसी को नीचा दिखाकर आज तक कोई नहीं उठ सका है।

जो भी है हाँ असल बात ये है की जब शादी के बाद लड़के और लड़की की आपस में बातचीत शुरू हुई तो लड़के के मन में डर था कि कहीं मेरी कोई बात लड़की वालों को ना पता चल जाये और फिर बड़ी मुश्किल से तय हुई शादी कहीं टूट ना जाये परन्तु कौन बताये कि हर कोई ऐसा नहीं होता की किसी का घर बर्बाद करे दुनियाँ में आज भी लोग सबका घर बसा हुआ ही देखना चाहते हैं। लेकिन गलत करने वाले का हृदय सदैव उसकी गलती का आभास दिलाता रहता है। इसीकारण उसने शादी से पहले किसी से लड़कीवालों से संपर्क करने से दूर रखा। लड़की वाले या लड़की कोई सवाल ना करे तो एक दो लोगों को बात करने के लिए शामिल कर दिया जिससे शक ना हो। कभी-कभी सोचती हूँ की अपने फायदे के लिए किसी की जिंदगी तबाह कर देना कहाँ तक उचित है? सबसे बड़ी बात खुद को अद्वितीय साबित करने के लिए लड़की के दिमाग़ में सबकी छवि पहले ही ख़राबकर देना जिससे वो सबको गलत और पति को परमेश्वर समझे। इसमें भी लड़की के दिमाग़ पर तरस आता है कि शायद वो खुद से विश्लेषण करने में सक्षम नहीं है। वरना प्रकृति विपरीत चलना असंभव है। खैर लड़के का स्वभाव ऐसा है कि कोई बहुत रूचि भी नहीं रखता उसकी जिंदगी से। उसका काम है हर किसी को परेशान करना, दुनियाभर का सन्दर्भ - प्रसंग बताकर रूपये ऐंठना जो ना दे उसपर इल्ज़ाम लगाना। रूपये ऐंठने के मामले में तो उसने लड़की तक को नहीं छोड़ा। खैर मानव का स्वभाव है जब हर बुद्धि लगाकर हार जाता है तो फिर वह आखिरी दांव चरित्र हनन पर लगाता है जो कि दुनियाँ का सबसे निकृष्ट काम है। वही वह भी करता है। लेकिन जिसने जो किया है उसको लगता है कि अब मेरी बारी है कहीं लोग मेरे साथ भी वही हरकत ना करे। लेकिन उसको यही बात तो नहीं पता कि लोगों के पास इतना वक्त नहीं है कि इतना समय बर्बाद करे। लेकिन सवाल ये है कि ईश्वर से कैसे बच पायेगा?

डॉ. प्रीति तिवारी
लखनऊ

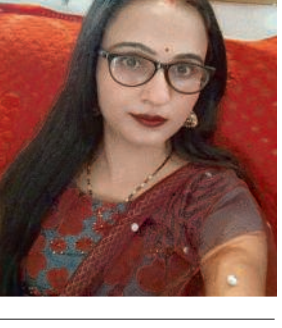

हिन्दू धर्म के सर पर हाथ रखने को आतुर हिंदुत्व का भस्मासुर : (आलेख : बादल सरोज)

काशी अपनी छाती पर चल रहे बुलडोजर की धमक से गूँज रही है। वाराणसी कॉरिडोर, जिसे काशी-विश्वनाथ कॉरिडोर का नाम दिया गया है, के नाम पर होने वाली सफाई, तुड़ाई के दूसरे चरण की शुरुआत हो चुकी है। यह कथित गलियारा, जिन्हें खुद गंगा ने बुलाया था, उन बनारस के सांसद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की देखरेख में, स्वयं उनके द्वारा शुरू की गयी प्रिय परियोजना है, जिसका उद्देश्य तंग गलियों और भीड़-भाड़ वाले रास्तों से हटकर गंगा घाट से सीधे काशी विश्वनाथ मंदिर तक एक भव्य और सुगम रास्ता बनाना बताया जाता है। दावा किया जाता है कि इसके बनने — सही यह कहना होगा कि इसके नाम पर सैकड़ों मंदिर, घर, मकान, दूकान टूटने -- के बाद श्रद्धालु आसानी से गंगा नहाने के बाद मंदिर दर्शन कर सकेंगे। इसके साथ इलाके का सौंदर्यीकरण हो जाएगा, सो अलग।

मगर अहसान फरामोश बनारसी हैं कि मोदी जी की इस प्रिय परियोजना से खुश, प्रसन्न, आल्हादित होने की बजाय खबरों से विडियोज तक में रोते, बिसूरते, बिलखते, कलपते ही दिख रहे हैं। अपने घर, व्यवसाय और सैकड़ों बरस पुराने बताये जा रहे मंदिरों को जेसीबी से तोड़े जाने के शिकवों और शिकायतों की झड़ी लगाए हुए हैं।

बहरहाल सवाल इस कथित विकास और सौन्दर्यीकरण के नाम पर हो रहे ध्वंस और विनाश भर का नहीं है — बड़ा सवाल इस सबके जरिये किये जा रहे धर्म के गुणात्मक रूपांतरण का है। इसके आयाम अनेक हैं। काशी सिर्फ एक शहर भर नहीं है, यह दुनिया के उन 10 सबसे प्राचीन और अब तक आबाद शहरों में से है, जिनमें से कुछ की उम्र तो मानव सभ्यता के आरम्भकाल के आसपास की मानी जाती है। पुरातत्व विज्ञान के हिसाब से भी काशी, जिसे बनारस और इन दिनों वाराणसी के नाम से जाना जाता है, कोई 3 से 5 हजार वर्ष तक पुराना है। ऋग्वेद और कई उपनिषदों तक में इसका उल्लेख मिलता है।

ऐसी बसाहटें पुरानी नहीं, प्राचीन कही जाती हैं। इन्हें हेरिटेज -- विरासत और धरोहर -- माना जाता है। ऐसे हेरिटेज, जो संबंधित सभ्यता के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक विकास का फॉसिल — जीवाश्म — और आधुनिक जीवन के मेल का जीता-जागता इतिहास होते हैं। यह इतिहास, कला और जीवन शैली और सांस्कृतिक मूल्यों में ही नहीं दिखता, स्थापत्य और स्मारकों, बसाहटों और गलियों में भी दर्ज होता है। हेरिटेज में भौतिक और अभौतिक दोनों चीजें आती हैं। ये दोनों मिलकर पहचान को उसकी जड़ों से जोड़ती हैं।

काशी इसी तरह का हेरिटेज है। अपने हमउम्र दुनिया के दूसरे शहरों की तरह इसकी गलियों, चौराहों, भवनों, चौबारों पर कहीं ढाई हजार साल पहले रखे गए पाँव, तो कहीं इससे भी पहले गुनगुनाए गए राग और थाप के रूप में इतिहास दर्ज है। यह सिर्फ पुराने की चाहत वाले नोस्टाल्जिया का रूमानी अहसास भर नहीं है : यह सभ्यता की धरोहरों को सहेजने और संरक्षित रखे जाने के लिए अपरिहार्य जरूरी भाव भी है। यूं तो जिन्होंने भी काशी विश्वनाथ मन्दिर और गंगा के तट के बीच की कुछ सौ कदमों की दूरी नापी है वे जानते हैं कि यह कोई 'बहुत कठिन है डगर पनघट की' जैसी डगर नहीं है। बिना हांफे महज टहलते हुए आया-जाया जा सकता है। सिर्फ इसलिए कि वहां किसी नवधनाढ्य की लम्बी-चौड़ी गाड़ी को सीधे किनारे की धार तक पहुँचने में कोई अवरोध न आये, एक प्राचीन सभ्यता के प्रतीक मिट्टी में नहीं मिलाये जा सकते। दुनिया में कहीं ऐसा नहीं होता। अब्राहमी धर्मों के आदि पुरुष को जिस मोरिय्याह पर्वत पर इल्हाम हुआ था, उसे फ्लाईओवर का कच्चा माल बनाने के लिए गिट्टियो में नहीं बदला जा सकता। येरुशलम के पौन किलोमीटर के दायरे में फैले यहूदी, ईसाई और इस्लाम धर्मों से जुड़े उनके प्राचीनतम स्थानों को सिर्फ इसलिए कि उन तक पहुँच बहुत संकरी है या वहां काफी गर्मी पड़ती है, के बहाने ध्वस्त कर एयरकंडिशन्ड इमारतों में नहीं बदला जा सकता, मोहनजोदड़ो या हड़प्पा या सुमेरु के अवशेषों के टीले रोड रोलर चलाकर समतल करना उनका संरक्षण नहीं, विनाश ही कहा जाएगा। सिर्फ बर्बर ही हैं, जो इस तरह की पहचानों से डरते हैं, उनमें निहित समाहित इतिहास से भय खाते हैं और कभी कुदाली-फावड़ा, तो कभी बम-मिसाइल लेकर उन्हें ध्वस्त करने जा धमकते हैं।

ताजा इतिहास में अफगानिस्तान के बामियान में बुद्ध की प्रतिमाओं के साथ संकीर्ण सोच वाली कट्टरता ने ऐसा ही किया। उसी के आसपास 2003 में ईराक पर हमले के दौरान बर्बर अमरीकी फ़ौज ने दुनिया की सबसे प्राचीन किताबों और प्रतीकों के दो सबसे बड़े केन्द्रों, लाखों किताबों वाले सेंटर, राष्ट्रीय पुस्तकालय और अभिलेखागार और अल औकाफ लाइब्रेरी पर आग लगाने वाले बम बरसा कर यही किया था। बचा-खुचा काम इस्लामिक कट्टरवाद की सरगना आईएसआईएस ने मौसुल यूनिवर्सिटी की सेन्ट्रल लाइब्रेरी को फूंककर कर दिया। ठीक यही बात काशी पर भी लागू होती है।

विरासत को खंडहर बनाकर उसमें कॉरिडोर बनाने की यह परियोजना धर्म और संस्कृति के सबसे पुराने केंद्रों में से एक काशी को पर्यटन के धंधे और व्यावसायिकता के अड्डे में तब्दील कर देने की योजना है। उज्जैन के महाकाल परिसर में यह किया जा चुका है। हाल ही में अयोध्या में इसका डबल उदघाटन हो चुका है। बाकी प्राचीन धर्म स्थलों में भी ऐसा किया जाना है।

धर्म जब धंधे में बदल जाता है, तो और भले कुछ हो जाए, धर्म तो नहीं ही रहता। तुलसीदास इसे लोभ, काम, वासना में पगे धींग धरम ध्वज धंधक धोरी टाइप के ठगों और वंचक भगतों का गोरखधंधा बता चुके हैं। धर्म जब राजनीति के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो ऐसा सांघातिक जहर बन जाता है कि बाकी सब को समाप्त करने के साथ खुद को भी मिटा लेता है। कुम्भनदास की तरह 'जाकौ मुख देखे दुख लागे, ताको करिबे परी सलाम' की व्याधा से गुजरते हुए सत्ता की सीकरी तक 'आवत जात में सिर्फ पन्हैयाँ ही नहीं टूटती, बिसरि गयो हरि-नाम' की अवस्था को भी प्राप्त हो जाता है।

काशी इन दिनों — धर्म को धंधा और राजनीति की पालकी का कंधा — बनाने की अधार्मिक हरकतों का निशाना बनी हुई है। बात यहीं तक नहीं है — काशी में जो हो रहा है, महाकाल या अयोध्या में जो हुआ, आगे-आगे और जो होने वाला है उसका मक़सद दार्शनिक, लाक्षणिक और भौतिक रूप से धर्म को मजबूत करना नहीं, उसे नष्ट करते हुए एक नया धर्म स्थापित करना है। एक ऐसा धर्म स्थापित करना है, जो सिर्फ नाम भर से हिन्दू होगा। ध्यान रहे हिन्दू राष्ट्र के सिद्धांतकार और मौजूदा अर्थ में इस्तेमाल होने वाले हिंदुत्व शब्द के सूत्रकार सावरकर -- जो स्वयं को घोषित रूप से नास्तिक कहते थे -- यह बात कोई सौ साल से भी पहले कह गए थे कि "मैं जिस हिंदुत्व की बात कह रहा हूँ, उसका हिन्दू धर्म की परम्पराओं या मान्यताओ से कोई संबंध नहीं है_।" आर एस एस उस दिशा में उनसे भी आगे बढ़ा और हिंदुत्व की अपनी परिभाषा के अनुकूल हिन्दू धर्म को ढालने के काम में भिड़ा हुआ है।

हर संगठित धर्म की तरह प्रचलित हिन्दू धर्म ने भी अपना एक सांस्थानिक ढांचा स्थापित किया है। राजतंत्र के अमात्यो, महामात्यों की तर्ज पर इसमें भी पीठों, पीठाधीशों, गुरुओं, जगदगुरुओं, आचार्यों, शंकराचार्यों, संतों, महंतों का एक निर्धारित श्रेणीक्रम रहा है। ऋषि, महर्षि, ब्रह्मर्षि, मुनि, साधु, संतों की एक बाकायदा गुण-धर्म आधारित कैटेगरी रही हैं। यह श्रेणीबद्धता सम्राट अशोक के उस आदेश में भी दिखती है, जो उसने यज्ञों में गाय की बलि के लिए लगी रोक पर छूट देने की साधु-संतों की मांग पर संशोधित किया था और अलग-अलग श्रेणी के लिए अलग-अलग संख्या में बलि की संख्या निर्धारित की थी।

इस और इसी के एक रूप शंकराचार्य परम्परा और आरएसएस के बीच विवाद बहुत पुराना है। यह विवाद तब शुरू हुआ था, जब संघ जिन्हें गुरु जी कहता है, उन गोलवलकर ने हिंदुत्व की नई व्याख्या और नई परिभाषा पेश की। इस परिभाषा और इस व्याख्या पर आचार्य करपात्री महाराज की सहमति लेने की कोशिश की। करपात्री जी ने सहमत होने की बजाय एक किताब लिखकर गोलवलकर की स्थापनाओं का खंडन कर दिया। इस खंडन में उन्होंने आशंका जताई कि आरएसएस जिस तरह का आकार हिंदू धर्म को देना चाहता है, अगर वैसा सचमुच हो गया, तो हिंदू धर्म समाप्त हो जाएगा। उन्होंने समृद्ध, समर्थ और बौद्धिक हिंदुओं से अपील की कि वे समाज को जागरूक करें, ताकि आरएसएस हिंदू धर्म को समाप्त करने की परियोजना में कामयाब न हो। जब संघ को यह मालूम पड़ गया कि हिन्दू समाज में आरएसएस का विरोध तेज हो गया है, तो उन्होंने आरएसएस के व्यस्त नेताओं की एक बैठक बुलाई। उसमें एक रणनीति बनी, जिसमे शंकराचार्य प्रथा को समाप्त करने सहित हिन्दू धर्म के सांस्थानिक ढाँचे को ध्वस्त कर उसकी जगह एक नया ढांचा खड़ा करने की राह तय की गयी। चार स्थापित मठों के शंकराचार्यों के अलावा तभी तीन नए शंकराचार्य खड़े कर दिए गए, आजकल इनकी संख्या 84 तक पहुँच गयी है। विश्व हिन्दू परिषद् का गठन करके पहले से चली आ रही संस्थाओं को अलग-थलग किया गया।

राम मन्दिर के दोनों आयोजनों से शंकराचार्यों को बाहर रखकर जो सिलसिला आगे बढ़ा था, वह अब संगम में मौनी अमावस्या पर स्नान करने गए शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद के छत्र और क्षत्रप दोनों तोड़कर, उनके शिष्यों को ठोक-पीट कर हवालात में धकेल कर और आगे बढाया गया है। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक ये शंकराचार्य गंगा किनारे धरना दिए बैठे हैं। उधर प्रयागराज के मेला अधिकारी ने रात 12 बजे नोटिस जारी करके उनके शंकराचार्य होने पर ही सवाल उठा दिया है।

इस तरह की अतार्किकता का तार्किक अंत वही होना था, जो हो रहा है। हिन्दू धार्मिक परम्परा में उच्चतर और उच्चतम बताये जाने वाले बाबाओं के साथ गुंडई हो रही है। वहीं अपराधियों और गुंडों को बाबाई सौंपी जा रही है, खुल्लम खुल्ला सत्ता का संरक्षण और मान-प्रतिष्ठा देकर उन्हें स्थापित किया जा रहा है। राम रहीम, आसाराम जैसे हत्या और बलात्कार की सजाओं वाले घोषित अपराधी बाबे पैरोल पर घूम रहे हैं। रामदेव जो खुद कभी धन्ना सेठों के पे-रोल पर थे, वे आज सरकारों को अपनी पे-रोल्स पर रखे हुए है। हिन्दू-राष्ट्र के धतकरम के लिए जिस तरह के नए धरम की जरूरत है, उसके इस धर्म की स्थापित पूरी प्रणाली को ही ध्वस्त करने की परियोजना पर तेजी से अमल किया जाने लगा है। एकदम से नए ईश्वर, भगवान गढ़ना मुश्किल था, सो पुराने भगवानों के ही रूप-रंग बदलने से शुरुआत की गयी। कोमल भाव वाले 'मर्यादा पुरुषोत्तम' को भृकुटी और प्रत्यंचा ताने गुस्साए राम बना दिया, हनुमान को एक डरावनी शक्ल दे दी।

अब सीधे वह बुनियाद ही निशाने पर है, जो हिन्दू धर्म को बाकी धर्मों से अलग करती है। अब्राहमी धर्मो, जिन्हें सेमेटिक धर्म भी कहा जाता है, से भिन्न सनातनी परम्परा में जिन्हें ईश्वर या भगवान माना जाता है, वे अवतार लेते हैं। उनके अपने माता—पिता होते हैं। विष्णु के जो 10 प्रमुख अवतार और कुल 24 माने जाते हैं, उनमें से सिर्फ एक सबसे पहले वाले — मत्स्यावतार — को अयोनिज बताया जाता है। बाकी सब के माँ-बाप हैं, उनके नाम पते हैं। अब जो संघ-सम्मत नव सनातन गढ़ा जा रहा है, वह इन सब "पुरानी" धारणाओं से हर तरह से भिन्न और पूरी तरह से अलग है और अलग दिखना भी चाहता है।

"आरएसएस जिस तरह का आकार हिंदू धर्म को देना चाहता है, अगर वैसा सचमुच हो गया तो हिंदू धर्म समाप्त हो जाएगा", कहते हुए आचार्य करपात्री जी ने जो आशंका जताई थी वह सही साबित हो रही है।

यह नव सनातन विविधताओं, अनेकानेक भगवानों, एक दूसरे से भी असहमत ईश्वरों, अवतारों, अनगिनत धर्मग्रंथों वाले व्यापक धर्म को ही एक किताब — एक पैगम्बर में विश्वास करने वाले धर्म में बदलना चाहता है। मगर इसी के साथ भले यह नॉन—बायोलॉजिकल हो : यह निराकार, निर्विकार, निर्गुण नहीं है। साकार है और हर तरह के दुर्गुणों से लिथड़ा और सना हुआ है। कण-कण में हो न हो, कोने-कोने में तो व्याप्त है ही। उज्जैन के महाकाल में महाकाल सिर्फ गर्भगृह में हैं, शेष सभी जगह इन्हीं की खड़ी, उठी, बैठी तस्वीरें हैं। अयोध्या में भी जित देखो तित यही हैं। बनारस में भी यत्र-तत्र-सर्वत्र, कोरिडोर के भीतर-बाहर अलग-अलग मुद्राओं में इन्ही के होर्डिंग्स हैं। यही हैं, जो अभी हाल में सोमनाथ से शिव भेष में डमरू बजाते निकले थे; यही होंगे, जो कल काशी कॉरिडोर बनने के बाद विश्वनाथ बनकर निकलेंगे।

दरबारी पूँजीवाद के लिए सारे गलियारों को शाहराहों में बदलने के साथ अब हिंदुत्व का भस्मासुर हिन्दू धर्म के ही सर पर हाथ रखके उसे भस्मीभूत करने की मुद्रा में घूम रहा है। धर्मावलम्बियों की आस्था और विश्वास को बहलाते हुए हिन्दू धर्म के भग्नावशेषों पर उस हिन्दू राष्ट्र के लिए पतली गली के गलियारे खड़े कर रहा है जिसका इस धर्म की परम्पराओं या मान्यताओं के साथ कोई संबंध नहीं है। जिन्हें भस्मासुर द्वारा की जा रही भस्मारती की भभूत की चाह है, वे मंजीरे बनाना जारी रख सकते हैं — जिन्हें ख़तरा समझ में आ रहा है, उन्हें धर्म को धंधा और जिसे वे ईश्वर और भगवान मानते हैं, उसे राजनीति के दगरे में घसीट कर पोलिंग एजेंट और ईवीएम का बटन बनाने की तेजी से अमल में लायी जा रही साजिशों के खिलाफ आवाज उठानी ही होगीe। जिस तरह जेसीबी अपना पराया नहीं चीन्हती, जिस तरह बुलडोजर के आँखें नहीं होती, उसी तरह धर्म के नाम पर ठगी करने वाले, भले वे किसी भी रंग की धर्म ध्वजा क्यों न उठायें, अपने वालों और दूसरे वालों में फर्क नहीं करते। इतिहास में लौट-फिर कर वे अपने ही धर्म की कपाल-क्रिया करने आये हैं।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।)

चूल्हे से चाँद तक: महिलाओं की पहचान की बदलती कहानी

-कृति आरके जैन

चूल्हे से चाँद तक: महिलाओं की पहचान की बदलती कहानी !
दीवारों के भीतर सुलगते सपने, बाहर बदलती दुनिया

भारतीय समाज में महिला को अक्सर त्याग और सहनशीलता की प्रतिमा बना दिया गया है। उसकी सफलता इस कसौटी पर परखी जाती है कि उसने परिवार के लिए कितना त्याग किया, न कि उसने अपने लिए क्या हासिल किया। बचपन से उसे सिखाया जाता है कि सपने देखना ठीक है, पर उन्हें सीमाओं में रखना ज़रूरी है। धीरे-धीरे वह भी मान लेती है कि उसकी ज़िंदगी की प्राथमिकता हमेशा दूसरे होंगे। फिर भी, उसके मन के किसी कोने में उसकी इच्छाएँ जीवित रहती हैं—शांत, धैर्यवान और अपने सही समय की प्रतीक्षा करती हुई।

रसोई की दीवारें केवल ईंट-सीमेंट की बनी हुई संरचना नहीं होतीं, वे उस सामाजिक सोच की मूक प्रतीक हैं जिसने सदियों से महिलाओं की दुनिया को सीमाओं में बाँध दिया। इन दीवारों के भीतर सिर्फ़ भोजन नहीं पकता, बल्कि अनगिनत सपने भी धीमी आँच पर सुलगते रहते हैं। यहाँ हर दिन समझौते होते हैं—खुद से, अपनी इच्छाओं से, अपनी पहचान से। बाहर की दुनिया तेज़ी से बदल रही है, पर इन दीवारों के भीतर आज भी वही पुरानी अपेक्षाएँ गूँजती हैं। फिर भी, इन्हीं सीमाओं के बीच एक दृढ़ आवाज़ जन्म लेती है—मैं इससे अधिक हूँ, और इससे आगे जा सकती हूँ।

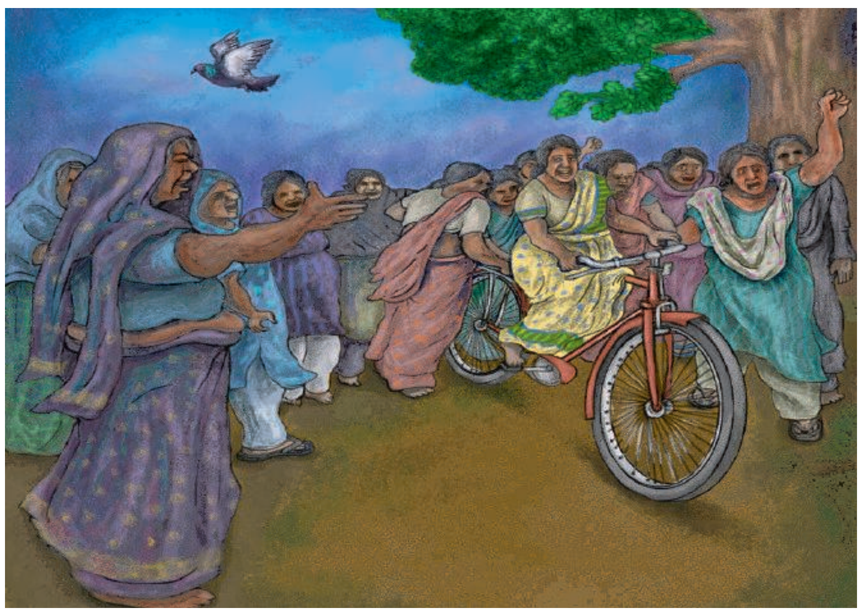

भारतीय समाज में महिला को अक्सर त्याग और सहनशीलता की प्रतिमा बना दिया गया है। उसकी सफलता इस कसौटी पर परखी जाती है कि उसने परिवार के लिए कितना त्याग किया, न कि उसने अपने लिए क्या हासिल किया। बचपन से उसे सिखाया जाता है कि सपने देखना ठीक है, पर उन्हें सीमाओं में रखना ज़रूरी है। धीरे-धीरे वह भी मान लेती है कि उसकी ज़िंदगी की प्राथमिकता हमेशा दूसरे होंगे। फिर भी, उसके मन के किसी कोने में उसकी इच्छाएँ जीवित रहती हैं—शांत, धैर्यवान और अपने सही समय की प्रतीक्षा करती हुई।

आज की महिला एक साथ कई भूमिकाएँ निभा रही है। वह माँ है, पत्नी है, बहू है, लेकिन इन सबसे पहले वह एक संपूर्ण इंसान है—जिसके अपने सपने और आकांक्षाएँ हैं। दिन भर वह घर की ज़िम्मेदारियों में उलझी रहती है, पर रात के सन्नाटे में उसका मन जाग उठता है। तब वह किताब खोलती है, ऑनलाइन कक्षाओं में समय लगाती है, या अपने भविष्य की नई तस्वीर गढ़ती है। समाज भले ही उसकी इस कोशिश को अनदेखा करे, लेकिन उसके भीतर आत्मनिर्भर बनने की आग हर दिन और प्रखर होती जाती है।

कई बार महिलाओं के सपने उसी रसोई से आकार लेते हैं, जहाँ कभी उन्हें सीमित कर दिया गया था। वर्षों तक स्वाद और मेहनत से खाना बनाने वाली महिला एक दिन समझ पाती है कि यही उसका हुनर है। वह अपने काम को घर की चारदीवारी से बाहर लाने का साहस जुटाती है। शुरुआत में ताने मिलते हैं, शक किया जाता है, लेकिन वह पीछे नहीं हटती। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और उसका हुनर उसकी पहचान बन जाता है। यह बदलाव सिर्फ़ कमाई तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की नींव रख देता है।

हालाँकि यह सफ़र आसान नहीं होता। समय की कमी, शारीरिक थकान, परिवार की अपेक्षाएँ और समाज की आलोचना—हर मोड़ पर नई बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं। कई बार महिलाओं को यह महसूस कराया जाता है कि उनका आगे बढ़ना घर के संतुलन को बिगाड़ देगा। अपराधबोध चुपचाप उनके मन में जगह बना लेता है। फिर भी कुछ महिलाएँ इन दबावों के बावजूद आगे बढ़ती हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि उनका सपना किसी का नुकसान नहीं करता, बल्कि दूसरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

संघर्ष की इस राह पर महिलाएँ कई बार गिरती हैं, लेकिन हर बार थोड़ा और सशक्त होकर उठती हैं। वे समझ जाती हैं कि सफलता का अर्थ पूर्णता नहीं, बल्कि निरंतर प्रयास और धैर्य है। उनके चेहरे पर थकान साफ़ दिखती है, पर आँखों में संतोष की रोशनी होती है। वे जानती हैं कि यह लड़ाई सिर्फ़ उनकी नहीं है—वे उन अनगिनत महिलाओं के लिए रास्ता बना रही हैं, जो अभी खामोश हैं, लेकिन सपने देखना नहीं छोड़ा है।

आज भारत में ऐसी हज़ारों कहानियाँ हैं जो रसोई की दीवारों को पीछे छोड़ चुकी हैं। महिलाएँ प्रशासन, विज्ञान, शिक्षा, कला और व्यापार के हर क्षेत्र में अपनी सशक्त पहचान गढ़ रही हैं। उन्होंने यह साबित किया है कि महत्वाकांक्षा किसी जगह या भूमिका की मोहताज नहीं होती। जब अवसर और भरोसा मिलता है, तो महिलाएँ असंभव को भी संभव कर दिखाती हैं। उनकी सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज की जड़ सोच में आए बदलाव का स्पष्ट संकेत है।

रसोई की दीवारें अब सिर्फ़ बंधन का प्रतीक नहीं रहीं। वे उस बदलाव की साक्षी बन रही हैं, जहाँ महिलाएँ डर और संकोच को पीछे छोड़कर आगे बढ़ रही हैं। उनके दबे हुए सपने अब खामोश नहीं, वे आवाज़ बन चुके हैं। यह आवाज़ धीरे-धीरे पूरे समाज में गूँज रही है—बराबरी, सम्मान और स्वतंत्रता की। क्योंकि जब एक महिला अपने सपनों को जीने का साहस करती है, तो वह केवल अपना भविष्य नहीं बदलती, बल्कि आने वाली पूरी पीढ़ी की दिशा तय करती है। यही असली क्रांति है—बिना शोर, बिना नारे, रसोई की दीवारों से बाहर निकलकर दुनिया को जीत लेने की क्रांति।

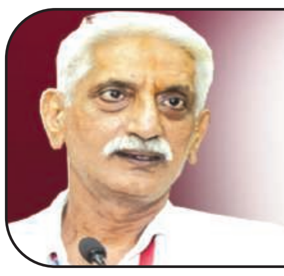

संपादकीय

चिंतन-मनन

इतिहास के पन्नों से- भारत में गणतंत्र की ढाई हजार वर्ष पुरानी परंपरा

संदीप सृजन

आधुनिक भारत ने 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र व्यवस्था को स्वीकार कर अपने नीति नियम का लिखित कानून संविधान के रूप में लागू किया लेकिन भारत को दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक माना जाता है, और इसका राजनीतिक इतिहास भी उतना ही समृद्धता और विविधता लिए हुए है। भारत में गणतंत्र की अवधारणा ढाई हजार वर्ष से अधिक पुरानी है। यह दावा केवल एक कथन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक साक्ष्यों पर आधारित है, जो प्राचीन वैदिक काल से लेकर महाजनपद युग तक फैला हुआ है। गणतंत्र, या रिपब्लिक, का अर्थ है ऐसी शासन व्यवस्था जहां सत्ता जनता के प्रतिनिधियों या सामूहिक निर्णय पर आधारित होती है, न कि किसी एक राजा या वंशानुगत शासक पर। भले ही आधुनिक भारत 1950 में गणतंत्रीय बना, लेकिन इसकी जड़ें प्राचीन भारत के गणसंघों में गहरी पैठी हुई हैं।

भारत में गणतंत्र का इतिहास लगभग 600 ईसा पूर्व से शुरू होता है, जब उत्तरी भारत में कई गणराज्य फल-फूल रहे थे। इनमें शाक्य, लिच्छिवी, मल्ल और वज्जी जैसे गणराज्य शामिल थे, जहां निर्णय सामूहिक सभाओं में लिए जाते थे। यह परंपरा वैदिक काल की सभा और समिति से प्रेरित थी, और बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। भारत का इतिहास वैदिक काल से शुरू होता है, इस काल में समाज में मुख्य रूप से शासन व्यवस्था में सभा और समिति जैसी संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। ऋग्वेद, सबसे प्राचीन वैदिक ग्रंथ, में सभा का उल्लेख है जहां जनता के प्रतिनिधि मिलकर निर्णय लेते थे। सभा एक प्रकार की लोक सभा थी, जहां योद्धा, पुरोहित और आम लोग शामिल होते थे, जबकि समिति अधिक औपचारिक थी और राजा को सलाह देती थी। यह व्यवस्था पूर्ण रूप से गणतांत्रिक नहीं थी, क्योंकि राजा अभी भी प्रमुख होता था, लेकिन वह निरंकुश नहीं था। राजा का चयन कभी-कभी चुनाव से होता था, और सभा उसके निर्णयों को प्रभावित कर सकती थी। इतिहासकार रोमिला थापर के अनुसार, वैदिक काल में ये संस्थाएं प्रारंभिक लोकतांत्रिक तत्वों का संकेत देती हैं। इस काल में गण और संघ की अवधारणा विकसित हुई, जो बाद में पूर्ण गणराज्यों का आधार बनी। उदाहरण के लिए, कुरु और पांचाल जैसे जनपदों में राजा के साथ-साथ सामूहिक शासन के प्रमाण मिलते हैं।

वैदिक काल के अंत तक, लगभग 600 ईसा पूर्व, उत्तरी भारत में 16 महाजनपद उभरे, जिनमें से कई गणतंत्र थे। जो बताते है कि गणतंत्र की परंपरा ढाई हजार वर्ष पुरानी है। महाजनपद काल (600-300 ईसा पूर्व) भारत में गणतंत्र के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है। इस युग में गंगा घाटी और उत्तर-पश्चिमी भारत में 16 बड़े राज्य थे, जिन्हें महाजनपद कहा जाता था। इनमें से कुछ राजतंत्र थे, जैसे मगध और कोसल, लेकिन कई गणराज्य थे, जहां शासन कुलीनों या जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता था। इन गणराज्यों को गणसंघ या गणराज्य कहा जाता था, और इनमें निर्णय सभा में बहुमत से लिए जाते थे। जैसे शाक्य गणराज्य, जहां गौतम बुद्ध का जन्म हुआ, एक प्रमुख गणराज्य था। यहां शासन सभा द्वारा होता था, जिसमें कुलीन परिवारों के प्रतिनिधि शामिल होते थे। इसी प्रकार, लिच्छिवी गणराज्य (वज्जी संघ का हिस्सा) में राजकुमारों की सभा थी, जो निर्णय लेती थी। बौद्ध ग्रंथों जैसे 'महापरिनिब्बान सुत्त' में इन सभाओं का वर्णन है, जहां चर्चा, बहस और मतदान के माध्यम से नीतियां बनाई जाती थीं। जैन ग्रंथों में भी मल्ल और कोलिया जैसे गणराज्यों का उल्लेख है। ये गणराज्य मुख्य रूप से पहाड़ी या सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित थे, जहां केंद्रीकृत राजतंत्र स्थापित करना कठिन था। इतिहासकारों के अनुसार, ये गणराज्य लोकतांत्रिक थे, क्योंकि वे कुलीनों के संघ पर आधारित थे न कि वंशानुगत राजा पर। हालांकि, ये पूर्ण लोकतांत्रिक नहीं थे, क्योंकि मताधिकार सीमित था, मुख्य रूप से योद्धा वर्ग या कुलीनों तक। फिर भी, ये प्राचीन विश्व में भूमध्यसागरीय गणराज्यों के समानांतर थे।

मौर्य साम्राज्य (321-185 ईसा पूर्व) भारत का पहला बड़ा साम्राज्य था, जिसकी स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की। यह राजतंत्र था, लेकिन गणतंत्र की परंपरा का प्रभाव स्पष्ट था। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में गणसंघों का उल्लेख है, और यह सलाह दी गई है कि राजा को इनसे सतर्क रहना चाहिए। अशोक के शिलालेखों में भी प्रजा की भागीदारी का महत्व बताया गया है। मौर्य काल के बाद, शुंग और कुषाण जैसे साम्राज्यों में गणतंत्र की छाप दिखती है। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ लेख में गणराज्यों का उल्लेख है, गुप्त काल को भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है, जहां विकेंद्रीकृत शासन था, और स्थानीय सभाएं निर्णय लेती थीं। मध्यकाल में भारत में कई क्षेत्रीय राज्य उभरे, जैसे चोल, पल्लव और चालुक्य। दक्षिण भारत में उथिरमेरुर जैसे गांवों में स्थानीय सभाएं थीं, जहां चुनाव से प्रतिनिधि चुने जाते थे। यह प्राचीन गणतंत्र की निरंतरता दर्शाता है। मुस्लिम आक्रमणों के बाद, दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य में केंद्रीकृत शासन था, लेकिन ग्रामीण स्तर पर पंचायतें गणतांत्रिक थीं।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणतंत्र है भारत

डा. विनोद बब्बर

गणतंत्र दिवस 'गण' और 'तंत्र' के सबंधों की पड़ताल करने का अवसर है। इस बात पर गर्व करने का अवसर भी कि विश्व को गणतंत्र की अवधारणा हमने दी। हजारों वर्ष पहले भी भारतवर्ष में अनेक गणराज्य थे, जहाँ शासन व्यवस्था अत्यंत सुदृढ़ थी और जनता सुखी थी। गण शब्द का अर्थ संख्या या समूह से है। गणराज्य या गणतंत्र का शाब्दिक अर्थ संख्या अर्थात बहुसंख्यक का शासन है। इस शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में चालीस बार, अथर्व वेद में नौ बार और ब्राह्मण ग्रंथों में अनेक बार किया गया है। वहाँ यह प्रयोग जनतंत्र तथा गणराज्य के आधुनिक अर्थों में ही किया गया है।

वैदिक साहित्य में, विभिन्न स्थानों पर किए गए उल्लेखों से यह जानकारी मिलती है कि उस काल में अधिकांश स्थानों पर हमारे यहाँ गणतंत्रीय व्यवस्था ही थी। कालांतर में, उनमें कुछ दोष उत्पन्न हुए और राजनीतिक व्यवस्था का झुकाव राजतंत्र की तरफ होने लगा। ऋग्वेद के एक सूक्त में प्रार्थना की गई है कि समिति की मंत्रणा एकमुख हो, सदस्यों के मत परंपरानुकूल हों और निर्णय भी सर्वसम्मत हों। कुछ स्थानों पर मूलतः राजतंत्र था, जो बाद में गणतंत्र में परिवर्तित हुआ। महाभारत के सभा पर्व में अर्जुन द्वारा अनेक गणराज्यों को जीतकर उन्हें कर देने वाले राज्य बनाने की बात आई है। महाभारत में गणराज्यों की व्यवस्था की भी विशद विवेचना है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी लिच्छवी, बृजक, मल्लक, मदक और कम्बोज आदि जैसे गणराज्यों का उल्लेख मिलता है। उनसे भी पहले पाणिनी ने कुछ गणराज्यों का वर्णन अपने व्याकरण में किया है। आगे चलकर यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने भी क्षुदक, मालव और शिवि आदि गणराज्यों का वर्णन किया।

लंबी गुलामी के बाद आजादी के नाम थोपे गए देश विभाजन, विश्व के सबसे बड़े रक्तपात की पीड़ा और उत्पाती पड़ोसी प्राप्त होने के बाद 26 जनवरी 1950 को लोकतांत्रिक गणतंत्र बने भारत ने पिछले 76 वर्षों में अनेक झंझावतों को झेला है। सांस्कृतिक वैचारिक हमलों से खाद्यान्न के अभाव का दौर भी देखा। आयातित घटिया लाल गेहूं के दिनों को पीछे छोड़ते हुए हमने न केवल आत्मनिर्भरता हासिल की बल्कि निर्यात भी किया और खुले में पड़ी अनाज की हजारों बोरियों को बर्बाद होते भी चुपचाप देखा। आज स्थिति यह है कि हमारे पास अनाज रखने की पर्याप्त जगह नहीं है। शायद इसीलिए देश के 80 करोड लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है। हमारे वैज्ञानिकों ने चांद पर भारतीय कदमों के निशान अंकित करने सहित अनेक चमत्कार कर दिखाये तो आज हमारी सूचना प्रौद्योगिकी का लोहा सारी दुनिया मानती है। बैलगाड़ी युग से रेलगाड़ी के बाद तीव्रगामी वाहनों और विश्वस्तरीय सड़के भारत की पहचान बन चुकी हैं। भारत की युवा शक्ति तकनीक प्रौद्योगिकी से कला शाहिद हर क्षेत्र में विश्व को अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा से अचंभित कर रही है। यह कोई आश्चर्य नहीं कि आज पश्चिमी जगत अपनी युवा पीढ़ी को भारत की प्रतिभा का डर दिखाकर मेहनती बनाने की प्रेरणा दे रहा है तो यह केवल और केवल इस देश के 'गण' की शक्ति प्रतिभा और समर्पण का अभिषेक है। जय जवान, जय किसान से जय विज्ञान इस देश के तंत्र की नहीं बल्कि 'गण' की शोभायात्रा है, जिसे सम्पर्ण विश्व दृग-नेत्रों से देख रहा है। अभिनन्दन है माँ भारती के उन सुयोग्य पुत्रों की जिन्होंने अपनी जननी और जन्मभूमि का गौरव बढ़ाया।

... लेकिन दूषित राजनीति, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार जैसे कारणों से तंत्र की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। कार्यपालिका से न्यायपालिका तक कर्तव्य परायणता पर भाई-भतीजावाद, अकर्मण्यता, टालु प्रवृत्तियां आज भी जन मानस कोभयभीत कर रही हैं। देश में कानूनों की कमी नहीं हैं, नित नये भी बनते हैं परन्तु बाल्यकाल से शिक्षा में नैतिक मूल्यों और राष्ट्र के प्रति समर्पण के भाव आरोपित न किए जाने के कारण देश प्रथम की भावना का अभाव है। 'नापाक' पड़ोसी अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा हैं। अवैध हथियारों संग आतंकवादी, नक्सलवादी. और न जाने कौन-कौन देश के हर कोने तक अपनी पैठ बनाये हुए थे तो केवल इसीलिए कि 'तंत्र' की आँखें पूरी तरह से खुली हुई नहीं थी। यह पूछना बेमानी है कि आँखें जानबूझकर नहीं खोली जा रही थी या स्वार्थ की पट्टी ने उन्हें ढका था।

हाँ, एक 'तंत्र' पूरी निष्ठा से कार्यरत था जो देश को 'भारत' और 'इण्डिया' में विभाजित करना चाहता है। देश में दोहरी शिक्षा प्रणाली अब भीहै तो दोहरी स्वास्थ्य व्यवस्था भी। सुरक्षा के अलग-अलग मापदंड हैं तो बिजली, पानी, सड़क जैसी आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता भी एक जैसी नहीं है। पिछडे क्षेत्रों का अंधेरा और अमीरों की बस्ती की जगमगाहट कहीं भी देखी जा सकती है। दुर्भाग्य से ये दोहरे मापदंड सीमित नहीं रहे। सांपनाथ, नागनाथ से भुजंगनाथ तक 'तंत्र' ने छद्म जनप्रतिनिधियों की आढ़ में 'गण' का शोषण किया है। दुर्भाग्य की बात है कि राजनैतिक शुचिता की बातें तो सभी ने की लेकिन निष्पक्षता के अभाव की कालिख ने उनके दामन को भी दागदार हैं।

कहने को जनता-जनार्दन है लेकिन राजा कौन है, सभी जानते हैं। 'राजा' से अभिप्राय प्रशासन की मुट्ठी में करने वाले, खास परिवार में जन्म लेकर सिंहासन पर अपना अधिकार संमझने वाले युवराज ही नहीं, माफिया और अफससरशाहों की फौज रही हैं जो यत्र-तत्र- सर्वत्र छाए हुए थे। जनता 'जनार्दन' नहीं, 'बेचारी' दिन-काटती रही क्योंकि उसके लिए बने अस्पतालों में इलाज के नाम पर लम्बी लाइनें है पर गंभीर रोगी के लिए पर्याप्त बिस्तर भी नहीं है इसलिए निजी अस्पताल मनमानी लूट मचाए हुए हैं। रेल के सामान्य डिब्बे में पैर रखने की जगह नहीं, परंतु संख्या नित्य प्रति बढ़ रही है महंगी गाड़ियां की। विकास का केंद्रीकरण होने के कारण पलायन अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न कर रहा है। दूर दराज क्षेत्रों की बात छोड़िए स्वयं राजधानी दिल्ली भी पिछले कुछ दशकों से यातायात की सार्वजनिक सुविधाओं पर पर्याप्त ध्यान न दिए जाने के कारण सड़कें जाम रहती हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि तंत्र की गण की भाषा से दूरी न केवल बनी हुई है बल्कि लगातार बढ़ रही है। वर्तमान सरकार ने नई शिक्षा नीति के माध्यम से अनेक विसंगतियां को विशेष रूप से भारतीय भाषाओं पर हावी होती अंग्रेजी पर नकेल कसने के प्रावधान किए हैं। विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं तक मातृभाषा में शिक्षा दिया जाने का नियम सराहनीय है लेकिन नई नीति लागू होने के बावजूद पूरे देश के निजी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना हुआ है परंतु एक भी स्कूल पर नियम के उल्लंघन का मामला दर्ज करने की सूचना नहीं है।

स्कूलों की दशा देश के पिछड़े और दूर-दराज के क्षेत्रों में कैसी होगी, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि राजधानी के सरकारी स्कूलों की अधिकांश कक्षाओं में भी औसत से दुगने, तिगुने छात्र देखे जा सकते हैं। स्कूलों में कमरे हैं, बेंच है, 'मिड डे मील' हैं लेकिन कभी जनगणना तो कभी लोकतंत्र के उत्सव चुनाव को संपन्न कराने में जैसे अनेकानेक कार्य करने वाले शिक्षकों की अन्यत्र व्यस्तता के कारण पढ़ाई का स्तर कैसा होना चाहिए इस पर चर्चा करें भी तो क्या? सरकारी स्कूलों के दस पास अधिकांश छात्र अंग्रेजी तो दूर, ठीक से हिंदी भी पढ़ अथवा लिख पाने में असमर्थ हैं।

भ्रष्टाचार और कालेधन पर बढ़-चढ़कर बातें करने वाले कारण और निदान जानते हुए भी मौन है परंतु जनसाधारण जानता है कि यह 'तंत्र' की निष्क्रियता अथवा मिली भगत के बिना संभव नहीं। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में 'गण' 'तंत्र' से आँखे मिलाते हुए डरता है इसीलिए उसे अकारण अपराधबोध की बोझ तले दबाना पड़ता है। दूसरी ओर स्वयं को देश का स्वाभाविक शासक मानने वाले जब अपने राजनीतिक विरोधियों से जीत नहीं पाते तो वे संविधान की प्रति हाथ में लिए अपनी लड़ाई को सत्तारूढ़ दल से नहीं बल्कि इंडियन स्टेट अर्थात भारत राष्ट्र के विरुद्ध घोषित कर लोकतंत्र के महत्वपूर्ण पक्ष विपक्ष के दायित्वहीनता का परिचय देते हैं। आश्चर्य है कि न्यायपालिका से व्यवस्थापिका तक तंत्र जन सामान्य पर कानून का चाबुक फटकारता है। उन्हीं पर नियम कानूनों की गन हर समय ताने रहता है।

जिस गणतंत्र दिवस अर्थात अपने संविधान लागू होने को हम मानते है , उसकी लाज 'तंत्र' ने कितनी रखी है इसका मूल्यांकन अवश्य होना चाहिए। संविधान में राष्ट्र भाषा घोषित हिन्दी की दशा पर आँसू बहाने वाले घट रहे है। संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांतों में शामिल समान नागरिक संहिता की दशकों से लंबित मांग के बावजूद कुछ भी न करना निराश करता है। बहुसंख्यकों और उनकी परंपराओं को कोसने को धर्मनिरपेक्षता का पर्याय बनाने वाले वोट बैंक की राजनीति के लिए सामाजिक सौहार्द को प्रभावित कर रहे हैं।

गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर इस बात पर आवश्यक चर्चा होनी चाहिए कि राजनीति का आकर्षण दिनों- दिन क्यों बढ़ रहा है? नेताओं का साम्राज्य दिन दुगनी-रात चौगुनी तरक्की क्यों कर रहा है? क्या तरह-तरह के अनैतिक प्रलोभन देकर सत्ता हथियाने की होड़ तथा कर्मकांड बनते महंगे चुनाव क्या गणतंत्र की गरिमा के अनुरूप हैं? देश की सभी समस्याओं, सभी चुनौतियों की चिंता 'तंत्र' की बजाय 'गण' को ही क्यों करनी चाहिए? दागियों को उम्मीदवार बना उन्हें संसद और विधानसभाओं में पहुंचाना लोकतांत्रिक गणतंत्र की गरिमा कोकिस प्रकार से बढ़ाता है? सामान्यजन छोटे से अपराध के लिए वर्षों जेल में सड़ता हैं परंतु बड़े से बड़े अपराध करने पर भी भ्रष्ट और निरंकुश नेताओं को शीघ्र जमानत क्यों मिलती है? यह कैसा गणतंत्र है जो राजनैतिक अपराधियों के प्रति उदार रहता है? क्या इसलिए कि रहबर और राहजन मौसरे भाई-भाई हैं? लोकतंत्र और गणतंत्र की गरिमा संवाद से है लेकिन देश की सबसे बड़ी पंचायत को संवाद की बजाय हंगामा का मंच बनानाआखिरकिस प्रकार की जिम्मेदारी है? यदि गणतंत्र का यह उपहास मन मस्तिष्क को पीड़ा देता है तो हमें सोशल मीडिया सहित हर स्तर पर अपनी आवाज उठानी चाहिए तो दूसरी ओर चुनाव के दिन घर बैठे रहने की अपनी अपराधिक भूल सुधारनी होगी। बटन दबाकर या मोहर लगा गण और तंत्र के बीच विस्तारित विषधरों को नख शीख विहीन किए बिना हम कैसे कह सकते हैं कि हम हैं विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र! सच्चा गणतंत्र!!

ऐसे अनेक विचार बिंदुओं के साथ-साथ यह हमारे गणतंत्र के लिए गौरव की बात है कि देश के सर्वोच्च पद पर विराजित महामहिम राष्ट्रपति जी समाज के उसे उपेक्षित वर्ग से है जिसे आदिवासी कहा जाता था। तंत्र के केंद्र बिंदु अर्थात प्रधानमंत्री का समाज के पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधि होना उन लोगों को स्वीकार करना पड़ रहा है जो स्वयं को इस देश का स्वाभाविक शासक मानते रहे हैं। अतः गणतंत्र दिवस केवल शुभकामनाओं के आदान-प्रदान का अवसर नहीं, अपितु स्वयं को प्राण-प्रण से आत्मनिर्भर और गौरवशाली राष्ट्र के लिए समर्पित होने का अवसर है।

परीक्षा से आगे सोचना होगा: शिक्षा का असली मकसद

डॉ विजय गर्ग

आज के दौर में 'शिक्षा' और 'परीक्षा' एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। जैसे ही बच्चा स्कूल में कदम रखता है, उसके सीखने की यात्रा अंकों और ग्रेड्स की दौड़ में बदल जाती है। लेकिन क्या जीवन की सफलता केवल उत्तर पुस्तिकाओं में लिखे गए शब्दों तक सीमित है? समय आ गया है कि हम परीक्षा से आगे सोचना शुरू करें।

1. अंकों के जाल से बाहर निकलना

अक्सर यह माना जाता है कि जिसके पास 95% अंक हैं, वह सबसे बुद्धिमान है। लेकिन वास्तविकता यह है कि परीक्षा केवल आपकी याददाश्त का परीक्षण करती है, आपकी योग्यता का नहीं।

अंकः केवल एक विशेष दिन के प्रदर्शन को दर्शाते हैं।

कौशल : यह निर्धारित करते हैं कि आप वास्तविक जीवन की समस्याओं को कैसे सुलझाते हैं।

2. रटने की संस्कृति बनाम गहरी समझ

हमारी वर्तमान व्यवस्था 'रट्टा मार' पद्धति पर टिकी है। छात्र साल भर केवल इसलिए पढ़ते हैं ताकि वे परीक्षा के तीन घंटों में सब कुछ उगल सकें।

परीक्षा से आगेः हमें 'क्या' के बजाय 'क्यों' और 'कैसे' पर ध्यान केंद्रित करना होगा। जब तक छात्र विषय की गहराई को नहीं समझेंगे, वह ज्ञान उनके जीवन में काम नहीं आएगा।

3. भविष्य के कौशल

आने वाला समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और तकनीकी बदलावों का है। यहाँ केवल डिग्री काम नहीं आएगी। छात्रों को निम्नलिखित कौशलों को विकसित करने की जरूरत हैः

तार्किक सोच : सही और गलत के बीच फर्क करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता : तनाव और रिश्तों को प्रबंधित करना।

अनुकूलन क्षमता : बदलती परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना।

4. असफलता का डर और मानसिक स्वास्थ्य

परीक्षा के अत्यधिक दबाव के कारण युवाओं में तनाव और अवसाद बढ़ रहा है। हमें यह समझना होगा कि एक परीक्षा पत्र का टुकड़ा किसी का भविष्य तय नहीं कर सकता। महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे उदाहरण हमारे सामने हैं, जिन्होंने स्कूल की परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया, लेकिन दुनिया बदल दी।

परीक्षा ज्ञान को परखने का एक तरीका हो सकती है, लेकिन यह ज्ञान का सम्पूर्ण मूल्यांकन नहीं है। रटकर उत्तर लिख देने वाला छात्र अच्छे अंक ला सकता है, पर क्या वह जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान कर पाएगा? आज का समाज ऐसे युवाओं की मांग करता है जो सोच सकें, सवाल कर सकें, नए रास्ते खोज सकें और बदलाव के साथ खुद को ढाल सकें।

परीक्षा-केंद्रित सोच का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि इससे सीखने की जिज्ञासा खत्म होने लगती है। छात्र यह नहीं पूछता कि "यह क्यों है?", बल्कि यह सोचता है कि "परीक्षा में आएगा या नहीं?" नतीजा यह होता है कि विषय बोझ बन जाता है और सीखना दबाव।

हमें यह समझना होगा कि शिक्षा का असली मकसद व्यक्तित्व निर्माण है—सिर्फ नौकरी पाना नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनना। जीवन में सफल वही होता है जिसमें संवाद कौशल हो, नैतिक मूल्य हों, भावनात्मक समझ हो और असफलताओं से उबरने की ताकत हो। ये गुण किसी प्रश्नपत्र में नहीं मापे जा सकते।

इस बदलाव में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका बेहद अहम है। बच्चों की तुलना अंकों से नहीं, उनकी रुचि, मेहनत और प्रगति से की जानी चाहिए। उन्हें यह भरोसा दिया जाना चाहिए कि परीक्षा असफल होना जीवन में असफल होना नहीं है। खेल, कला, लेखन, नवाचार और सामाजिक कार्यों को भी उतनी ही अहमियत मिलनी चाहिए जितनी गणित या विज्ञान को।

नई शिक्षा नीति इसी दिशा में एक संकेत देती है, जहाँ कौशल, अनुभवात्मक सीख और बहुविषयक शिक्षा पर ज़ोर है। लेकिन नीतियों से ज़्यादा ज़रूरी है हमारी सोच का बदलना।

अंततः परीक्षा एक पड़ाव है, मंज़िल नहीं। अगर हम बच्चों को सिर्फ परीक्षा के लिए तैयार करेंगे, तो वे सवालों से डरेंगे। लेकिन अगर हम उन्हें जीवन के लिए तैयार करेंगे, तो वे हर चुनौती को अवसर में बदल देंगे। इसलिए ज़रूरत है—परीक्षा से आगे सोचने की।

शिक्षा का अंतिम उद्देश्य एक अच्छी नौकरी पाना मात्र नहीं, बल्कि एक सजग और विचारशील इंसान बनना है। जब हम परीक्षाओं के दायरे से बाहर निकलकर जिज्ञासा, रचनात्मकता और मानवता को महत्व देंगे, तभी देश का वास्तविक विकास संभव होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

77वां गणतंत्र दिवस 2026:वंदे मातरम के 150 वर्ष,आत्मनिर्भर भारत और बदलती वैश्विक भूमिका का ऐतिहासिक संगम- एक समग्र विश्लेषण

एड. किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत एक बार फिर इतिहास के ऐसे निर्णायक मोड़ पर खड़ा है,जहां परंपरा और भविष्य एक-दूसरे से हाथ मिलाते दिखाई दे रहे हैं।26 जनवरी 2026 को भारत अपना 77वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है और इस बार यह समारोह केवल एक संवैधानिक उत्सव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना,सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैश्विक कूटनीति का भव्य प्रदर्शन बनने जा रहा है। कर्तव्य पथ पर होने वाला यह आयोजन भारत की उस यात्रा का प्रतीक है,जिसमें वह औपनिवेशिक विरासत से निकलकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है।इस वर्ष का गणतंत्र दिवस समारोह विशेष इसलिए भी है क्योंकि यह भारत के राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। 1875 में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत न केवल स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा रहा, बल्कि इसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया। 2026 में जब कर्तव्य पथ पर 'वंदे मातरम' की गूंज सुनाई देगी, तब वह केवल एक गीत नहीं होगा, बल्कि डेढ़ सौ वर्षों के संघर्ष,बलिदान और संकल्प का सामूहिक स्मरण होगा। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यहमानता हूं कि यह सर्वेविदित है कि 26 जनवरी का दिन हर भारतीय के लिए गर्व, आत्मसम्मान और संविधान के प्रति निष्ठा का दिन होता है। यह वह दिन है जब भारत ने स्वयं को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया।77 वर्षों की इस संवैधानिक यात्रा में भारत ने अनेक चुनौतियों का सामना किया, आर्थिक असमानता सामाजिक विविधता, सीमाई संघर्ष और वैश्विक दबाव। इसके बावजूद भारत ने लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखते हुए निरंतर प्रगति की है। 2026 का गणतंत्र दिवस इसी लोकतांत्रिक परिपक्वता का उत्सव है।इस बार का समारोह पिछले वर्षों से कई मायनों में अलग और विशिष्ट होने वाला है। सबसे बड़ा प्रतीकात्मक परिवर्तन यह है कि कर्तव्य पथ पर दर्शकों के लिए वीआईपी लेबल को समाप्त कर दिया गया है।यह निर्णय भारतीय लोकतंत्र की उस भावना को सशक्त करता है, जिसमें सभी नागरिक समान हैं। दर्शक दीर्घाओं को अब गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा जैसी भारतीय नदियों के नाम दिए गए हैं। यह कदम न केवल सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है,बल्कि भारत की भौगोलिक,सभ्यतागत और पारिस्थितिक चेतना को भी रेखांकित करता है।

साथियों बात अगर हम 26 जनवरी 2026 के 77वें गणतंत्र दिवस की थीम को समझने की करें तो, मुख्य विषय वंदे मातरम रखा गया है,जबकि आत्मनिर्भर भारत को द्वितीयक विषय के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।यह विषय चयन अपने आप में गहरा संदेश देता है।वंदेमातरम जहां भारत की आत्मा,संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति है, वहीं आत्मनिर्भर भारत भविष्य की ओर देखता हुआ संकल्प है। यह बताता है कि भारत अपनी जड़ों से जुड़कर ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना चाहता है।

साथियों बात कर हम 2026 के गणतंत्र दिवस समारोह को अंतरराष्ट्रीय परिपेक्ष में समझने की करें तो यह इस दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।भारत- यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते से ठीक पहले यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा का मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होना भारत की वैश्विक कूटनीतिक

स्थिति को रेखांकित करता है। यह उपस्थिति केवल औपचारिक नहीं, बल्कि संकेत है कि भारत अब वैश्विक आर्थिक और रणनीतिक संतुलन में एक केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।यूरोपीय संघ के शीर्ष नेतृत्व की मौजूदगी यह दर्शाती है कि भारत-यूरोप संबंध अब केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, तकनीकी सहयोग, रक्षा साझेदारी और वैश्विक स्थिरता के मुद्दों तक विस्तृत हो चुके हैं। गणतंत्र दिवस के मंच से यह संदेश जाएगा कि भारत किसी एक ध्रुव के साथ नहीं, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संतुलन बनाने वाला प्रमुख स्तंभ है।

साथियों बातें कर हम सैन्य परेड को समझने की करें तो यह इस बार भी समारोह का केंद्र बिंदु होगी,लेकिन2026 की परेड कई ऐतिहासिक नवाचारों के साथ सामनेआएगी भारतीय सेना के पशु दल पहली बार कर्तव्य पथ पर मार्च करेंगे, जिसमें बैक्ट्रियन ऊंट, ज़ांस्कर टट्टू, शिकारी पक्षी और स्वदेशी कुत्तों की नस्लें जैसे मुधोल और राजपालयम शामिल होंगी।यह केवल एक दृश्यात्मक आकर्षण नहीं बल्कि भारत की पारंपरिक सैन्य विरासत और जैवविविधता के प्रति सम्मान का प्रतीक है।सैन्य परेड में पहली बार बैटल ऐरे फॉर्मेट का प्रदर्शन किया जाएगा, जो आधुनिक युद्ध रणनीतियों, नेटवर्क-केंद्रित युद्ध और स्वदेशी रक्षा तकनीक की क्षमता को प्रदर्शित करेगा। यह संदेश स्पष्ट होगा कि भारत न केवल हथियारों का आयातक नहीं, बल्कि रक्षा उत्पादन और नवाचार का उभरता हुआ वैश्विक केंद्र है। आत्मनिर्भर भारत की यह झलक भारत की सामरिक स्वतंत्रता को मजबूती प्रदान करती है।कर्तव्य पथ पर इस वर्ष कुल 30 झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता, राज्यों की विशिष्ट पहचान, तकनीकी प्रगति और सामाजिक नवाचारों को दर्शाएंगी। ये झांकियां केवल परंपरा का प्रदर्शन नहीं होंगी, बल्कि यह दिखाएंगी कि कैसे भारत अपनी विरासत को आधुनिक विकास के साथ जोड़ रहा है।

साथियों बातें कर हम गणतंत्र दिवस 2026 में जनभागीदारी को विशेष महत्व को समझने की करें तो देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े 10,हज़ार नागरिकों को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है,जबकि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 2,500 कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे। यह सहभागिता यह संदेश देती है कि गणतंत्र दिवस केवल सत्ता का उत्सव नहीं, बल्कि जनता का पर्व है।सरकार द्वारा माय भारत पोर्टल के माध्यम से नागरिकों को वंदे मातरम गायन और निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर दिया गया है। यह डिजिटल माध्यम नई पीढ़ी को राष्ट्रीय प्रतीकों से जोड़ने का सशक्त प्रयास है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत का राष्ट्रवाद समावेशी है, जिसमें हर नागरिक की भागीदारी महत्वपूर्ण है।77वां गणतंत्र दिवस समारोह यह भी दर्शाता है कि भारत अपनी पहचान को केवल अतीत में नहीं खोजता, बल्कि भविष्य के लिए नए प्रतिमान स्थापित करता है। वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होना हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि सतत जिम्मेदारी है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प इसी जिम्मेदारी की आधुनिक अभिव्यक्ति है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए यह समारोह भारत की उस छवि को प्रस्तुत करेगा, जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, सैन्य रूप से सक्षम, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और लोकतांत्रिक रूप से सशक्त है। यह आयोजन यह संदेश देगा कि भारत न तो आक्रामक राष्ट्रवाद में विश्वास करता है और न ही निर्भरता में,बल्कि सहयोग, संतुलन और आत्मसम्मान के रास्ते पर चलता है।

साथियों बात कर हम 26 जनवरी को राष्ट्रपति द्वारा और 15 अगस्त को प्रधानमंत्री द्वारा झंडा वंदन करने को समझने की करें तो 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) को राष्ट्रपति इसलिए संबोधन देती हैं क्योंकि राष्ट्रपति देश की संवैधानिक प्रमुख़ होती हैं।26 जनवरी को संविधान लागू हुआ था, और संविधान के सर्वोच्च संरक्षक राष्ट्रपति होते हैं।इस दिन राष्ट्र राज्य का उत्सव मनाता है,न कि सरकार का इसलिए यह भूमिका राष्ट्रपति की होती है।राष्ट्रपति सशस्त्र सेनाओं की सर्वोच्च कमांडर भी होती हैं, जबकि परेड उसी का प्रतीक है।वहीं 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) को प्रधानमंत्री लाल किले से बोलते हैं क्योंकि वह सरकार के प्रमुख होते हैं।यह दिन आज़ादी और सरकार की नीतियों, उपलब्धियों से जुड़ा होता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि 26 जनवरी 2026 का दिन केवल एक तिथि नहीं,बल्कि एक विचार एक भावना और एक संकल्प है।कर्तव्य पथ पर जब वंदे मातरम की गूंज आत्मनिर्भर भारत की झलक के साथ मिलेगी,तब यह स्पष्ट होगा कि भारत अपनी जड़ों से शक्ति लेकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है।77वां गणतंत्र दिवस वास्तव में भारत की बदलती वैश्विक भूमिका और अटूट राष्ट्रीय आत्मा का उत्सव होगा।

नर्मदा जयंती पर मां रेवा आरती समिति महेश्वर का रजत जयंती वर्ष पर विशेष उत्सव

'महान ईश्वर जो भगवान देवो के देव महादेव का एक विशेष है वहीं महेश्वर है। मध्य-प्रदेश की इस धार्मिक नगरी का एक अलग सर्दभ है। जो कभी अपनी प्राचीनतम नाम में महिष्मति साम्राज्य था, ऐसे ही इतिहास की अनेकों कहानियों में महेश्वर में बहुत कुछ है। सबसे बड़ी सच्चाई यहां है कि महेश्वर महान शासक लोकमाता अहिल्या बाई होलकर की राजधानी रही । यही इस नगरी की पुण्य है जहां शिव व मां नर्मदा और शिव भक्त अहिल्या बाई का पुण्य प्रताप है। नर्मदा नदी के किनारे बसा यह शहर महेश्वर अपने सुंदर व भव्य घाटों के लिए अपनी अलग पहचान लिए हुए है ।इसके किले की लालिमा सूर्य की आभा से मां नर्मदा मैया की जलधारा देखने में यहां सोने पे सुहागा हो जाती है। यहां का मुख्य मंदिर राजराजेश्वर मंदिर है, यही किले में मां अहिल्या बाई होलकर की गादी भी है जहां उनकी पालकी भी रखी हुई हैं। यहां की महेश्वरी साड़ियां भी विश्व प्रसिद्ध है। वहीं मां रेवा आरती समिति महेश्वर द्वारा यहां पर हर रोज आरती का संचालन किया जाता है। इस संस्था की स्थापना 2 फरवरी 2001 में की गई थी ।प्रमुख परामर्शदाता शिक्षाविद पी के गुप्ता है ।इस मां रेवा आरती समिति महेश्वर द्वारा अध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है ।इसमें प्रमुख उत्सवों में नर्मदा जयंती महोत्सव, गीता जयंती व तुलसी जयंती का बौद्धिक व धार्मिक गतिविधियों की प्रमुखता हैं। इन आयोजनों में आस-पास के ग्रामीण आंचल के अलावा मालवा निमाड़ तथा महाराष्ट्र, गुजरात के श्रद्धालु भक्तगण का आतिथ्य जुड़ा हुआ हैं। समिति में सभी सदस्य गण व भक्त लोग सिर्फ एक रुपए सेवा शुल्क व वार्षिक 365 रुपये श्रध्दा शुल्क में यह आरती का अविरल प्रवाह से संचालन किया जा रहा हैं। आज यहां महेश्वर घाट की आरती अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर गई है। नर्मदा जयंती के दिन मां रेवा आरती समिति द्वारा नर्मदा मैया की महिमा का गुणगान के साथ कमल भटोरे के आचार्यत्व में पांच पंडितों द्वारा पूजन अर्चन व 19 यजमान जोड़ों के कन्या पूजन किया जाएगा। मां रेवा आरती समिति के कर्मठ सदस्यों में बृजलाल सोनेट, रमेश केवट , लक्ष्मीनारायण स्वर्णकर, दिलीप शर्मा, रामकरण यादव व इनकी पूरी टीम का इन धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में बहुत सहयोग रहता है ।इस वर्ष भी 25 जनवरी 2026

को नर्मदा जयंती के मौके पर यहां पर समिति द्वारा सुबह से शाम तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिसमें मां नर्मदा का दूध्याअभिषेक , चुनरी अर्पण, किया जायेगा। इन कार्यक्रमों में बहुत दूर दूर से भक्तगण आयेंगे।इन सभी कार्यक्रम में भक्तों का जनसैलाब जो मां नर्मदा को चुनरी चढ़ाएंगे और छोटी छोटी कन्याओं का पूजन भी करेंगे।

मां रेवा आरती समिति के वरिष्ठ शिक्षाविद , लेखक पंडित प्रदीप कुमार शर्मा जी ने बताया कि इस समिति द्वारा महेश्वर के नर्मदा घाट पर हर रोज मैया की आरती की जाती हैं। जिसे संचालित करते हुए 25 वर्ष हो चुकें हैं इस रजत जयंती वर्ष में नर्मदा तट पर किले के पास विभिन्न धार्मिक व आध्यामिक कार्यक्रमों के साथ वैदिक मंत्रोच्चार से सुबह से शाम तक भक्तों की भक्ति देखने को मिलेगी। मां नर्मदा प्रकृट महोत्सव 2026 पर मां रेवा आरती समिति महेश्वर में विशेष रूप से अहमदाबाद के जयंतीलाल सरवैया ग्रुप मुंबई और अहमदाबाद ग्रुप द्वारा अभिनव पहेल कि गई है नदी को प्रदूषणमुक्त रखने हेतु दीप-दान करने की प्रथा को जलधारा में प्रवाहित नहीं करते हुए महेश्वर के सुंदर घाटों पर विशेष दीप सज्जा की जायेगी।

मां नर्मदा जन्म जयंती उत्सव पर संध्या आरती मे 365 बत्ती धागा का एक दीपक ऐसा बहार से लाया गया है , जिसमें 1551 दीपक से 551551 , ज्योत प्रगटा कर मां नर्मदा घाट पर दीपको से सजाया जायेगा । जिसमें जयंतीलाल सरवैया मुबंई मलाड और व अहमदाबाद के भक्तों का उनके परिजनों का विशेष सहयोग रहेगा। मां नर्मदा प्रकृट महोत्सव पर सभी भक्तगण मां नर्मदा देवी की पूजा अर्चना सभी मिलकर करेंगे। यहां जानकारी मां रेवा आरती समिति के अध्यक्ष शिक्षाविद पंडित प्रदीप शर्मा ने दी है।

विशेष रिपोर्ट - स्वतंत्र पत्रकार व लेखक हरिहर सिंह चौहान द्वारा

जीना हराम करती फोन कॉल मार्केटिंग

— डॉ. सत्यवान सौरभ

मोबाइल फोन कभी सुविधा, सुरक्षा और संपर्क का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता था। इसने दूरी को कम किया, आपात स्थितियों में जीवन बचाया और संवाद को सहज बनाया। लेकिन समय के साथ यही मोबाइल फोन लाखों लोगों के लिए तनाव, झुंझलाहट और मानसिक अशांति का कारण बनता जा रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह है बेलगाम फोन कॉल मार्केटिंग, जिसने आम आदमी का जीना हराम कर दिया है।

दिन की शुरुआत अक्सर किसी अनजान नंबर की कॉल से होती है। नींद खुलते ही फोन की घंटी बजती है और सामने से कोई लोन ऑफर कर रहा होता है, कोई बीमा पॉलिसी, कोई क्रेडिट कार्ड या फिर निवेश का कोई "सीमित समय वाला" प्रस्ताव। दफ्तर की मीटिंग हो, ऑनलाइन क्लास चल रही हो या घर में कोई जरूरी बातचीत—फोन कॉल मार्केटिंग को न समय की समझ है, न परिस्थिति की। पूछने पर वही रटा-रटाया जवाब मिलता है—"सर/मैडम, बस दो मिनट।" लेकिन यही दो मिनट कब दिन के कई हिस्से निगल जाते हैं, पता ही नहीं चलता।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि कॉल करने वालों के पास हमारा मोबाइल नंबर आता कहाँ से है। हमने न तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से नंबर दिया, न ही किसी सेवा के लिए स्पष्ट अनुमति दी, फिर भी वे पूरे आत्मविश्वास के साथ बात करते हैं। कई बार तो वे हमारा नाम, पेशा और जरूरतें तक जानते हैं। यह स्थिति केवल कॉल मार्केटिंग की समस्या नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा और निजता के खुले उल्लंघन का संकेत है। आज के डिजिटल दौर में मोबाइल नंबर केवल संपर्क का साधन नहीं, बल्कि एक व्यापारिक वस्तु बन चुका है।

सरकार और नियामक संस्थाओं ने नियम बनाए हैं, "डू नॉट डिस्टर्ब" जैसी सेवाएँ शुरू की गई हैं, लेकिन व्यवहार में इनका असर बेहद सीमित दिखाई देता है। DND में नंबर दर्ज होने के बावजूद कॉल्स आती रहती हैं। शिकायत करने पर प्रक्रिया इतनी जटिल और लंबी होती है कि आम व्यक्ति हताश होकर चुप रह जाना ही बेहतर समझता है। यही हताशा इस समस्या को और बढ़ावा देती है। फोन कॉल मार्केटिंग का असर केवल समय की बर्बादी तक सीमित नहीं है। यह धीरे-धीरे मानसिक तनाव और चिड़चिड़ेपन को जन्म देती है। हर अनजान नंबर को देखकर मन में आशंका पैदा होती है—कहीं फिर कोई फालतू कॉल तो नहीं। जरूरी कॉल छूट जाने का डर अलग से बना रहता है। यह असमंजस व्यक्ति की मानसिक शांति को गहराई से प्रभावित करता है। कई लोग तो लगातार आने वाली कॉल्स से इतने परेशान हो जाते हैं कि मोबाइल फोन से ही चिढ़ होने लगती है।

बुजुर्गों और कम तकनीकी समझ रखने वाले लोगों के लिए यह समस्या और भी गंभीर है। वे अक्सर इन कॉल्स में उलझ जाते हैं और कई बार ठगी का शिकार हो जाते हैं। निवेश, इनाम, केवाईसी अपडेट या बैंक खाते से जुड़े झूठे बहानों के जरिए लाखों रुपये की ठगी की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। कॉल मार्केटिंग और फ्रॉड कॉल्स के बीच की सीमा अब इतनी धुंधली हो चुकी है कि आम व्यक्ति के लिए फर्क करना कठिन हो गया है।

समय जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्ति है, लेकिन कॉल मार्केटिंग इस संपत्ति का खुला अपमान करती है। सुबह जल्दी या रात देर तक आने वाली कॉल्स इस बात का प्रमाण हैं कि नियम केवल कागजों तक सीमित रह गए हैं। कामकाजी लोगों के लिए यह समस्या और भी विकट है। मीटिंग के बीच बजता फोन न केवल ध्यान भंग करता है, बल्कि पेशेवर छवि को भी नुकसान पहुँचाता है। फोन साइलेंट पर रखने से जरूरी कॉल्स छूटने का खतरा बना रहता है, और न रखने पर अनचाही कॉल्स की झंझट।

यहाँ यह समझना भी जरूरी है कि कॉल करने वाला व्यक्ति हर बार दोषी नहीं होता। टेलीमार्केटिंग कंपनियों में काम करने वाले कर्मचारी अक्सर भारी दबाव में होते हैं। उन्हें प्रतिदिन तय संख्या में कॉल करनी होती हैं, लक्ष्य पूरा न होने पर नौकरी जाने का डर बना रहता है। कम वेतन और अस्थिर भविष्य उन्हें इस काम से बँधे रहने को मजबूर करता है। वे एक तय स्क्रिप्ट के अनुसार बात करते हैं, चाहे सामने वाला कितना ही नाराज़ क्यों न हो।

लेकिन इन कर्मचारियों की मजबूरी के पीछे असली जिम्मेदारी उस व्यवस्था की है, जो मुनाफे के लिए इंसान की निजता, समय और मानसिक शांति को कुचल देती है। कंपनियाँ जानती हैं कि सौ में से यदि एक व्यक्ति भी उनके जाल में फँस जाए, तो उनका उद्देश्य पूरा हो जाता है। यही कारण है कि कॉल मार्केटिंग एक संगठित उद्योग का रूप ले चुकी है, जहाँ नैतिकता और संवेदनशीलता की कोई खास जगह नहीं।

भारत जैसे देश में टेलीमार्केटिंग को नियंत्रित करने के लिए नियम-कानून मौजूद हैं, लेकिन उनके प्रभावी क्रियान्वयन की भारी कमी है। जुर्माने और प्रतिबंधों की बातें तो होती हैं, पर ज़मीनी स्तर पर बदलाव कम ही दिखता है। कई कॉल्स इंटरनेट कॉलिंग या विदेशी नंबरों से आती हैं, जिन पर स्थानीय नियमों का असर नहीं पड़ता। तकनीक का यह दुरुपयोग समस्या को और जटिल बना देता है।

इस समस्या का असर सामाजिक रिश्तों पर भी पड़ रहा है। बार-बार परेशान होने वाला व्यक्ति स्वभाव से चिड़चिड़ा हो जाता है, जिसका प्रभाव परिवार और कार्यस्थल दोनों पर दिखता है। बच्चों के साथ समय बिताते हुए या बुजुर्गों से बात करते समय अचानक बजता फोन माहौल को खराब कर देता है। धीरे-धीरे लोग अनजान कॉल्स उठाना ही बंद कर देते हैं, जिसके कारण कभी-कभी जरूरी और आपात कॉल्स भी मिस हो जाती हैं।

डिजिटल युग ने हमें अभिव्यक्ति की आज़ादी और सुविधाओं की भरमार दी है, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी और नियंत्रण भी उतने ही जरूरी हैं। जब तकनीक जीवन को आसान बनाने के बजाय तनावपूर्ण बना दे, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। बिना पढ़े ऐप्स को अनुमति देना, हर वेबसाइट पर मोबाइल नंबर साझा करना और गोपनीयता की शर्तों को नजरअंदाज करना—ये सब आदतें मिलकर कॉल मार्केटिंग की समस्या को बढ़ावा देती हैं। समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाना अब अनिवार्य हो गया है। व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी और इसके उल्लंघन पर सख्त सज़ा सुनिश्चित करनी होगी। DND जैसी प्रणालियों को वास्तविक अर्थों में प्रभावी बनाना होगा, ताकि उपभोक्ता को राहत मिल सके। बार-बार नियम तोड़ने वाली कंपनियों पर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए, केवल चेतावनी नहीं।

साथ ही, उपभोक्ताओं को भी जागरूक होना होगा। अनावश्यक ऐप्स को अनुमति न देना, संदिग्ध कॉल्स से सावधान रहना और ठगी की घटनाओं की शिकायत दर्ज कराना—ये छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कदम हैं। जागरूक उपभोक्ता ही इस व्यवस्था को जवाबदेह बना सकता है।

अंततः यह समझना होगा कि फोन कॉल मार्केटिंग केवल एक व्यावसायिक गतिविधि नहीं रही, बल्कि यह एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुकी है। यह हमारी निजता पर हमला करती है, समय की बर्बादी करती है और मानसिक शांति छीन लेती है। तकनीक का उद्देश्य जीवन को सरल, सुरक्षित और बेहतर बनाना होना चाहिए, न कि उसे हराम करना। जब तक व्यवस्था, कंपनियाँ और उपभोक्ता—तीनों मिलकर अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाएँगे, तब तक यह समस्या यूँ ही आम आदमी का जीना हराम करती रहेगी।

गाजा बोर्ड ऑफ पीस पर वैश्विक कशमकश के मायने

कमलेश पांडेय

गाजा बोर्ड ऑफ पीस अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की एक महत्वाकांक्षी पहल है जो गाजा संघर्ष को सुलझाने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर शांति स्थापना का एक नया मॉडल प्रस्तुत करती है। चूंकि यह बोर्ड संयुक्त राष्ट्र संघ के पारंपरिक ढांचे से बाहर काम करने का अदद प्रयास है, जिससे अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में नई बहस छिड़ गई है। खासकर वैश्विक कशमकश बढ़ चुकी है, जिसके वैश्विक प्रभाव आने वाले वक्त में महसूस किए जाएंगे।

सवाल है कि आखिर अपनी ही बनाई पुरानी विश्व व्यवस्था की अनदेखी करते हुए अमेरिका बिल्कुल नई तरह की विश्व व्यवस्था क्यों बनाना चाहता है? ब्रेक के बाद वह अपनी ही नीतियों को क्यों बदल देता है। आखिर वह शेष दुनिया को अमेरिकी मुगालते में क्यों रखना चाहता है? आखिर चीन, रूस, भारत, फ्रांस, जर्मनी, नॉर्वे, स्वीडन जैसे कद्दावर देश ऐसे पीस बोर्ड से दूरी क्यों बनाए हुए हैं? खास बात यह कि आखिर गाजा बोर्ड ऑफ पीस के अंतर्राष्ट्रीय मायने क्या हैं? और इसके पीछे के वैश्विक निहितार्थ से किसको क्या फायदा और क्षति होने के कयास लगाये जा रहे हैं?

आइए सबसे पहले इस बोर्ड के स्वरूप को जान लेते हैं। बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने २०२५ में इसकी शुरुआत की जहां खुद ही वे ही यानी पदेन अमेरिकी राष्ट्रपति इसके प्रमुख होंगे और अन्य सदस्य देश तीन-तीन साल के लिए चुने जाएंगे। वहीं, इसकी स्थायी सदस्यता के लिए 1 अरब डॉलर का योगदान जरूरी है जबकि कार्यकारी बोर्ड में मार्को रुबियो, जेरेड कुशनर जैसे नाम शामिल हैं। यह बोर्ड गाजा के पुनर्निर्माण, प्रशासन और क्षेत्रीय समन्वय पर केंद्रित है।

अलबत्ता, इसके गठन को लेकर जो वैश्विक प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं उसमें अमेरिका के पिछलग्गू देश यानी पाकिस्तान, सऊदी अरब, कतर, तुर्की, यूएई जैसे 35 से अधिक देशों ने इसमें अपनी भागीदारी की पुष्टि की है जबकि चीन, फ्रांस, नॉर्वे, स्वीडन ने इसे अंतरराष्ट्रीय कानून के खिलाफ बताकर खारिज कर दिया है। खास बात यह है कि भारत जैसे अहम वैश्विक खिलाड़ी ने फिलिस्तीन समर्थन और यूएन-आधारित दो-राज्य समाधान की नीति के चलते अभी इस पर चुप्पी साध रखी है।

जहां तक गाजा पीस बोर्ड के भविष्य के निहितार्थ की बात है तो यह बोर्ड यूएनएससी के समानांतर वैकल्पिक तंत्र बन सकता है जो वैश्विक संघर्षों में मध्यस्थता करेगा। क्योंकि इसे यूएनओ ने २०२७ तक सीमित मान्यता दी है, लेकिन रूस-चीन की असहमति से विवाद बढ़ा है। जबकि भारत जैसे उभरते गुटनिरपेक्ष देशों के लिए यह कूटनीतिक संतुलन की परीक्षा की घड़ी है। यही वजह है कि गाजा बोर्ड ऑफ पीस की अंतरराष्ट्रीय वैधता सीमित और विवादास्पद बनी हुई है क्योंकि यह यूएनएससी प्रस्ताव २८०३ (२०२५) से २०२७ तक की अस्थायी मंजूरी पर टिकी है।

देखा गया कि रूस-चीन जैसे देशों की असहमति से इसकी वैश्विक स्वीकार्यता कमजोर है, जो अंतरराष्ट्रीय कानून पर सवाल उठाती है। जहां तक इसकी वैधता के आधार की बात है तो यूएनएससी ने इसे गाजा पुनर्निर्माण और विसैन्यीकरण के लिए अंतरिम वैधता प्रदान की, लेकिन यूएनओ के पूर्ण नियंत्रण के बिना। मसलन, बोर्ड को "अंतरराष्ट्रीय कानूनी व्यक्तित्व" दिया गया, जो फिलिस्तीनी तकनीशियनों की समिति और बहुराष्ट्रीय शांति बल के माध्यम से कार्य करता है। हालांकि, सदस्य चयन और जवाबदेही की कमी से इसकी आलोचना भी हो रही है।

जहां तक गाजा पीस बोर्ड के संभावित प्रभाव की बात है तो यह यूएनओ के समानांतर तंत्र के रूप में यूएनओ की एकाधिकार को चुनौती दे सकता है, खासकर वैश्विक संघर्षों में। वहीं, ट्रंप की आजीवन अध्यक्षता जैसी संरचना से लंबे समय में वैधता संकट गहरा सकता है जबकि भारत जैसे देशों की चुप्पी से बहुपक्षीय संस्थाओं की प्रासंगिकता पर बहस तेज हो रही है। कहना न होगा कि रूस और चीन का गाजा बोर्ड ऑफ पीस में असहयोग अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों को कमजोर करता है, लेकिन बोर्ड की वैधता को पूरी तरह समाप्त नहीं करता।

दरअसल यह असहमति बहुपक्षीय संस्थाओं की प्रासंगिकता पर सवाल उठाती है और वैकल्पिक गठबंधनों को बढ़ावा दे सकती है। जहां तक इस बोर्ड के कानूनी आधार की बात है तो रूस-चीन ने बोर्ड को यूएन चार्टर के अनुच्छेद २(४) के तहत "शक्ति राजनीति" का माध्यम बताकर खारिज किया, जो क्षेत्रीय संप्रभुता के हस्तक्षेप को प्रतिबंधित करता है। यूएनएससी प्रस्ताव २८०३ की अस्थायी मंजूरी के बावजूद, इनकी वीटो शक्ति से स्थायी वैधता अवरुद्ध हो सकती है।

जहां तक गाजा पीस बोर्ड के अंतरराष्ट्रीय निहितार्थ की बात है तो यह बोर्ड को "सॉफ्ट पावर" तंत्र तक सीमित रखेगा जहां अमेरिकी प्रभाव वाले देश ही मान्यता देंगे। जबकि लंबे समय में, यह अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में चुनौतियां जन्म दे सकता है, जैसे फिलिस्तीन या प्रभावित देशों द्वारा ICJ में अपील पहल संभव है। वहीं, भारत जैसे तटस्थ देशों को भी अतिरिक्त कूटनीतिक दबाव झेलना पड़ेगा।

देखा जाए तो भारत गाजा बोर्ड ऑफ पीस पर रणनीतिक चुप्पी अपनाए हुए है, जो बहुपक्षीय संस्थाओं को प्राथमिकता और संतुलित कूटनीति को दर्शाता है। भारत का यह रुख फिलिस्तीन समर्थन, इसराइल के साथ मजबूत संबंधों और यूएन सुधारों पर जोर को अधिक संतुलित करता है। दरअसल भारत की चुप्पी के कारण हैं, क्योंकि वह डांवाडोल अमेरिकी कूटनीति पर ज्यादा एतबार नहीं कर सकता है। भारत के साथ अमेरिकी नीतिगत चालबाजी के चलते ही इंडिया ने दावोस २०२६ में गाजा बोर्ड ऑफ पीस के लॉन्च में भाग नहीं लिया क्योंकि यह यूएन प्रस्तावों पर आधारित दो-राज्य समाधान से भटकता दिखता है।

चूंकि पीएम मोदी ब्राजील, जर्मनी, जापान और भारत जैसे जी-फोर (G4) देशों के साथ यूएनएससी विस्तार पर फोकस कर रहे हैं, न कि अमेरिकी वैकल्पिक तंत्र पर। इसलिए भी भारत ने इससे दूरी दिखाई है। इसके अलावा, इस बोर्ड में अमेरिकी पिल्ले पाकिस्तान की भागीदारी से भी भारत को क्षेत्रीय संतुलन की चिंता है। इसलिए भारत भविष्य की रणनीति पर बल दे रहा है। अपनी इसी कूटनीति के तहत भारत यूएन सुधारों को आगे बढ़ाते हुए ग्लोबल साउथ की आवाज मजबूत करेगा, और गाजा बोर्ड ऑफ पीस को अप्रत्यक्ष रूप से निगरानी में रखेगा। वहीं, यदि यह बोर्ड वैश्विक संघर्षों में विस्तार चाहेगा, तो भारत तटस्थता बनाए रखकर ICJ या यूएन मंचों पर सक्रिय हो सकता है। इसप्रकार भारत की यह "रणनीतिक स्वायत्तता" वाली नीति उसकी लंबी परंपरा को मजबूत करती है।

कुलमिलाकर भारत की गाजा बोर्ड ऑफ पीस पर चुप्पी रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीय कूटनीति को मजबूत करने की नीति का हिस्सा है। भारत का यह रुख फिलिस्तीन समर्थन, इसराइल के साथ सैन्य सहयोग और अमेरिकी दबाव से संतुलन बनाए रखने के लिए अपनाया गया है। जहाँ तक ऐतिहासिक फिलिस्तीन नीति की बात है तो भारत ने 1947 से फिलिस्तीन के आत्मनिर्णय और दो-राज्य समाधान का समर्थन किया है, जो यूएन प्रस्तावों पर आधारित है। जबकि ट्रंप का यह बोर्ड यूएन ढांचे से बाहर होने के चलते भारत ने इसका खुला समर्थन टाल दिया, ताकि ग्लोबल साउथ में विश्वसनीयता बनी रहे। इससे इसराइल-अमेरिका संतुलन भी बना रहेगा।

चूंकि इसराइल के साथ रक्षा सौदे (जैसे स्पाइस मिसाइलें) और अमेरिका से तकनीकी सहयोग महत्वपूर्ण हैं, लेकिन बोर्ड में पाकिस्तान की मौजूदगी से क्षेत्रीय जोखिम बढ़ता है। लिहाजा भारत की चुप्पी कूटनीतिक लचीलापन देती है, जहां भारत मानवीय सहायता जारी रख सकता है बिना राजनीतिक बंधन के। वहीं भारत यूएन सुधार पर फोकस कर रहा है, जहां पीएम मोदी G4 (भारत-ब्राजील-जर्मनी-जापान) के साथ यूएनएससी विस्तार पर जोर दे रहे हैं न कि वैकल्पिक तंत्रों पर। इस प्रकार यह "देखो और इंतजार करो" रणनीति बोर्ड की वैधता की परीक्षा के बाद निर्णय लेगी।

यह ठीक है कि भारत को गाजा बोर्ड ऑफ पीस में शामिल होने से कूटनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक लाभ मिल सकते हैं, खासकर अमेरिका के साथ मजबूत साझेदारी को देखते हुए हालांकि, यह फिलिस्तीन नीति और ग्लोबल साउथ की विश्वसनीयता से टकरा सकता है। जहां तक इसके कूटनीतिक लाभ की बात है तो भारत को अमेरिका-इसराइल के साथ उच्च-स्तरीय पहुंच मिलेगी, जो मध्य पूर्व में प्रभाव बढ़ाएगा। वहीं वैश्विक शांति मंच पर नेतृत्वकारी भूमिका से यूएनएससी स्थायी सदस्यता की दावेदारी मजबूत होगी। इसलिए यहां पर पाकिस्तान की मौजूदगी के बावजूद भारत अपना अलग पहचान बना सकता है।

जहां तक भारत के लिए आर्थिक अवसर की बात है तो गाजा की पुनर्निर्माण परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों (जैसे L&T) को अनुबंध मिल सकते हैं जो बुनियादी ढांचे निर्यात को बढ़ावा देंगे। वहीं, इसकी स्थायी सदस्यता के लिए 1 अरब डॉलर निवेश से लंबे समय में लाभदायक साझेदारी बन सकती है। जहां तक रणनीतिक फायदे की बात है तो मानवीय सहायता के जरिए गाजा में सॉफ्ट पावर बढ़ेगा, जो इसराइल से रक्षा सौदों को सुरक्षित रखेगा। वहीं बोर्ड के विस्तार से अन्य क्षेत्रीय विवादों में मध्यस्थता का मौका मिलेगा।

गाजा बोर्ड ऑफ पीस में शामिल होने से भारत को अमेरिका के साथ कूटनीतिक साझेदारी मजबूत करने और मध्य पूर्व में प्रभाव बढ़ाने का प्रमुख लाभ मिलेगा। यह वैश्विक शांति पहलों में नेतृत्वकारी भूमिका प्रदान करेगा, जो यूएनएससी स्थायी सदस्यता की दावेदारी को बल देगा। इससे अमेरिका के साथ निकटता बढ़ेगी। ट्रंप प्रशासन के कोर सदस्यों (जैसे जेरेड कुशनर) के साथ प्रत्यक्ष संवाद से द्विपक्षीय संबंधों में गहराई आएगी। QUAD और I2U2 जैसे मंचों का विस्तार संभव होगा, जो इंडो-पैसिफिक रणनीति को मजबूत करेगा।

जहां तक मध्य पूर्व प्रभाव की बात है तो सऊदी, यूएई जैसे सहयोगियों के साथ संयुक्त मंच पर भारत की आवाज मजबूत होगी, जो ऊर्जा सुरक्षा और व्यापार समझौतों को आसान बनाएगा। वहीं पाकिस्तान की उपस्थिति के बावजूद, भारत क्षेत्रीय मध्यस्थ के रूप में उभर सकता है। इससे उसकी वैश्विक छवि मजबूत होगी। ग्लोबल साउथ के प्रतिनिधि के नाते मानवीय योगदान से सॉफ्ट पावर बढ़ेगा, जो फिलिस्तीन नीति को संतुलित रखते हुए इसराइल सहयोग को सुरक्षित करेगा। दावोस जैसे मंचों पर नेतृत्व से बहुपक्षीय कूटनीति में नया स्थान बनेगा।

भारत का गाजा बोर्ड ऑफ पीस में शामिल होने का निर्णय पड़ोसी देशों, खासकर पाकिस्तान पर महत्वपूर्ण कूटनीतिक प्रभाव डालेगा। यह क्षेत्रीय संतुलन को बदल सकता है, जहां पाकिस्तान की मौजूदा भागीदारी के बावजूद भारत का प्रवेश प्रतिस्पर्धा बढ़ाएगा। इसका पाकिस्तान पर प्रभाव पड़ेगा। पाकिस्तान ने पहले ही समर्थन की घोषणा की है, लेकिन भारत की भागीदारी से बोर्ड में द्विपक्षीय तनाव उभर सकता है। यह कश्मीर जैसे मुद्दों पर अप्रत्यक्ष दबाव डालेगा, क्योंकि अमेरिकी मंच पर भारत की मजबूत उपस्थिति पाकिस्तान को अलग-थलग कर सकती है।

जहां तक अन्य पड़ोसियों पर असर की बात है तो बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों को मध्य पूर्व शांति पहल से अप्रत्यक्ष लाभ मिलेगा, जैसे मानवीय सहायता और व्यापार मार्ग। हालांकि, चीन के प्रभाव वाले नेपाल-मालदीव में भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका से संतुलन की होड़ तेज हो सकती है। जहां तक क्षेत्रीय संतुलन की बात है तो कुल मिलाकर, यह निर्णय दक्षिण एशिया में भारत को अमेरिका-प्रायोजित मंचों पर नेतृत्व देगा, जो SAARC जैसे क्षेत्रीय मंचों को कमजोर कर सकता है। पड़ोसी देशों को नई कूटनीतिक गतिशीलता का सामना करना पड़ेगा।

भारत का गाजा बोर्ड ऑफ पीस में शामिल होना क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग में अमेरिका-केंद्रित गठबंधनों को मजबूत कर सकता है लेकिन पाकिस्तान के साथ तनाव बढ़ा सकता है। यह QUAD और I2U2 जैसे मंचों को मध्य पूर्व तक विस्तार देगा, जहां भारत की भूमिका बढ़ेगी। वहीं दक्षिण एशिया में बदलाव भी होगा। खासकर पाकिस्तान की बोर्ड उपस्थिति के बावजूद भारत का प्रवेश कूटनीतिक प्रतिस्पर्धा लाएगा, जो कश्मीर जैसे मुद्दों पर अप्रत्यक्ष दबाव डालेगा। वहीं SAARC जैसे पारंपरिक मंच कमजोर हो सकते हैं जबकि द्विपक्षीय सुरक्षा संवाद (भारत-श्रीलंका, भारत-बांग्लादेश) मजबूत होंगे। जहां तक इसके व्यापक सुरक्षा प्रभाव की बात है तो चीन के असहयोग से इंडो-पैसिफिक में नया ध्रुवीकरण हो सकता है, जहां भारत अमेरिका के साथ समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाएगा। वहीं पड़ोसी देशों को नई गतिशीलता का सामना करना पड़ेगा, जैसे नेपाल-मालदीव में संतुलन की होड़।

गाजा बोर्ड ऑफ पीस में भारत की भागीदारी से समुद्री सुरक्षा सहयोग में इंडो-पैसिफिक और मध्य पूर्व की ओर विस्तार होगा, जहां QUAD और I2U2 जैसे गठबंधनों को मजबूती मिलेगी। वहीं अमेरिका के साथ संयुक्त नौसैनिक अभ्यास बढ़ेंगे, जो हिंद महासागर में चीन के प्रभाव को संतुलित करेंगे। जहां तक हिंद महासागर फोकस की बात है तो भारत को गाजा तट से लाल सागर तक समुद्री मार्गों की निगरानी में भूमिका मिलेगी, जो ऊर्जा आपूर्ति और व्यापार सुरक्षा को मजबूत करेगा। वहीं मालदीव, श्रीलंका जैसे पड़ोसियों के साथ कोलंबो सिक्योरिटी कॉन्क्लेव (CSC) के तहत क्षमता निर्माण तेज होगा। जहां तक रणनीतिक बदलाव की बात है तो पाकिस्तान की बोर्ड उपस्थिति से अरब सागर में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, लेकिन भारत अमेरिकी खुफिया साझा करने से पनडुब्बी निगरानी और एंटी-पाइरेसी ऑपरेशंस में आगे रहेगा। कुल मिलाकर, यह SAGAR विजन को मध्य पूर्व तक ले जाएगा।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

बडविल बैंक शाखा से चोरी पांच करोड़ रूपये मुल्य की सोने के दो लुटेरे धनबाद से गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, ओडिशा के क्योंझर जिले के बड़बिल स्थित बैंक ऑफ महाराष्ट्र में हुई करोड़ों रुपए मुल्य के सोने की चोरी का उद्भेदन झारखंड में हुआ है । झारखंड और ओडिशा पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में इस मामले में धनबाद से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

यह डकैती 19 जनवरी 2026 को अज्ञात अपराधियों द्वारा अंजाम दी गई थी, जिसमें बैंक से भारी मात्रा में सोना लूट लिया गया था। घटना के बाद बड़बिल थाना में कांड संख्या 29/26 के तहत धारा 310(2) बीएनएस और 25/27 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। वारदात के बाद से ही पुलिस लगातार आरोपियों की तलाश में जुटी हुई थी।

जांच के दौरान क्योंझर के अपर पुलिस अधीक्षक प्रत्युष मोहपात्रा के नेतृत्व में ओडिशा पुलिस की एक विशेष टीम धनबाद पहुंची। यहां धनबाद पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त छापेमारी अभियान चलाया गया। टीम ने निरसा और सिंदरी थाना क्षेत्र के कई संभावित ठिकानों पर एकसाथ दबिश दी।

छापेमारी के दौरान पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी और डकैती में लूटा गया 288 ग्राम सोना बरामद किया गया। इसके साथ ही घटना में प्रयुक्त दो स्कॉर्पियो वाहन और चार एंड्रॉयड मोबाइल फोन भी जब्त किए गए, जिनका इस्तेमाल वारदात की योजना और आपसी संपर्क के लिए किया गया था।

इस कार्रवाई में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राजा कुमार सिंह (27 वर्ष), निवासी जमुई, बिहार, वर्तमान पता चासनाला, धनबाद और कुणाल राज वर्मा (33 वर्ष), निवासी निरसा, धनबाद के रूप में हुई है।

पूछताछ में कई अहम सुराग मिले हैं, जिसके आधार पर पुलिस डकैती से जुड़े पूरे नेटवर्क को खंगालने में जुट गई है। आशंका जताई जा रही है कि इस गिरोह में अन्य सदस्य भी शामिल हैं।

सिटी एसपी ऋत्विक श्रीवास्तव ने बताया कि डकैती के दौरान करीब 5 किलोग्राम सोना लूटा गया था, जिसकी अनुमानित कीमत 5 करोड़ रुपए से अधिक है। उन्होंने कहा कि अंतरराज्यीय समन्वय और त्वरित कार्रवाई के कारण पुलिस को इस मामले में सफलता मिली है।

फिलहाल बरामदगी और गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ के आधार पर अन्य आरोपियों की पहचान की जा रही है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि शेष आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी जारी है। जल्द ही पूरे गिरोह को सलाखों के पीछे भेजा जाएगा।

सत्रह नक्सली मुठभेड में मारे जाने के बाद डीजीपी तदाशा मिश्र पहुंची चाईबासा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , ओडिशा से सटे सिंहभूम जिले में झारखंड पुलिस द्वारा नक्सलों के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी सफलता को लेकर डीजीपी तदाशा मिश्रा शनिवार को अभियान में शामिल जवानों और अधिकारियों का उत्साह बढ़ाने के लिए चाईबासा पहुंचीं. डीजीपी ने चाईबासा से नक्सलियों को यह चेतावनी दी है कि वह आत्मसमर्पण करें या फिर एनकाउंटर के लिए तैयार रहें.

झारखंड डीजीपी तदाशा मिश्रा ने चाईबासा में हाल ही में चलाए गए संयुक्त अभियान को नक्सलवाद के खिलाफ निर्णायक झटका बताया है. उन्होंने कहा कि इस अभियान से कोल्हान और सारंडा के नक्सल प्रभावित इलाकों में माओवादी संगठन की कमर टूट चुकी है. अब बचे-खुचे नक्सलियों के पास मुख्यधारा में लौटने के सिवा कोई रास्ता नहीं बचा है.

डीजीपी ने बताया कि 22 और 23 जनवरी को चाईबासा एसपी अमित रेणु को गुप्त इनपुट मिला था कि भाकपा के शीर्ष नक्सली अनल उर्फ पतिराम मांझी और अनमोल उर्फ सुशांत अपने सशस्त्र दस्ते के साथ छोटानागरा थाना क्षेत्र के कुमड़ीह और बहदा गांव के जंगली-पहाड़ी इलाकों में डेरा डाले हुए हैं. इसी सूचना पर झारखंड पुलिस, कोबरा 209 बटालियन, सीआरपीएफ और झारखंड जगुआर की संयुक्त टीम ने इलाके की घेराबंदी कर विशेष अभियान शुरू किया.

इस अभियान के दौरान सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच कई दौर की भयंकर गोलीबारी हुई. नक्सलियों ने अंधाधुंध फायरिंग की लेकिन सुरक्षा बलों ने संयमित और घातक जवाब दिया. नक्सली जंगल में भागे तो सघन सर्च ऑपरेशन चलाया गया. इस दौरान 17 नक्सलियों के शव बरामद हो गए, जिनमें संगठन के बड़े नेता शामिल हैं.

इस मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों में अनल उर्फ पतिराम मांझी सबसे बड़ा नाम है, उसके सिर पर झारखंड में 1 करोड़, ओडिशा में 1.20 करोड़ और एनआईए से 15 लाख रुपये का इनाम था. वहीं अनमोल उर्फ सुशांत पर झारखंड में 25 लाख और ओडिशा में 65 लाख का इनाम घोषित था. अन्य मारे गए नक्सलियों में अमित मुंडा, पिंटू लोहरा, लालजीत उर्फ लालू, समीर सोरेन, रापा उर्फ पावेल, राजेश मुंडा, बुलबुल अलदा, बबिता, पूर्णिमा, सुरजमुनी, जोंगा, सोमबारी पूर्ति, सोमा होनहागा, मुक्ति होनहागा और सरिता शामिल हैं. इन सभी पर झारखंड-ओडिशा में कई हत्या, लूट और विस्फोट जैसे गंभीर मामले दर्ज थे.

सारंडा में सर्च के दौरान नक्सली ठिकानों से भारी मात्रा में हथियार बरामद हुए हैं. इसमें 4 एके-47 राइफल, 1 एकेएम, 4 इंसास, 3 एसएलआर, 3 .303 राइफल, असंख्य कारतूस और दैनिक सामान शामिल हैं. इससे नक्सलियों की हथियार क्षमता को बड़ा झटका लगा है. डीजीपी तदाशा मिश्रा ने बताया कि चाईबासा और आसपास के इलाकों में पिछले तीन सालों से नक्सल विरोधी अभियान तेज हैं. इस दौरान 183 नक्सलियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया, जबकि पहले मुठभेड़ों में 11 नक्सली मारे गए थे. अब इस अभियान से संगठन को अपूरणीय क्षति पहुंची है.

डीजीपी ने बताया कि उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में नए सुरक्षा कैंप लगाने से नक्सल गतिविधियां थम गई हैं और स्थानीय लोगों का विश्वास बढ़ा है. डीजीपी ने नक्सलियों से अपील की कि वे हथियार त्यागकर सरेंडर कर दें, वरना अभियान जारी रहेगा

वहीं दूसरी तरफ मारे गए नक्सलियों के शवों का कड़ी सुरक्षा के बीच पोस्टमार्टम भी शुरू कर दिया गया है. चाईबासा के एसपी अमित रेणु ने बताया कि चुकी शवों की संख्या 17 है इसलिए पोस्टमार्टम में समय लगेगा. इसकी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है. चाईबासा एसपी ने बताया कि मारे गए नक्सलियों के परिजनों ने उनके शवों के लिए चाईबासा पुलिस से संपर्क किया है. आवश्यक कार्रवाई करने के बाद मारे गए नक्सलियों के शव उनके परिजनों को सौंप दिए जाएंगे. जिन नक्सलियों के शवों का कोई दावेदार नहीं होगा उनका कुछ दिन तक इंतजार किया जायेगा।

पत्र लेखन मंच इंदौर का स्थापना दिवस मनाया

परिवहन विशेष न्यूज

इंदौर मध्यप्रदेश के लेखको की संस्था पत्र लेखक मंच के 42 स्थापना दिवस बसंत पंचमी के पावन पर्व पर पर इंदौर समाचार अखबार के कार्यालय स्थित परिसर में ज्ञान की देवी सरस्वती माता एवं पत्रकारिता के पितामह श्री सुरेश सेठ जी के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं नमन कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। संस्था के संस्थापक सुशील कलमेरी व प्रचार प्रमुख बुरहानुद्दीन शकरूवाला ने बताया की कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंदौर समाचार के पोलिटिकल ब्यूरो राहुल निवारे ने कहा कि पत्र लेखन पत्रकारिता की रीढ़ की हड्डी होते हैं साहित्य के बिना समाचार पत्र का जीवन अधूरा है इसी मूल विचारधारा पर इंदौर समाचार अपने आप को खरा साबित करने के लिए कटिबंध है। वसंत पंचमी पर पत्र लेखन मंच के 42 पर स्थापना दिवस के अवसर पर सभी आगंतुक लेखन का हम शब्दों से सम्मान करते हैं और शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं कि वह समस्याओं पर अधिक से अधिक रोशनी डालें और उन्हें हल करवाने के लिए तत्पर रहे। मंच के संस्थापक सुशील कलमेरी ने संबोधित करते हुए बताया कि पत्र लेखन निस्वार्थ रूप से अपनी पेनी कलम के माध्यम से समस्याओं को उजागर करते हैं तो सरकार की नींद हराम हो जाती है और वह उनके हल ढूंढ़ने लगते हैं इसी में पत्र लेखन के कार्य की सफलता निहित है. इंदौर समाचार एकमात्र ऐसा पेपर है जिसमें पत्र लिखो को के फोटो के साथ उनके मोबाइल नंबर भी दिए जाते हैं यह बात अति प्रशंसनीय है।

मंच के इंदौर अध्यक्ष डॉ मनीष दवे ने कहा कि आज स्थापना दिवस के इस अवसर पर इंदौर समाचार के पित्र पुरुष सुरेश सेठ जी को नमन कर उनकी छत्रछाया में बैठकर कार्यक्रम करना अपने आप में गौरवान्वित करने वाली बात है। सुरेश सेठ जी ने कभी भी पत्रकारिता में राजनीति को नहीं आने दिया और सच्चाई के साथ निष्पक्ष सूचना एवं प्रसारण के कार्य को अंजाम दिया उनकी इस खूबी को हम स्मरण कर यह सीखें कि हमें किसी प्रभाव में नहीं आकर वास्तविक समस्याओं से निपटने के लिए प्रतिबद्ध होकर काम करना है पत्र लेखन मंच के संस्थापक श्री सुशील कलमेरी जी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने बताया की 42 वर्षों से अथक प्रयास के बल पर इन्होंने इस संस्था को मध्य प्रदेश के स्तर पर जीवित रखा है उनके इन प्रयासों की सराहना करनी चाहिए और भविष्य में यह पहले पहले उसके लिए प्रयास करने चाहिए। मंच प्रचार प्रमुख बुरहानुद्दीन शकरुवाला ने स्थापना दिवस पर सभी को बधाई देते हुए भविष्य में अच्छे पत्र लेखन के लिए उत्साहित होकर काम करने की प्रेरणा दी। एवं निर्भिक, उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए स्व सुरेश सेठ जी की सेवाओं को याद करते हुए उन्हें भावभीनी आदरांजलि दी। राजेश नेमा ने कहा कि प्रतिवर्ष इस दिन श्रेष्ठ पत्र लेखन और सर्वाधिक पत्र लिखने वालों का सम्मान किया जाना चाहिए जिसका सभी उपस्थित महानुभावों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। श्री दिलीप नीमा ने पत्रलेखा को की जीवंत के विषय में बताते हुए इंदौर समाचार द्वारा उन्हें सम्मान और स्थान दिए जाने के लिए समस्त उपस्थित सदस्यों की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया।

पत्रलेखन मंच की जागरूक सदस्य संध्या बायवार ने कविता के माध्यम से अपनी बात रखी और खूब तालियां बटोरी। और बताया कि 42 वर्षों में पत्र लेखन मंच ने कई सोपान तय किए हैं और कठिन राह से गुजरते हुए आज भी अपना सफर तय करने की दिशा में अग्रसर है। संजय तोराणेकर ने इंदौर समाचार और सुरेश सेठ साहब के साथ अपने संस्मरण साझा करते हुए उनकी सदा सदाशयता पर सभी की सहानुभूति ली और सेठ साहब के आदर्श की प्रशंसा की। आशिक भाई देवास वाला ने इंदौर समाचार के बृहद दिल की तारीफ करते हुए पत्र लेखन को को प्रोत्साहित करने की उनकी नीति की सराहना की। कार्यक्रम के संस्थापक सुशील कलमेरी कार्यक्रम के सूत्रधार रहे और उन्होंने आभार प्रदर्शन किया। यहां जानकारी पत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

कन्यादान नहीं, सम्मान चाहिए : डॉ. प्रियंका सौरभ

आज विश्व बालिका दिवस मनाया जा रहा है। देश और दुनिया में इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम, संगोष्ठियाँ और प्रतीकात्मक आयोजन हो रहे हैं। मंचों से बालिकाओं के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तीकरण की बातें कही जा रही हैं। लेकिन यह प्रश्न बार-बार सामने आता है कि क्या किसी एक दिवस का आयोजन वास्तव में उस गहरी सामाजिक समस्या का समाधान कर सकता है, जो पीढ़ियों से बालिकाओं के जीवन को प्रभावित करती आ रही है। सम्मान किसी कैलेंडर की तारीख से तय नहीं होता, बल्कि वह समाज के दैनिक व्यवहार, सोच और निर्णयों में परिलक्षित होता है।

भारतीय समाज में बालिका को लेकर एक विचित्र विरोधाभास दिखाई देता है। एक ओर उसे देवी, शक्ति और लक्ष्मी का रूप कहकर पूजनीय माना जाता है, दूसरी ओर उसी बालिका के जीवन पर सबसे अधिक नियंत्रण और प्रतिबंध लगाए जाते हैं। जन्म से पहले चयन, जन्म के बाद भेदभाव और बड़े होते-होते अपेक्षाओं का बोझ—यह सब उसकी नियति का हिस्सा बना दिया जाता है। पूजा और अधिकार के बीच की यह दूरी यह स्पष्ट करती है कि हमारे सामाजिक मूल्यों में अभी भी गहरी असंगति मौजूद है।

बालिका के जीवन में असमानता केवल व्यवहार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह भाषा, परंपराओं और संस्कारों के माध्यम से भी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है। इन्हीं परंपराओं में एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील शब्द है— कन्यादान। दान का अर्थ है किसी वस्तु को सौंप देना, लेकिन बेटी कोई वस्तु नहीं है। वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है, जिसकी अपनी चेतना, इच्छा और भविष्य है। ऐसे में विवाह के समय उसका "दान" किया जाना न केवल भाषा की समस्या है, बल्कि सोच की भी गंभीर समस्या है। विवाह भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्कार माना जाता है। लेकिन संस्कार वही सार्थक होता है, जो समानता और सहमति पर आधारित हो। कन्यादान की अवधारणा पिता को दाता और बेटी को दान बना देती है, जिससे असमानता का भाव स्वत: स्थापित हो जाता है। इसके विपरीत पाणिग्रहण जैसी अवधारणा साझेदारी और स्वीकार का भाव देती है। समय की माँग है कि समाज भाषा के साथ-साथ उस सोच पर भी पुनर्विचार करे, जो इन शब्दों के पीछे छिपी हुई है। दुखद तथ्य यह है कि आज भी देश के अनेक हिस्सों में बालिकाओं से उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में औपचारिक रूप से भी राय नहीं ली जाती। शिक्षा, विवाह और करियर जैसे विषयों पर अंतिम निर्णय परिवार या समाज द्वारा लिया जाता है। बालिका से अपेक्षा की जाती है कि वह परिस्थितियों को स्वीकार करे और चुपचाप निभाए। यह चुप्पी धीरे-धीरे उसके जीवन का स्थायी हिस्सा बन जाती है और संघर्ष का रूप ले लेती है। बालिका का संघर्ष बचपन से ही आरंभ हो जाता है। कभी संसाधनों की कमी के रूप में, कभी सुरक्षा के नाम पर लगाए गए प्रतिबंधों के रूप में। उसे हर चरण पर स्वयं को सिद्ध करना पड़ता है, फिर भी उस पर संदेह किया जाता है। समाज उससे त्याग, सहनशीलता और समर्पण की अपेक्षा करता है, लेकिन बदले में उसे समान अधिकार देने से कतराता है। यह असंतुलन ही असली समस्या की जड़ है।

अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि बेटियाँ परिवार की इज़्ज़त होती हैं। लेकिन इस इज़्ज़त की कीमत अधिकांश मामलों में उनकी स्वतंत्रता से चुकाई जाती है। इज़्ज़त किसी एक व्यक्ति के कंधों पर नहीं टाली जा सकती। वह सामूहिक आचरण, नैतिकता और समानता से बनती है। किसी की आज़ादी सीमित करके समाज अपनी गरिमा नहीं बचा सकता, बल्कि उसे और कमजोर ही करता है। बालिका दिवस के अवसर पर कन्या पूजन और सम्मान की बातें बड़े स्तर पर की जाती हैं। लेकिन वास्तविक सम्मान पूजा की थाली से नहीं, बल्कि समान अवसरों से मिलता है। जब बालिका को पढ़ने, आगे बढ़ने और अपने सपने चुनने की स्वतंत्रता मिले, तभी सम्मान का अर्थ सार्थक होगा। जब उसकी 'ना' को भी उतनी ही गंभीरता से लिया जाएगा, जितनी 'हाँ' को, तभी उसे सशक्त कहा जा सकेगा।

यह स्वीकार करना होगा कि केवल कानून और योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा को लेकर अनेक नीतियाँ बनाई गई हैं, लेकिन सामाजिक सोच में परिवर्तन के बिना उनका प्रभाव सीमित रह जाता है। जब तक परिवार और समाज अपनी मानसिकता नहीं बदलते, तब तक वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है। सामाजिक सुधार का आरंभ घर से होता है, न कि केवल मंच और भाषण से।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बालिका को दया या संरक्षण की दृष्टि से न देखा जाए। उसे "कमज़ोर" नहीं, बल्कि समान और सक्षम नागरिक के रूप में स्वीकार किया जाए। उसके अधिकारों को अनुग्रह नहीं, बल्कि संवैधानिक हक के रूप में समझा जाए। बालिका दिवस का उद्देश्य भावनात्मक अपील नहीं, बल्कि व्यवहारिक बदलाव होना चाहिए।

समाज को यह आत्ममंथन करना होगा कि क्या वह वास्तव में बालिकाओं को बराबरी का जीवन दे पा रहा है। क्या घरों में, स्कूलों में और कार्यस्थलों पर बेटियों को वही सम्मान और अवसर मिल रहे हैं, जो बेटों को मिलते हैं। यदि उत्तर नकारात्मक है, तो बालिका दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन बनकर रह जाएगा।

अंतत: यह स्पष्ट है कि बालिकाएँ किसी एक दिवस की प्रतीक नहीं हैं। वे समाज और राष्ट्र का वर्तमान भी हैं और भविष्य भी। कन्यादान की मानसिकता से बाहर निकलकर कन्या-स्वाधिकार को अपनाना ही एक संवेदनशील और आधुनिक समाज की पहचान है। जब तक बालिका को सम्मान के साथ जीने का अधिकार नहीं मिलेगा, तब तक किसी भी दिवस का उत्सव अधूरा ही रहेगा।

अब से सांसदों और विधायकों का अपमान करने वालों पर कार्रवाई होगी, अधिकारियों का प्रमोशन नहीं होगा

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : अब MPs और MLAs की बेइज्जती करने वालों पर एक्शन लिया जाएगा। केंद्र ने चेतावनी दी है कि अगर बेइज्जती के आरोप साबित हुए तो संबंधित अधिकारी को प्रमोशन रोकने, कंपलसरी रिटायरमेंट या नौकरी से निकालने जैसी सख्त सज़ा दी जाएगी। मिनिस्ट्री ऑफ़ पर्सनेल ने सभी राज्यों को चेतावनी दी है।चुने हुए MLAs और MPs की बेइज्जती करने या उनके निर्देशों को नज़रअंदाज़ करने पर सख्त कार्रवाई होगी।

केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय ने चेतावनी दी है कि MLAs और MPs की इज्जत करने के लिए बनाए गए प्रोटोकॉल का पालन न करने पर, जिसमें अपने ट्रांसफर या प्रमोशन या निजी फायदे के लिए राजनीतिक दबाव डालना शामिल है, सरकारी नियमों के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।राज्यसभा एथिक्स कमेटी और लोकसभा प्रोटोकॉल वायलेशन कमेटी में अधिकारियों के गलत व्यवहार पर चिंता जताई गई थी। इसे देखते हुए, केंद्रीय कार्मिक मंत्रालय ने सभी राज्यों को ये निर्देश जारी किए हैं। इन निर्देशों के अनुसार, अधिकारियों को एटीकेट का पालन करना ज़रूरी है। जब कोई MP या MLA किसी अधिकारी से मिलने आएगा, तो संबंधित अधिकारी अपनी सीट से उठकर उसका स्वागत करेगा और उसके जाने पर उसे ऑफिस से बाहर तक छोड़ेगा। यहां तक कि जनप्रतिनिधि की गाड़ी को ऑफिस परिसर में आने देने के लिए सुरक्षा उपाय भी कड़े किए जाएंगे।

कोर्ट की अवमानना का मामला, शहरी विकास सचिव उषा पाढ़ी को हाई कोर्ट का नोटिस

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : ओडिशा हाई कोर्ट ने हाई कोर्ट के पिछले आदेशों को लागू न करने के मुद्दे पर कड़ा रुख अपनाया है। अर्बन डेवलपमेंट सेक्रेटरी उषा पाधी को कोर्ट की अवमानना के मामले में पेश होने का निर्देश दिया गया है। हाई कोर्ट ने सेक्रेटरी उषा पाधी, म्युनिसिपल एडमिनिस्ट्रेशन के डायरेक्टर गगन बिहारी स्वैन, टाउन प्लानिंग के डायरेक्टर और स्पेशल सेक्रेटरी सुशांत मिश्रा, कटक के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट दत्तात्रेय भाऊसाहेब शिंदे और अथागढ़ स्पेशल प्लानिंग अथॉरिटी के अधिकारियों को अगली सुनवाई में पेश होने का निर्देश दिया है।वह 30 जनवरी को पेश होंगे और बताएंगे कि पिछले ऑर्डर का पालन क्यों नहीं किया गया। हालांकि, अगर रेस्पॉन्डेंट पिछले ऑर्डर को लागू करता है और इस बीच बिना शर्त माफी मांग लेता है, तो उनकी मौजूदगी की ज़रूरत नहीं हो सकती है, ऐसा हाई कोर्ट ने कहा। हाई कोर्ट ने पहले याचिकाकर्ता की नौकरी को रेगुलर करने का आदेश दिया था, जो 10 साल से ज़्यादा समय से अर्बन डेवलपमेंट डिपार्टमेंट में काम कर रहा है। हाई कोर्ट की सिंगल बेंच ने 2014 में यह फैसला दिया था, जिसे जुलाई 2025 में दो जजों की बेंच ने भी बरकरार रखा था। लेकिन जब कोर्ट के आदेश के मुताबिक 8 हफ़्ते के अंदर यह काम नहीं हुआ, तो याचिकाकर्ता ने फिर से कोर्ट की अवमानना का केस किया। जिसे लेकर हाई कोर्ट ने सख्त चेतावनी दी है।

हैदराबाद : राजस्थान भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री मदन राठौड़ एवं श्री मनोज जी सिंघानिया (पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष, सीकर तथा भाजपा संगठन प्रभारी, सिरोही जिला) के भाग्य नगर हैदराबाद आगमन पर श्री राजीव गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर राजस्थानी समाज के भाइयों द्वारा भव्य एवं गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस अवसर पर समाजजनों ने पुष्पमालाओं व पारंपरिक आत्मीयता के साथ दोनों नेताओं का अभिनंदन किया। स्वागत कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अविनाश देवड़ा, सोहन सिंह राजपुरोहित, दूदाराम बाबल, धनराज चौधरी, गोपाल चौधरी, गुमानसिंह, लक्ष्मण सिंह, दामोदर शर्मा सहित सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। एयरपोर्ट परिसर राजस्थानी एकता, जोश और संगठनात्मक उत्साह से सराबोर नजर आया। समाजजनों ने इस अवसर को गौरवपूर्ण बताते हुए राजस्थान व भाजपा संगठन के प्रति अपनी निष्ठा और समर्थन व्यक्त किया।

शिखरबद्ध आईमाता मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 2 फरवरी से शुरू

बेंगलूरू: सीरवी समाज जिगनी की ओर से नवनिर्मित शिखरबद्ध आईमाता मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका पूर्व लोकसभा सांसद व डेयरी अध्यक्ष डी.के. सुरेश को देकर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। संस्था के अध्यक्ष मांगीलाल राठौड़ ने बताया कि चार दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सीरवी समाज के धर्मगुरू दीवान माधवसिंह व बाबा मंडली के सानिध्य में 02 फरवरी 2026 को शुरू होगा। इस अवसर पर तिलोकराम काग। डूंगाराम बर्फा ताराराम, जोराराम परिहार, मनोहर राठौड़, व जिगनी के पूरसभा सदस्य व वार्ड मेम्बर मौजूद थे।

अगर रजत कल्सन किसी और जाति में
पैदा होते,
तो वही समाज उन्हें
सर आँखों पर बैठाता।

लेकिन विडंबना देखिए
अपने ही समाज में
आज भी कुंठा और जलन
उनकी राह में सबसे बड़ा अवरोध है।

वरना सच्चाई यह है कि
अपने समाज के वकील भाइयों को
बब्बर शेर रजत कल्सन को
निर्विरोध और सर्वसम्मति से
हरियाणा का प्रतिनिधित्व सौंपना चाहिए
था।

क्योंकि सवाल किसी व्यक्ति का नहीं है
सवाल है प्रतिनिधित्व का।
सवाल है आवाज़ का।

हरियाणा की सबसे बड़ी पंचायत
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में
हरियाणा और पंजाब की
सबसे मज़बूत, निर्भीक और बेबाक
आवाज़
पहुंचनी चाहिए।

और यह कोई भावनात्मक दावा नहीं
हरियाणा के इतिहास का तथ्य है
कि आज तक

रजत कलसन जैसा
निडर, प्रतिबद्ध और संघर्षशील नेता
पैदा नहीं हुआ है

अब फैसला करना होगा
कुंठा चुननी है या इतिहास।
भीड़ बनना है या नेतृत्व।

अब समझौता नहीं।
सम्मान और प्रतिनिधित्व चाहिए।

30 जनवरी को वोट करें
सम्मान, न्याय और प्रतिनिधित्व के लिए

रजत कल्सन
हरियाणा की बुलंद आवाज
सदस्य – पंजाब एवं हरियाणा बार काउंसिल
बार एसोसिएशन हिसार, हांसी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023